हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● सोमवार ● 20.01.2025 ● वर्ष : 15 ● अंक : 179 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

एक नजर

सांसद संजय यादव से 20 करोड़ की रंगदारी की मांग

पटना : बिहार के पटना से एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है, जहां राष्ट्रीय जनता दल के राज्यसभा सांसद और तेजस्वी यादव के करीबी नेता संजय यादव से 20 करोड़ रुपये की रंगदारी मांगी गई है। इस मामले को लेकर सचिवालय थाना में केस दर्ज किया गया है, और पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच तेज कर दी है। आजेडी प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय कुख्यात अपराधी जोगिंदर ग्योंग उर्फ जोगा डॉन ने एक विदेशी नंबर से कॉल कर संजय यादव को धमकी दी। यह मामला राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बन गया है, क्योंकि संजय यादव राजद के प्रमुख नेताओं में से एक हैं।

खरसावां के पूर्व विधायक गुलाब सिंह मुंडा का निधन

खरसावां : खरसावां के पूर्व विधायक गुलाब सिंह मुंडा (86) का शनिवार देर शाम निधन हो गया। वह पिछले एक महीने से उम्र संबंधी बीमारियों से जूझ रहे थे और इलाज के लिए चाईबासा के सदर अस्पताल में भर्ती थे। वहां इलाज के दौरान उन्होंने अंतिम सांस ली। उनके बेटे संजोग बानरा ने बताया कि गुलाब सिंह मुंडा पिछले 20 दिनों से ठोस भोजन नहीं कर रहे थे। उन्हें केवल लिक्विड आहार दिया जा रहा था। मिली जानकारी के अनुसार उनका अंतिम संस्कार रविवार को उनके पैतृक गांव कुचाई के तिलोपदा में स्थानीय रीति-रिवाज के अनुसार किया जाएगा। शनिवार देर रात उनका पार्थिव शरीर गांव लाया गया। परिवार के कई सदस्य दिल्ली और अन्य राज्यों में रहते हैं, इसलिए रविवार को सभी के पहुंचने के बाद अंतिम संस्कार किया जाएगा। गुलाब सिंह मुंडा के निधन पर पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा, सरायकेला विधायक चंपाई सोरेन, स्थानीय विधायक दशरथ गागराई और पूर्व विधायक मंगल मुंडा ने गहरा शोक व्यक्त किया।

असम एसटीएफ ने वांछित जिहादी को किया गिरफ्तार

गुवाहाटी : असम में पुलिस की स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) का 'ऑपरेशन प्रघात' लगातार चल रहा है। एसटीएफ ने रविवार को धुबड़ी जिले के बिलासीपाड़ा से वांछित जिहादी जाहिर अली को गिरफ्तार किया है। असम पुलिस मुख्यालय के अनुसार असम एसटीएफ ने धुबड़ी जिले के बिलासीपाड़ा से वांछित जिहादी जाहिर अली को गिरफ्तार किया है। आरोपित जाहिर अली, धुबड़ी जिले के बिलासीपारा थाना क्षेत्र के खुड़ीगांव पार्ट-2 गांव का निवासी है। असम एसटीएफ एक मामले की जांच के दौरान अब तक 12 संदिग्धों को गिरफ्तार कर चुकी है। जिनमें एक बांग्लादेशी नागरिक भी शामिल है। एसटीएफ के अनुसार बांग्लादेशी नागरिक मोहम्मद साद रदी उर्फ शब शेख, जो राजशाही, बांग्लादेश का निवासी है, को भारत में संदिग्ध गतिविधियों के लिए भेजा था।

मन की बात : देशवासी मताधिकारों का उपयोग कर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को सशक्त करें : प्रधानमंत्री

एजेंसी

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में मतदान प्रक्रिया को आधुनिक और मजबूत बनाने के लिए चुनाव आयोग को धन्यवाद दिया और साथ ही देशभर में निष्पक्ष चुनाव कराने की आयोग की प्रतिबद्धता की सराहना की। चुनाव आयोग की स्थापना के दिन 25 जनवरी को 'राष्ट्रीय मतदाता दिवस' मनाया जाता है। प्रधानमंत्री ने इसका जिक्र करते हुए देशवासियों से ज्यादा से ज्यादा संख्या में अपने मताधिकार का उपयोग करने और देश की लोकतांत्रिक प्रक्रिया को सशक्त करने की अपील की। मन की बात का 118वां एपीसोड अगले सप्ताह गणतंत्र दिवस आयोजन के चलते अंतिम रविवार के स्थान पर आज तीसरे रविवार को प्रसारित किया गया। इस एपीसोड में प्रधानमंत्री ने कुंभ से लेकर अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों से श्रोताओं को अवगत कराया और देश में हो रहे पर्यावरण और समाज परिवर्तन के कार्यों की जानकारी दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में संविधान लागू होने के 75 वर्ष पूरे होने पर संविधान सभा में चचाओं में भाग लेते हुए डॉ. भीमराव अंबेडकर, डॉ. राजेंद्र प्रसाद और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के ऑडियो क्लिप सुनाएं। इसमें डॉ. अंबेडकर ने संविधान सभा को एक मत होने, डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारत के मानवीय मूल्यों और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी अवसरों की समानता पर अपनी बात रख रहे थे। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में आयोजित 'कुंभ', दक्षिण की नदियों के तटों पर आयोजित होने वाले पुष्करम और पश्चिम बंगाल के गंगा सागर मेले के सुंदर आयोजनों और विहंगम दृश्यों को मन की बात का हिस्सा बनाते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि यह पर्व भारत के लोगों को भारत की परंपराओं से जोड़ते हैं।

उन्होंने कहा कि हजारों वर्षों से चली आ रही इस परंपरा में कहीं कोई भेदभाव या जातिवाद नहीं है, तभी तो कुंभ को एकता का महाकुंभ कहा जाता है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार उत्तर भारत में प्रयागराज, उज्जैन, नासिक और हरिद्वार में कुंभ का आयोजन होता है। इसी प्रकार दक्षिण में गोदावरी, कृष्णा, नर्मदा और कावेरी नदी के तटों पर पुष्करम का आयोजन होता है। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल में 'गंगा सागर मेले' में संक्रांति के अवसर पर पूरी दुनिया से आए लाखों श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई। वर्ष-2025 में भारत की अंतरिक्ष में ऐतिहासिक उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इस पर हम सभी भारतीयों को गर्व करना चाहिए। उन्होंने इस दौरान भारतीय स्पेस टैक स्टार्टअप बेंगलुरु के पिक्सेल के बारे में बताया जिसने भारत का पहला निजी सैटेलाइट कांस्टेलेशन फायरफ्लाई सफलतापूर्वक पर लॉन्च किया है। उन्होंने अंतरिक्ष के क्षेत्र में स्पेस डॉकिंग की उपलब्धि का जिक्र किया। वहीं, उन्होंने बताया कि आईआईटी मद्रास का एक्सटेम केंद्र अंतरिक्ष में मैन्युफैक्चरिंग के लिए कई नई तकनीक का पर काम कर रहा है। मन की बात में इस बार भी प्रधानमंत्री ने पर्यावरण की दृष्टि से देशभर में हो रहे सराहनीय कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि असम के नौगांव में हाथियों से जुड़ी कई घटनाएं होती थी। इसको देखते हुए गांव वालों ने हाथी बंधु नाम से एक टीम बनाई और करीब 800 बीघा बंजर भूमि को घास युक्त किया। इसके चलते हाथियों का आबादी और खेतों में जाना काम हो गया। साथ ही उन्होंने इस बात पर खुशी जाहिर की कि पिछले दो महीनों में भारत ने दो नए टाइगर रिजर्व जोड़े हैं- छत्तीसगढ़ में गुरु घासीदास-तमोर पिंगला और मध्य प्रदेश में रातापानी। प्रधानमंत्री ने टायर टू और टायर थ्री शहरों में लगातार बढ़ते स्टार्टअप्स कल्चर की सराहना की। उन्होंने कहा कि कुछ दिनों में स्टार्टअप इंडिया के 9 साल पूरे हुए हैं। यह हर हिन्दुस्तानी के लिए खुशी का विषय है। अंबाला, हिसार, कांगड़ा, चैंगलपट्टू, बिलासपुर, ग्वालियर और वाशिम जैसे शहरों में स्टार्टअप के केंद्र बन रहे हैं। नागालैंड राज्य में भी पिछले साल स्टार्टअप रजिस्ट्रेशन में 200 से अधिक की बढ़ोतरी हुई है। समाज सेवा से जुड़े हुए कार्यों को प्रधानमंत्री अक्सर मन की बात में स्थान देते हैं। इसी क्रम में उन्होंने अरुणाचल प्रदेश में दीपक नाबाम की कोशिश का उल्लेख किया। नाबाम ने वंचित, हिंसा पीड़ित, बेसहारा और नशे की लत के शिकार लोगों को की देखभाल के लिए एक संस्था बनाई है। वे 'लिविंग होम' चलाते हैं, जहां पर बीमार और असमर्थ बुजुर्गों की सेवा की जाती है। उन्होंने लक्षद्वीप के करवत्ती द्वीप में हिडुम्बी नर्स के कार्यों की प्रशंसा की। वे सेवानिवत्त होने के बाद भी पिछले 18 वर्षों तक अपने करुणा और स्नेह से लोगों की सेवा में जुटी हैं। लक्षद्वीप के ही केजी मोहम्मद के मिनीकॉय द्वीप में मरीन इकोसिस्टम को मजबूत करने के कार्यों की भी उन्होंने प्रशंसा की। निकोबार जिले में वर्जिन कोकोनेट ऑयल को हाल ही में जी टैग मिलने पर प्रशंसा व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इसके उत्पादन से जुड़ी आदिवासी महिलाओं को संगठित कर सेल्फ हेल्प ग्रुप बनाए जा रहे हैं और उन्हें मार्केटिंग और ब्रांडिंग की स्पेशल ट्रेनिंग भी दी जा रही है। प्रधानमंत्री ने कार्यक्रम के अंत में नेताजी सुभाष चंद्र बोस को श्रद्धांजलि दी। 23 जनवरी को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती है। इस दिन को पराक्रम दिवस के रूप में मनाया जाता है। प्रधानमंत्री ने अपने कार्यक्रम में उनके पराक्रम से जुड़ी हुई एक कहानी का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि सुभाष बाबू एक विजनरी नेता थे, उनके स्वभाव में साहस रचा बसा था और वह कुशल प्रशासन भी थे।

महाकुंभ मेला में लगी भीषण आग, अफरा-तफरी का माहौल, कई टेंट जलकर राख

एजेंसी

महाकुंभ नगर : महाकुंभ मेला क्षेत्र में आज भीषण आग लग गई। इससे अफरा-तफरी का माहौल बन गया। घटना रविवार दोपहर करीब 3:30 बजे हुई। बताया जा रहा है कि तुलसी मार्ग पर स्थित सेक्टर 19 रेलवे पुल के नीचे विवेकानंद सेवा समिति वाराणसी के शिविर में आग लगी। यह आग तेजी से फैलते हुए एक शिविर से दूसरे शिविर की ओर बढ़ रही थी। कुछ ही मिनटों में आग ने एक दर्जन से अधिक टेंटों को अपनी चपेट में ले लिया। वहीं, आग लगने के कारण अंदर से सिलेंडरों के फटने की आवाजें सुनाई देने लगीं।

मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड की गाड़ियां

शुरूआती जांच में जो बात सामने आ रही है, उसके अनुसार आग सिलेंडर लीक होने की वजह से लगी थी। जानकारी हो कि आग लगने के दौरान लोग अपनी जान बचाने के लिए सिलेंडरों को लेकर शिविर से बाहर की ओर दौड़ते हुए नजर आए। इसके बाद रेस्क्यू टीम और फायर ब्रिगेड की गाड़ियां मौके पर पहुंच चुकी हैं। साथ ही 4 फायर बिग्रेड और आठ बुलेट गाड़ियों को भी घटनास्थल पर भेजा गया है। इसके अलावा मीडिया सेंटर से भी 2 फायर ब्रिगेड की गाड़ियां रवाना की गई हैं। अस्पतालों को किया गया अलर्ट बताया जा रहा है कि आग सेक्टर 19 से होते हुए सेक्टर 20 की ओर बढ़ रही है। इसने गीता प्रेस गोरखपुर के शिविर को भी अपनी चपेट में ले लिया है। आग पर काबू पाने के लिए तमाम आला अधिकारी, डीआईजी वैभव कृष्ण, मेलाधिकारी और एसएसपी कुम्भ मौके पर पहुंचे हैं। इस दौरान एंबुलेंस और अन्य राहत किट भी तैयार रखे गए हैं। इसके अलावा अस्पतालों को भी अलर्ट कर दिया गया है।

ओलंपियन मनु भाकर के मामा व नानी की सड़क दुर्घटना में मौत

एजेंसी

चंडीगढ़ : हरियाणा के चरखी-दादरी स्थित महेंद्रगढ़ बाईपास पर रविवार को एक सड़क हादसे में ओलंपिक मेडल विजेता एवं खेल रत्न से सम्मानित मनु भाकर के मामा व नानी की मौत हो गई। घटना के वक्त उनके मामा स्कूटी से अपनी मां को लेकर भाई के पास छोड़ने जा रहे थे। घर से 150 मीटर दूर पहुंचने पर ब्रेजा गाड़ी ने उनकी स्कूटी में टक्कर मार दी। इस हादसे में दोनों की मौत हो गई। दुर्घटना के बाद गाड़ी का ड्राइवर फरार हो गया। जानकारी के मुताबिक मनु भाकर की नानी सावित्री 70 साल की थीं। उनके मामा युद्धवीर (50) हरियाणा रोडवेज में ड्राइवर थे। वर्तमान में उनकी ड्यूटी दादरी बस स्टैंड पर थी। वह मूल रूप से गांव कलाली के रहने वाले थे। मौजूदा में वह चरखी दादरी शहर में रह रहे थे। परिजनों के अनुसार युद्धवीर आज सुबह ड्यूटी पर जा रहे थे। उनकी मां को छोटे बेटे के पास जाना था। इसके चलते मां ने युद्धवीर से कहा कि वह उसे छोटे बेटे के पास छोड़ आए। घर से निकलने के बाद कुछ ही दूरी पर हादसा हो गया। परिजनों ने कहा कि टक्कर मारने वाली गाड़ी गलत दिशा में तेज स्पीड में आ रही थी। मृतक युद्धवीर के बेटे सतपाल ने पुलिस को दिए बयान में बताया कि वह खेतीबाड़ी का काम करता है। उन्होंने बताया कि पिता ड्यूटी पर जाते वक्त दादी को सिविल अस्पताल के पास रहने वाले चाचा के मकान पर छोड़ने जा रहे थे। जब वे महेंद्रगढ़ बाईपास पर टाटा एजेंसी के समीप पहुंचे तभी दुर्घटना हो गई। पुलिस अधिकारी सुरेश ने कहा कि हमें स्कूटी और कार की टक्कर की सूचना मिली थी।

बिहार के कटिहार नाव हादसे में तीन लोगों की मौत, सात लापता

एजेंसी

कटिहार : बिहार में कटिहार जिले के अमदाबाद थाना क्षेत्र अंतर्गत दक्षिणी करीमुल्लापुर पंचायत के गोला घाट पर रविवार सुबह दर्दनाक नाव हादसे में तीन लोगों की मौत हो गई। मृतकों में अमदाबाद निवासी पवन मंडल (65वर्ष) पिता बस्तम मंडल, प्राणपुर निवासी सुधीर मंडल (70वर्ष) तथा अजमनागर निवासी भोली देवी का तीन वर्षीय पुत्र शामिल है। समाचार लिखे जाने तक सात नाव सवार लोग लापता है। लगभग 18 यात्रियों को लेकर एक नाव मनिहारी अनुमंडल के अमदाबाद ब्लॉक के दक्षिण करीमल्लूपुर मेघू टोला से सकरी (झारखंड) जा रही थी। मुख्यमंत्री ने जताया शोक मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कटिहार जिले के अमदाबाद में गंगा नदी में नाव डूबने से 03 लोगों की हुयी मौत पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने कहा है कि यह घटना अत्यंत दुखद है। मुख्यमंत्री ने इस घटना में लापता अन्य लोगों की समुचित खोजबीन जारी रखने का निर्देश दिया है। मुख्यमंत्री ने मृतक के परिजनों को चार-चार लाख रुपए अनुग्रह अनुदान देने के निर्देश दिया है। मुख्यमंत्री ने मृतकों के परिजनों को दुःख की इस घड़ी में धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है। इस संदर्भ में जिला प्रशासन ने बताया नाव हादसे के बाद आठ लोगों को स्थानीय गोतखार एवं एसडीआरएफ टीम द्वारा बचाव कर लिया गया है एवं शेष का बचाव और तलाशी अभियान जारी है। जिन लोगों को बचा लिया गया है उनका इलाज चल रहा है। बचाए गए लोगों के अनुसार सात और लोग लापता हैं। सात में से दो नदी के विपरीत किनारे यानी गदाई दियारा में पहुंच गए हैं। मनिहारी एसडीएम ने बताया कि एसडीआरएफ की टीम बाकी पांच लोगों के लापता होने की सूचना के साथ उनका पता लगाने व बचाव करने की कोशिश कर रही है। उन्होंने बताया कि अमदावाद सीओ और एसएचओ मेघू टोला में राहत अभियान की निगरानी कर रहे हैं। मृत व्यक्तियों के परिवार को आपदा विभाग के नियमानुसर मुआवजा देने हेतु संबंधित को निदेश दिया गया है और लापता व्यक्तियों के लिए खोज व बचाव हेतु एसडीआरएफ द्वारा अभियान जारी है।

सैफ अली खान पर हमले का आरोपी पांच दिन की पुलिस रिमांड पर

एजेंसी

मुंबई : बॉलीवुड अभिनेता सैफ अली खान पर हमले के आरोपी मोहम्मद शरीफुल इस्लाम शहजाद को रविवार को मुंबई की मजिस्ट्रेट कोर्ट में पेश किया गया। अदालत ने आरोपी को 5 दिन की पुलिस रिमांड में भेजने का आदेश दिया। इस दौरान पुलिस ने अदालत को बताया कि आरोपी ने सैफ अली खान के घर में घुसकर उन पर हमला किया, जिसमें सैफ को गंभीर चोटें आईं। कोर्ट में पेशी के दौरान पुलिस ने आरोपी से उसका नाम पूछा, जिस पर उसने अपना नाम मोहम्मद शरीफुल इस्लाम

शहजाद बताया। अभियोजन पक्ष ने आरोपी की 14 दिन की रिमांड की मांग की, जबकि बचाव पक्ष ने इसका विरोध किया। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद मजिस्ट्रेट ने आरोपी को 5 दिन की पुलिस रिमांड में भेजने का निर्णय लिया। पुलिस ने जांच अधिकारी की तरफ से अदालत में दलील दी कि आरोपी शरीफुल इस्लाम शहजाद ने सैफ के घर में अवैध रूप से प्रवेश किया और अभिनेता समेत दो अन्य लोगों पर चाकू से हमला किया। इस हमले में सैफ को 6 बार चाकू लगे, और उन्हें गंभीर चोटें आईं। पुलिस को यह पता लगाना है कि आरोपी सैफ के घर में कैसे दाखिल हुआ और इसके पीछे क्या कारण थे। इसके साथ ही यह भी पता लगाना है कि इस हमले में कोई और व्यक्ति भी शामिल था या नहीं।

झारखंड की बेटियों को फिर मिला सम्मान दिल्ली गणतंत्र दिवस परेड में होंगी शामिल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : राज्य के स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के सार्थक प्रयासों का सकारात्मक और ऐतिहासिक परिणाम मिला है। 2015 से राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस परेड रोस्ट्रम में झारखंड के पाइप बैंड को शामिल कराने का सपना अब पूरा हो गया है। गणतंत्र दिवस के अवसर पर झारखंड के पीएमकस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, पटमदा, पूर्वी सिंहभूम की छात्राओं के दल को रोस्ट्रम में प्रदर्शन करने का गौरवशाली अवसर मिला है।

केंद्रीय रक्षा मंत्रालय ने इस संबंध में सभी विभागों को पत्र भेजकर दिनांक 26 जनवरी, 2025 को रोस्ट्रम और विजय चौक पर प्रदर्शन के लिए चुने गए देश के 3 स्कूलों के छात्रों के फोटो पहचान पत्र को तत्काल जारी करने का निर्देश दिया है। झारखंड के इस गौरवशाली उपलब्धि पर माननीय मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन, विभागीय मंत्री रामदास सोरेन, विभागीय सचिव उमाशंकर सिंह, राज्य शिक्षा परियोजना निदेशक शशि रंजन, राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी धीरसेन सोरेंग समेत अन्य पदाधिकारियों ने टीम को बधाई और शुभकामनाएं दी है। विभागीय सचिव उमाशंकर सिंह ने पदाधिकारियों को निर्देशित किया है कि वे इस ऐतिहासिक उपलब्धि को और भी खास बनाने में जुट जाए। बालिका टीम के दिल्ली में आवासन और भोजनादि का पर्याप्त प्रबंध किया जाए। साथ ही उन्हें तमाम सुविधाएं उपलब्ध कराये जाए, जिससे ना केवल वे रोस्ट्रम में बेहतर प्रदर्शन करे, बल्कि दिनांक 24 और 25 जनवरी को आयोजित होने वाले राष्ट्रीय पाइप बैंड प्रतियोगिता में भी जीत दर्ज कर हमें गौरवान्वित होने का अवसर प्रदान करे।

मणिपुर में तलाशी के दौरान भारी मात्रा में हथियार और विस्फोटक बरामद

एजेंसी

इंफाल : मणिपुर के पहाड़ी और घाटी जिलों के संवेदनशील क्षेत्रों में सुरक्षा बलों द्वारा तलाशी अभियान चलाए गए। इस दौरान थौबल जिले के लिलोंग थाना क्षेत्र के उशोइपोकपी की पहाड़ी तलहटी से भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद किए गए। बरामद सामान में एक सिंगल बोर बैरल (स्नाइपर), एक देसी राइफल, एक अमोघ कार्बाइन मैगजीन, तीन .303 मैगजीन, एक एचई हैंड ग्रेनेड, एक डेटोनेटर, 7.62 x 39 मिमी की 5 जीवित गोलियां, 32 की छह जीवित गोलियां, 9 मिमी की एक जीवित गोली, 303 की छह खाली खोलियां, 7.62 मिमी (एसएलआर) की चार खाली खोलियां, 7.62 x 39 मिमी की छह खाली खोलियां, एक ग्रीन स्मोक 80एमके वन, दो स्टन शेल (एन), तीन टियर स्मोक शेल, तीन टीवाईटी रेडियो सेट, तीन चार्जर और एक अडैप्टर शामिल हैं। सुरक्षा बलों ने इन अभियानों के माध्यम से क्षेत्र में सुरक्षा को मजबूत करने का प्रयास किया है।

एक नजर

बचपन से ही यूपीएससी और पीसीएस की तैयारी का अनोखा मॉडल

बरही : श्रीदस इंटरनेशनल स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में एक अनोखा उदाहरण पेश कर रहा है। यह विद्यालय न केवल सिलेबस आधारित शिक्षा प्रदान कर रहा है, बल्कि बच्चों के नैतिक विकास और उनके उज्ज्वल भविष्य की नींव रखने पर भी पूरा ध्यान दे रहा है। श्रीदस इंटरनेशनल स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में एक नई परिभाषा गढ़ रहा है। यह स्कूल न केवल बच्चों के अकादमिक विकास पर जोर दे रहा है, बल्कि उनके नैतिक और तकनीकी कौशल को भी मजबूत करने का काम कर रहा है। विद्यालय की ये पहल निश्चित रूप से बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में सहायक होगी।

एलएलबी शिक्षा और नैतिक विकास पर फोकस

श्रीदस इंटरनेशनल स्कूल में बच्चों को एलएलबी (कानूनी अध्ययन) की शिक्षा दी जा रही है, जो अपने आप में एक अनूठी पहल है। विद्यालय प्रबंधन का मानना है कि प्रारंभिक अवस्था से ही बच्चों को कानूनी शिक्षा प्रदान करना न केवल उन्हें अधिक जागरूक बनाएगा, बल्कि उनके नैतिक और सामाजिक विकास में भी मदद करेगा। विद्यालय बचपन से ही यूपीएससी और एसपीएससी की करवाता है तैयारी विद्यालय बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ जीएस की जानकारी भी प्रदान कर रहा है। इसका उद्देश्य है बचपन से ही बच्चों में यूपीएससी और एसपीएससी जैसी प्रतिष्ठित प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की नींव रखना। छात्रों को विशिष्ट अध्ययन सामग्री के माध्यम से शिक्षा दी जाती है, जिससे वे इन परीक्षाओं की प्रारंभिक तैयारी को समझ सकें।

इग्नू जन जन का विश्वविद्यालय है : क्षेत्रीय उप निदेशक

लोहरदगा : बलदेव साहु महाविद्यालय में इग्नू अभिप्रेरणा की बैठक रविवार को हुई। मौके पर इग्नू के क्षेत्रीय उप निदेशक डॉ मोती राम उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि इग्नू जन जन का विश्वविद्यालय है। उन्होंने कहा की विश्व का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय इग्नू है यहां के शिक्षार्थी विभिन्न जगह से आते हैं चाहे वह गृहिणी हो, नौकरी पेशा हो, व्यापार करने वाले हो, चाहे छात्र हो सभी के लिए इग्नू में पढ़ने की व्यवस्था भारत सरकार के जरिये की गई है। उन्होंने विस्तार से इग्नू के बारे में छात्रों को जानकारी दी नामांकन से लेकर असाइनमेंट बनाने के तरीके परीक्षा फॉर्म भरने री रजिस्ट्रेशन कराने परीक्षा फॉर्म भरने किसी प्रकार की कोई त्रुटि रहने पर सारी जानकारी इग्नू के वेबसाइट पर उपलब्ध है। उन्होंने छात्रों को बताया कि इग्नू तीन भागों में विभक्त है। पहला स्टडी सेंटर दूसरा रीजनल सेंटर और तीसरा मुख्य कार्यालय दिल्ली छात्र तीनों से संपर्क स्थापित कर अपना कैरियर को बेहतर बना सकते हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ शर्मा ने की उन्होंने कहा की छात्रों को लगातार मेहनत करने की जरूरत है तभी छात्र अपनी सफलता को प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा बेहतर करने वालों की स्थिति भी बेहतर होती है। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रोफेसर शंभू प्रसाद उपस्थित थे। उन्होंने कहा इग्नू स्टडी सेंटर में कम संसाधन के जरिये छात्र बेहतर परिणाम दिखा सकते हैं। मौके पर विधार्थी और शिक्षक मौजूद थे।

गुणवत्तापूर्ण व आधुनिक चिकित्सा उपलब्ध कराना हमारी प्राथमिकता : डॉ प्रवीण श्रीनिवास

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : हजारीबाग शहर के झील परिसर में श्रीनिवास डायग्नोस्टिक ने दिन रविवार को हेल्थ चेकअप जांच शिविर का आयोजन किया। जिसमें सुगर एवं हीमोग्लोबिन का जांच मुफ्त किया गया। इसमें 44 से अधिक जरूरतमंदों ने सुगर एवं हीमोग्लोबिन का जांच एवं उत्तम स्वास्थ्य का परामर्श प्राप्त किया। साथ ही कई लोगों ने अन्य जांच का परामर्श प्राप्त किया। इस दौरान अन्य जांच पर बाजार से किफायती दर पर उपलब्ध होने से कई जरूरतमंदों ने पंजीकरण कराया। जरूरतमंदों लोगों ने बताया कि सप्ताहिक छुट्टी रविवार के दिन पब्लिक पलेस में इस प्रकार की जांच से आमजन में काफी राहत

पहूंचेगा। गंभीर बिमारियों का पूर्वत जानकारी होने से गंभीर बीमारियों से बचाव एवं राहत मिलेगा। ज्ञात हो कि श्रीनिवास डायग्नोस्टिक रविन्द्र पथ मिशन रोड स्थित मिशन हॉस्पिटल के परिसर में सेवारत है। जिसमें शरीर पूरा जांच आधुनिक तरीके एवं किफायती दर पर उपलब्ध है। पूरा शरीर का जांच में सीबीसी, थायराइड प्रोफाइल, लिवर फंक्शन टेस्ट, किडनी फंक्शन टेस्ट, वसा प्रालेख एचबीए, आरबीएस, इलेक्ट्रोलाइट, विटामिन-डी, विटामिन बी, ई.सी.जी यूएसजीडब्ल्यू, छाती का एक्स-रे एवं मुत्र का जांच सहित कई जांच के अलावे निशुल्क डॉक्टर्स परामर्श भी उपलब्ध है। मौके पर श्रीनिवास डायग्नोस्टिक संचालक डॉ प्रवीण श्रीनिवास ने कहा कि सुगर की बिमारी एवं हीमोग्लोबिन संबंधित बिमारी काफी सामान्य होते जा रही है। विशेष पहल के साथ हेल्थ चेकअप कैंप में सुगर एवं हीमोग्लोबिन की जांच निशुल्क लोगों के लिए उपलब्ध करवा रहें हैं। ताकि समय से पूर्व सुगर एवं हीमोग्लोबिन संबंधित बिमारी का उपचार कराकर घातक एंव गंभीर बीमारियों से लोगों को बचाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि गुणवत्तापूर्ण एवं आधुनिक रूप से पूरा शरीर जांच उपलब्ध करना हमारी प्राथमिकता है। गरीब एवं मीडिल क्लास फैमली को इसका शतप्रतिशत लाभ मिल रहा है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में लोगों को राहत पहूंचाने के लिए हमेशा से श्रीनिवास डायग्नोस्टिक की टीम कार्यरत है। मौके पर श्रीनिवास डायग्नोस्टिक के लैब विभाग से पिंकू कुमार, दीपक कुमार, छात्र सयूम अंसारी, सुदर्शन कुमार, छात्रा गिंजा कुमारी, मनीषा कुमारी, नर्सिंग कर्मी अजरा निगार सहित कई स्वास्थ्य कर्मी काफी सक्रियता से जुटे रहे।

सांसद ने संसद भवन में 54 दिनों की सदन अवधि में 72 मुद्दे उठाए

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : सांसद मनीष जायसवाल ने संसद के तीन सत्रों के 54 दिनों की सदन अवधि में कुल वर्किंग डे 44 में दमदार अपनी सौ फीसदी उपस्थिति दर्ज कराई। इस अवधि में अपने हजारीबाग संसदीय क्षेत्र के जनहित से जुड़े कई क्रांतिकारी और कल्याणकारी कुल 72 मुद्दे उठाए और 07 बार उन्हें लोकसभा के पटल पर बोलने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्हें लोकसभा की तीन प्रमुख समितियों का सदस्य बनाया गया। इनमें प्राक्कलन समिति, कोल तथा माइंस की सलाहकार समिति और उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण संबंधी समिति शामिल है। हजारीबाग जिला मुख्यालय में सांसद सेवा कार्यालय के माध्यम से लोकसभा क्षेत्र में सेवा कार्यों और विकास को नई गति दी है। सदन में शत- प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित करने के साथ ही लगातार लोकसभा क्षेत्र के दौरे और सांसद सेवा कार्यालय के माध्यम से जनता से सीधे जुड़कर उनकी समस्याओं से रूबरू हुए और यथासंभव समस्याओं के निराकरण का भरसक प्रयास किया। ये बातें सांसद मनीष जायसवाल ने रविवार को हजारीबाग शहर के हुडहूडु चौक स्थित एक होटल में संवाददाता सम्मेलन में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि साल के अंतिम समय में उन्हें कई बड़ी जिम्मेवारी मिली।

त्रिवेणी सैनिक में हाफ मैराथन का हुआ आयोजन, कर्मियों ने लिया बढ़-चढ़कर हिस्सा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : झारखंड के हजारीबाग में राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम लिमिटेड की खनन परियोजना पकरी बरवाडीह से जुड़ी एमडीओ त्रिवेणी सैनिक माइनिंग प्राइवेट लिमिटेड में 19 जनवरी 2025 को हाफ मैराथन का आयोजन किया गया। इस मैराथन दौड़ में टीएसएमपीएल के सैकड़ों कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर और पूरे जोश और उत्साह के साथ हिस्सा लिया। मैराथन दौड़ में कंपनी में कार्यरत महिला कर्मियों ने भी पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। मैराथन दौड़ की दूरी 5 किलोमीटर तय की गई थी। इसका उद्देश्य कर्मचारियों के बीच स्वास्थ्य के प्रति सजगता, रोग मुक्त जीवन और आपसी एकता को बढ़ावा देना था। प्रतिभागियों का उत्साह बढ़ाने के लिए कंपनी के वरिष्ठ अधिकारीगण भी मौजूद थें। धावकों के साथ-साथ उन्होंने भी इस

मैराथन दौड़ में शामिल होकर सभी का जोश बढ़ाया। इस दौरान कर्मचारियों के चेहरे पर खुशी साफ झलक रही थी। मैराथन में शामिल हुए प्रतिभागियों ने त्रिवेणी सैनिक प्रबंधन की तारीफ करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन से कर्मियों और प्रबंधन के बीच दूरियां कम होती हैं और जिससे कार्यक्षमता बेहतर होती है। त्रिवेणी सैनिक माइनिंग प्राइवेट लिमिटेड के सीईओ-कोल माइनिंग संजय कुमार खटोड़ ने हरी झंडी दिखाकर इस आयोजन का शुभारंभ किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन से हमारी एकता और कार्य करने की क्षमता बढ़ती है। उन्होंने कहा कि प्रतियोगिता में जीतना और हारना महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि ऐसे आयोजन में शामिल होने से ही हमारी ऊर्जा बढ़ जाती है। उन्होंने सभी धावकों को बधाई देते हुए कहा कि स्वस्थ्य तन में ही स्वस्थ्य मन का निवास होता है, इसलिए इस तरह के आयोजन में लोगों को जरूर शामिल होना चाहिए। सीईओ-कोल माइनिंग श्री खटोड़ ने इस आयोजन के लिए एचआर टीम की तारीफ करते हुए कहा कि कर्मचारियों के उत्साहवर्धन के लिए ऐसे कार्यक्रम होते रहने चाहिए।

आदिवासी समाज की संस्कृति और परंपरा भारतीय धरोहर का अमूल्य हिस्सा है : मुन्ना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : हजारीबाग में रविवार को चंपा दिशोम सोहराय महोत्सव 2025 का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें आदिवासी समुदाय की संस्कृति, परंपरा और विरासत का शानदार प्रदर्शन हुआ। यह आयोजन आदिवासी समाज की एकता और उनकी पहचान को सशक्त करने का प्रतीक बना। आदिवासी समाज के आमंत्रण पर पहुंचे कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मुन्ना सिंह ने विशेष रूप से इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया और इसकी शोभा बढ़ाई। उनके साथ मुख्य अतिथि राज्य मंत्री फागु बेसरा, मंत्री चमरा लिंडा, मंच पर उपस्थित अन्य विशिष्ट अतिथि, और आदिवासी समाज के प्रमुख व्यक्तित्वों ने भी आयोजन में भाग लिया। मुन्ना सिंह ने पत्रकारों से बातचीत में आदिवासी समाज के अधिकारों के संरक्षण और उनके विकास पर जोर देते हुए कहा, आदिवासी समाज की

संस्कृति और परंपरा भारतीय धरोहर का अमूल्य हिस्सा है। इसे संरक्षित करना और अगली पीढ़ी को इसके महत्व से अवगत कराना हम सभी की जिम्मेदारी है। इस महोत्सव का आयोजन ऑल इंडिया संथाल स्टूडेंट यूनियन (झारखंड) केन्द्रीय सरना समिति,और आदिवासी को-ऑर्डिनेशन कमेटी के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य आदिवासी संस्कृति और परंपरा को सहेजना और इसे नई पीढ़ी तक पहुंचाना था। महोत्सव के दौरान आदिवासी नृत्य, पारंपरिक गीत, और कला के विभिन्न रूपों का प्रदर्शन किया गया, जिसने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने न केवल अद्वितीय अनुभव प्रदान किया बल्कि आदिवासी समाज की धरोहर का महत्व भी दशार्या। मुन्ना ने आयोजन समिति के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा, इस प्रकार के महोत्सव न केवल आदिवासी समाज को एकजुट करते हैं, बल्कि उनकी संस्कृति और परंपराओं को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में भी सहायक हैं।

क्षेत्र में बीजीआर का कोई भी कार्य नहीं होने दिया जाएगा : ग्रामीण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : एनटीपीसी बादम कोल ब्लॉक के एमडीओ बीजीआर कंपनी का हाइड्रा को शनिवार शाम को बड़का गांव से बादम मोईत्रा मुख्य मार्ग में अर्ध निर्मित बीजीआर साइड ऑफिस में काम करने के लिए ले जाने की कोशिश की गई। परंतु इसकी सूचना गोंदलपूरा गांव के आंदोलनकारीओं को मिलते ही सैकड़ो की संख्या में ग्रामीण बेलासोती गांव के पास मुख्य मार्ग में हाइड्रा को जप्त किया और हाइड्रा को ग्रामीण अपने साथ गोंदलपूरा ले गए। इसकी सूचना मिलते ही बड़कागांव थाना प्रभारी नेमधारी रजक मौके पर पहुंचकर ग्रामीणों को आस्वस्त किया कि आज से बीजीआर कंपनी का कोई भी अधिकारी या गाड़ी थाना और ग्रामीणों को बिना सूचना दिए क्षेत्र में प्रवेश नहीं करें समन्वय बनाकर चलें। ग्रामीणों ने थाना प्रभारी की बातों पर विश्वास जताते हुए हाइड्रा को थाना प्रभारी को सौंप

दिया। वही ग्रामीणों ने कहा कि बीजीआर कंपनी का कोई भी काम आगे नहीं होने दिया जाएगा। बताते चले की अंबाजीत मोईत्रा मुख्य मार्ग पर बन रहे बीजीआर साइट ऑफिस पर विगत लगभग 3 माह पूर्व हजारों की संख्या में ग्रामीणों ने हमला बोल दिया था। जिससे साइट ऑफिस में लाखों का नुकसान हुआ था।

पारदर्शिता के साथ डीलर हित के लिए करेंगे काम : अध्यक्ष

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चौपारण : फेयर प्राइस डीलर संघ के प्रखंड स्तरीय कमेटी का पुनर्गठन किया गया बकायदा जिला अध्यक्ष नंदू प्रसाद की देखरेख में प्रखंड के 136 जन वितरण प्रणाली के विक्रेताओं ने आपस में बैठक कर चुनाव पद्धति से पूरे संगठन का पुनर्गठन किया। इसमें निर्विरोध रूप से अध्यक्ष के रूप में भोला सिंह ,सचिव जावेद खान , उपाध्यक्ष श्रीकांत सुमन , कोषाध्यक्ष शंभू पासवान , सहसचिव रिंकू देवी आदि का चयन किया गया। फेयर प्राइस डीलर एसोसिएशन के संघ का पुनर्गठन 3 साल के बाद किया गया। इसके पूर्व भी भोला सिंह डीलर संघ के अध्यक्ष के रूप में सेवा दे चुके हैं। पूरी चुनाव प्रक्रिया महाराजगंज बीघा के चंद्रवंशी

भवन परिसर में आयोजित की गई। बैठक को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष नंदू प्रसाद ने कहा कि डीलर संघ के सभी सदस्य सरकार के लोक कल्याणकारी घर-घर अनाज पहुंचाते हैं । इस क्रम में डीलर संघ के सदस्यों को कई तरह की परेशानियों का भी सामना करना पड़ता है। इन्हीं परेशानियों को दूर करने के लिए तथा संगठन के आवाज को बुलंद करने के लिए कमेटी का पुनर्गठन किया गया है। वही नवनिर्वाचित अध्यक्ष भोला सिंह ने सभी सदस्यों के प्रति आभार जताते हुए कहा कि पूरी पारदर्शिता तथा डीलर संघ के हित के लिए दिन-रात सेवक के रूप में सेवा दूंगा। बताया कि प्रखंड में 136 डीलर हैं ,कई तरह की समस्याएं हैं। इन्हें एक-एक करके दूर करने का प्रयास करूंगा। उन्होंने डीलर संघ के पूर्व अध्यक्ष तथा संघ के सभी सदस्यों से सहयोग की भी अपील की। चुनावी प्रक्रिया को संपन्न कराने में जिला सचिव सुनील प्रसाद, उपाध्यक्ष अशोक राम, पूर्व अध्यक्ष दिनेश यादव ,वीरेंद्र पांडे ,नीरज सिंह, शंभू पासवान, रवि बरनवाल ,अनिल कुमार, रामचंद्र रजक, सरस्वती महिला मंडल नूरी देवी, रामाधीन सिंह ,अंगद सिंह, भुवनेश्वर दांगी, मुनेश्वर राम रजक, मोहम्मद करीमुद्दीन, कुमार राहुल, दीपक केसरी, तसव्वर खान ,महबूब आलम, सीताराम यादव, देवलाल साहू ,आशा देवी, रीना देवी, राजेश्वर सिंह, मुकेश सिंह, गिरजा राम, सियाराम शर्मा,,शंकर शाह, बसंती देवी, गणेश केसरी सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

अफीम की खेती के खिलाफ पुलिस प्रशासन ने चलाया अभियान

हजारीबाग : चौपारण थाना क्षेत्र के जगोडीह जंगल में पु0अ0नि0 अनुपम प्रकाश, थाना प्रभारी, चौपारण, थाना के सशस्त्र बल तथा वन विभाग के पदाधिकारी एवं कर्मियों के साथ संयुक्त छापेमारी कर लगभग 5 एकड़ वन भूमि पर लगे अवैध अफीम पोस्ता की खेती को नष्ट किया गया। इस संदर्भ में कांड दर्ज कर अग्रतर कार्रवाई की जा रही है। अफीम की खेती के खिलाफ जिले भर में निरंतर अभियान चलाया जा रहा है। पुलिस की इस कार्रवाई से तस्करों के मंसूबों को बड़ा झटका लगा है। एसपी अरविंद कुमार सिंह ने बताया कि चौपारण के आस पास अफीम तस्करों के द्वारा अफीम की खेती की जा रही थी जिसे अभियान चलाकर नष्ट कर दिया गया। पुलिस व वन विभाग के संयुक्त कारवाई करते हुए चिन्हित स्थान पर छापेमारी की पुलिस जब स्थल पर पहुंची तो वहां पाया गया कि अफीम के पौधे उग आए हैं। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि पुलिस के द्वारा अफीम की खेती के खिलाफ लगातार कार्रवाई भी की जा रही है और उसे नष्ट भी किया जा रहा है। यह कार्रवाई लगातार जारी रहेगी। उन्होंने कहा कि पुलिस के द्वारा अफीम की खेती करने वाले लोगों को भी चिन्हित करने का कार्य किया जा रहा है और ऐसे लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई भी की जाएगी।

अदाणी-इस्कॉन मना रहे हैं ग्रीन एंड क्लीन महाकुंभ

हजारीबाग : प्रयागराज, पूरा देश महाकुंभ 2025 के रंग में रंगा है। आम इंसान हो या सिलेब्रिटी सब कम से कम एक दिन के लिए महाकुंभ 2025 में आने का मौका खोज रहे हैं। कुछ बिजनेस ग्रुप इस मौके को आध्यात्मिक संकल्प के तौर पर देख रहे हैं। महाकुंभ 2025 में अदाणी ग्रुप भी इस्कॉन के साथ मिलकर ऐसे ही आध्यात्मिक संकल्प को पूरा कर रहा है। महाकुंभ के मौके पर अदाणी ना सिर्फ अध्यात्मिक बल्कि ग्रीन एनर्जी और साफ-सुधरे वातारवरण के संकल्प को पूरा करने में भी लगा है। अदाणी द्वारा महाकुंभ मेले में प्रतिदिन 1 लाख लोगों को महाप्रसाद के वितरण का कार्यक्रम पूरी तरह से ग्रीन एंड क्लीन के मंत्र से चल रहा है। महाकुंभ में अदाणी-इस्कॉन के महाप्रसाद वितरण की पहल को लोकल दुकानदारों की भागीदारी से ही पूर्ण किया जा रहा है। ग्रीन फूड-क्लीन फूड अदाणी -इस्कॉन पूरी तरह से ग्रीन फूड एंड क्लीन फूल के मंत्र पर काम कर रहा है। अदाणी द्वारा उपलब्ध कराई गई गॉल्फ कार्ट सेवा बैटरी से चलती है जो यहां पर लगातार सेवाएं दे रही है। मुख्यतः बुजुर्ग और बच्चे इस निशुल्क सेवा का भरपूर लाभ उठा रहे हैं।

झामुमो नेता संजीव बेदिया ने शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन से की मुलाकात

बड़कागांव : झारखंड मुक्ति मोर्चा केंद्रीय सचिव सह झारखंड सरकार राज्य परिवहन प्राधिकार संयुक्त सदस्य संजीव कुमार बेदिया एवं झामुमो बड़कागांव प्रखण्ड अध्यक्ष सह झारखंड श्रमिक संघ जिला सचिव संजय कुमार सिंह ने हजारीबाग सर्किट हाउस में झारखंड सरकार के शिक्षा मंत्री से औपचारिक मुलाकात गुलदस्ता देकर अभिनंदन किया। इस दौरान शिक्षा से संबंधित कई बिंदुओं पर चर्चा की गई ताकि प्राथमिक विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा बच्चों को दी जा सके।

पदमा के रोमी पंचायत भवन में संविधान सभा कार्यक्रम को लेकर हुई बैठक

पदमा : पदमा प्रखंड अंतर्गत रोमी पंचायत भवन प्रांगण में झारखंड कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष केशव महतो कमलेश के निदेर्शानुसार संविधान सभा कार्यक्रम आयोजित किया गया कार्यक्रम का अध्यक्षता कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष गौतम कुमार मेहता वा संचालन गौतम चंद्रवंशी ने किया कार्यक्रम में संविधान के बारे में और बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के जीवन पर प्रकाश डाला गया साथ ही साथ या निर्णय लिया गया की 20 तारीख दिन सोमवार को बाबा भीमराव अंबेडकर सम्मान मार्च विधानसभा स्तरीय कार्यक्रम बरही भामाशाह स्कूल से बाबा भीमराव अंबेडकर स्टैचू तक होना सुनिश्चित किया गया है जिसमें झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष केशव महतो कमलेश बतौर मुख्य अतिथि शामिल होंगे जिसमें पदमा प्रखंड के सैकड़ो कार्य करता बाबा साहब भीमराव अंबेडकर सम्मान मार्च में भाग लेंगे मौके पर प्रखंड अध्यक्ष गौतम कुमार मेहता गौतम चंद्रवंशी चुन्नू कुमार विजय रविदास दिलीप रविदास कारण ओझा अजय कुमार सतीश कुमार उपेंद्र कुमार राजा कुमार आदि लोगों उपस्थित थे।

शिक्षा मंत्री का सर्किट हाउस और इचाक मोड़ में हुआ स्वागत

हजारीबाग : शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन का बरकट्ठा जाने के क्रम में हजारीबाग सर्किट हाउस और इचाक मोड़ में झामुमो कार्यकताओं ने स्वागत किया। सर्किट हाउस में झामुमो के केंद्रीय सचिव सह हजारीबाग संयोजक मंडली के मुख्य संयोजक संजीव बेदिया के नेतृत्व ने शिक्षा मंत्री का स्वागत किया गया। इस दौरान संजीव बेदिया ने संगठन के मुद्दे पर बात भी की। इस दौरान बरकट्ठा के पूर्व विधायक जानकी प्रसाद यादव और बड़कागांव प्रखंड अध्यक्ष संजय सिंह ने भी मंत्री रामदास सोरेन को पुष्प गुच्छ दिया। उसके बाद मंत्री श्री सोरेन का इचाक मोड़ में कार्यकताओं ने स्वागत किया। इस दौरान उप प्रमुख सत्येंद्र कुमार, मुखिया संघ जिला अध्यक्ष रंजीत कुमार, बीस सूत्री अध्यक्ष मनोहर राम, प्रखंड अध्यक्ष राजेश मेहता, सचिव बिकी धवन, कोषाध्यक्ष राजकुमार मेहता, महेंद्र दास, दिगम्बर मेहता, राजेन्द्र मेहता, कैलाश मेहता, उप मुखिया सजमा खातून, इसरत परवीन, पूनम देवी, प्रबिल मेहता, इंद्रदेव मेहता, लोक नाथ मेहता, शंकर कुमार, अनुज कुमार, कन्हैया सोनी समेत कई कार्यकर्ता उपस्थित थे।

एक नजर

सुजीत सिन्हा गैंग के दो बदमाश गिरफ्तार

रांची : जिले की ओरमांझी थाना पुलिस ने सुजीत सिन्हा गैंग के दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से एक टैब, दो मोबाइल, एक पैकेट डायरी और एक बैग बरामद किए गए हैं। ग्रामीण एसपी सुमित अग्रवाल ने रविवार को संवाददाता सम्मेलन में बताया कि गिरफ्तार आरोपितों में विक्की वर्मा और आयुष राज शामिल हैं। एसपी ने बताया कि 22 नवंबर, 2024 में ओरमांझी थाना क्षेत्र में दो बदमाश अपाची बाइक पर सवार होकर आये और फायरिंग की। इस दौरान संजीव जायसवाल के साथ काम कर रहे जावेद अंसारी और आजाद अंसारी को एक-एक गोली लगी थी। संजीव जायसवाल ने बताया था कि संगठित गिरोह सुजीत सिन्हा के सदस्यों ने उनसे लेवी मांगी थी और लेवी नहीं देने पर फायरिंग की गई। एसपी ने बताया कि वारदात के बाद एसआईटी टीम का गठन किया गया। टीम ने एटीएस और रांची जिले की तकनीकी शाखा की मदद से गिरोह के एक आरोपित जिशान शेख उर्फ रिक्की खान को पूर्व में गिरफ्तार किया था। टीम ने अनुसंधान के दौरान एक अपराधी विक्की वर्मा को छत्तीसगढ़ (रायपुर) के गंज थाना क्षेत्र से और एक अपराधी आयुष राज उर्फ छोटू को विकास गोलचक्कर (शालीमार नर्सरी) के पास से गिरफ्तार किया है।

झारखंड पुलिस एसोसिएशन का चुनाव का एलान, एक फरवरी से नामांकन

रांची : झारखंड पुलिस एसोसिएशन के चुनाव का ऐलान हो गया है। चुनाव कार्यक्रम की भी घोषणा कर दी गई है। झारखंड पुलिस एसोसिएशन केंद्रीय कार्यालय झारखंड के कार्यालय महामंत्री ने रविवार (19 जनवरा 2025) को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 1 फरवरी 2025 से चुनाव के लिए नामांकन शुरू हो जाएगा। झारखंड पुलिस एसोसिएशन के प्रांतीय अध्यक्ष योगेंद्र सिंह की अध्यक्षता में हुई बैठक में चुनाव कराने संबंधी फैसला हुआ। मो महताब आलम ने बताया कि 19 जनवरी 2025 को रांची के लाईन टैंक रोड स्थित झारखंड पुलिस एसोसिएशन परिसर में केंद्रीय कार्यसमिति की बैठक हुई। इसमें राज्य भर के विशेष आमंत्रित सदस्य, केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य, क्षेत्रीय मंत्री, प्रक्षेत्रीय मंत्री और सभी शाखाओं के चुने हुए प्रतिनिधि शामिल हुए। बैठक में सर्वसम्मति से झारखंड पुलिस एसोसिएशन के सातवें महाधिवेशन-सह-केंद्रीय पदाधिकारियों के चुनाव कराने का फैसला हुआ। केंद्रीय उपाध्यक्ष अखिलेश्वर पांडेय और अरविंद प्रसाद यादव, महामंत्री मो महताब आलम, संयुक्त सचिव रंजन कमार और संगठन सचिव अंजनी कुमार भी उपस्थित में जो निर्णय लिया गया।

अफीम की खेती को लेकर खतरे में थानेदार

रांची : साल 2025 अफीम तस्करों के लिए आफत बन कर आया है। सालों साल तक केवल अफीम की खेती को बर्बाद करने वाली पुलिस, अब अफीम किसानों को सीधे जेल भेज रही है। आलम यह है कि अब अफीम की खेती करने वाले ग्राम प्रधान जेल जा रहे हैं। वहीं, अफीम को लेकर जो थानेदार एफआईआर दर्ज नहीं कर रहे हैं, उनपर निलंबन का खतरा मंडरा रहा है। डीजीपी ने अफीम को लेकर एफआईआर नहीं करने वाले थानेदारों को सस्पेंड करने का निर्देश जारी कर दिया है। पिछले 15 दिनों के भीतर अफीम प्रभावित जिलों से एक दर्जन से ज्यादा अफीम किसानों को गिरफ्तार किया गया है। खूंटी में तो एक ग्राम प्रधान ही अफीम की खेती करवा रहा था। सूचना मिलने पर उसे भी गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। दरअसल, झारखंड में साल 2025 से पहले अफीम की फसल को नष्ट करने के लिए सिर्फ खानापूर्ति किया जाता था।

रांची से प्रयागराज महाकुंभ के लिए स्पेशल ट्रेन शुरू, रक्षा राज्य मंत्री ने दिखाई हरी झंडी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रेलवे ने रांची से उत्तर प्रदेश के प्रयागराज महाकुंभ जाने के लिए रविवार से स्पेशल ट्रेन संख्या 08067 की शुरूआत की है। रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने रांची रेलवे स्टेशन से टूंडला के लिए महाकुंभ स्पेशल ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। महाकुंभ स्पेशल ट्रेन को हरी झंडी दिखाने से पहले रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने प्रयागराज जाने वाले श्रद्धालुओं का तिलक लगाकर स्वागत किया। उन्होंने उनसे झारखंड की सुख-समृद्धि के लिए भगवान से आशीर्वाद मांगने का भी आग्रह किया। साथ ही श्रद्धालुओं से अपील की कि महाकुंभ में डुबकी लगाने के बाद वे मां गंगा से राज्य के विकास के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के और अधिक शक्तिशाली और दीर्घायु होने का आशीर्वाद मांगें। उन्होंने महाकुंभ के सुखद संयोग और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के कुशल नेतृत्व की भी सराहना की। राज्यसभा सदस्य दीपक प्रकाश ने महाकुंभ के लिए रांची से स्पेशल ट्रेन चलाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार जताया। इस दौरान राज्यसभा सदस्य महुआ माजी, रांची विधानसभा क्षेत्र के विधायक सीपी सिंह और हटिया डीआरएम जसमीत बिंद्रारांची सहित कई अन्य लोग मौजूद थे। उल्लेखनीय है रांची के सांसद और रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने प्रयागराज महाकुंभ मेले के लिए रांची रेल मंडल से ट्रेन का परिचालन करने को लेकर केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से मुलाकात कर उनसे चर्चा की थी। साथ ही उनसे आग्रह किया था कि कुंभ ट्रेनों का परिचालन रांची के रूट से किया जाए। इससे रांची, रामगढ़, खूंटी, हजारीबाग, लोहरदगा, गुमला, सिमडेगा, कोडरमा, चतरा, लातेहार, पुरुलिया, जमशेदपुर और सरायकेला-खरसावां सहित कई जिलों के लोग कुंभ की यात्रा कर सकेंगे। इसके बाद प्रयागराज में 28 फरवरी तक होने वाले महाकुंभ में रांची से जाने वाली सभी ट्रेनों में नो रूम होने के कारण श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए रेलवे प्रशासन ने रांची से 10 महाकुंभ स्पेशल ट्रेनों का परिचालन शुरू करने का निर्णय लिया था। इसी के तहत टूंडला एक्सप्रेस को रांची होते हुए प्रयागराज के लिए रवाना किया गया।

रांची में लापता व्यक्ति का मिला शव, तीन आरोपी गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : जिले के तमाड़ थाना क्षेत्र के मधुकम प्लांट के लापता सुपरवाइजर तुम्माला गंगाधर राव का शव कुएं से मिला है। इस मामले में पुलिस ने तीन आरोपितों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से मृतक का मोबाइल और एक आई फोन बरामद किया गया है। ग्रामीण एसपी सुमित अग्रवाल ने रविवार को संवाददाता सम्मेलन में बताया कि गिरफ्तार आरोपितों में विवेक सिंह मुंडा, विजय लोहरा और सचिन मुंडा शामिल हैं। एसपी ने बताया कि आठ दिसंबर, 2024 को मधुकम प्लांट के मैनेजर ने थाने में सुपरवाइजर के लापता होने का मामला दर्ज कराया था। इस मामले में एसडीपीओ बुंडू के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया। टीम ने तकनीकी शाखा के सहयोग से तीन आरोपितों को गिरफ्तार किया है। पुलिस की पूछताछ में तीनों ने अपराध स्वीकार किया है। इनकी निशानदेही पर मृतक तुम्माला गंगाधर राव का शव कुएं से बरामद किया गया। दूसरी ओर, तमाड़ थाना पुलिस ने अफीम की गैरकानूनी खेती करने के मामले में एक किसान धनीराम महतो को गिरफ्तार किया है।

प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम एक भारत-श्रेष्ठ भारत की गाथा है : बाबूलाल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने रविवार को प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर कार्यकताओं और आम लोगों के साथ बूथ स्तर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात को सुनी। प्रदेश अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने रांची महानगर के बरियातू मंडल में कार्यकर्ताओं के साथ पीएम के मन की बात सुनी। इस मौके पर बाबूलाल मरांडी ने कहा कि मन की बात कार्यक्रम एक राजनीतिक संबोधन नहीं, बल्कि यह एक भारत-श्रेष्ठ भारत की गाथा है। विविध क्षेत्रों की महत्वपूर्ण जानकारियों से परिपूर्ण यह संविधान आमजन को प्रेरित करता है। उन्होंने कहा कि आज के संबोधन में भारत की सांस्कृतिक विरासत और विकास की चर्चा हुई है। साथ ही कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विकास की गाड़ी अपनी विरासत को सहेजते और संवारते हुए आगे बढ़ रही है। मरांडी ने कहा कि संविधान सभा में दिए गए देश के महापुरुषों के संबोधन ने आमजन को संविधान की मूल भावनाओं से परिचित कराया। विरासत पर गर्व करने के अवसर दिए। स्टार्टअप की चर्चा ने युवाओं को नए-नए क्षेत्र से अवगत कराया। संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह एवं सांसद दीपक प्रकाश ने हरमू मंडल में कार्यक्रम को सुना। प्रदेश के अलग-अलग स्थानों पर पार्टी के प्रदेश, जिला मंडल के पदाधिकारियों, सांसदों, विधायकों एवं कार्यकताओं ने एक साथ मन की बात कार्यक्रम को सुना। कार्यक्रम सुनने वालों में कार्यकारी अध्यक्ष डॉ रविंद्र कुमार राय, प्रदेश महामंत्री एवं सांसद आदित्य साहू, डॉ प्रदीप वर्मा और मनोज कुमार सिंह आदि शामिल रहे।

राष्ट्रीय पुस्तक मेला में हरिवंश की दस किताबों पर संवाद, पाठकों की उमड़ी भीड़

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : स्थानीय जिला स्कूल मैदान में समय इंडिया, नई दिल्ली एवं बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय, पटना के संयुक्त तत्वावधान में जारी 10 दिवसीय राष्ट्रीय पुस्तक मेला के तीसरे दिन मेला परिसर में पुस्तक प्रेमियों की गहमा-गहमी रही। रविवार छुट्टी का दिन होने के नाते लोगों ने अपना समय किताबों के संग बिताया। इस अवसर पर शैक्षणिक कार्यक्रमों की ऋंखला में राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश जी के 1977 से लेकर 2017 तक अखबारों में छपे लेखों का संग्रह दस अध्यायों में प्रकाशित पुस्तकों पर संवाद का कार्यक्रम मेला के सभागार मंच पर आयोजित किया किया गया है। संवाद में हरीश चंद्र शर्मा ने कहा कि अशिक्षित लोग सरकारी योजना से पिछड़ते जा रहे हैं परन्तु शिक्षित लोग सरकारी योजना से जुड़ रहे हैं। रवि दत्त वाजपेयी ने श्री परमहंस योगानंद जी की पुस्तक 'योगी कथामृत' पर भी चर्चा की। दयामनी बारला ने कहा कि हरिवंश जी के संपादकीय नेतृत्व में जो भी घटनाएँ घटी। उन घटनाओं का यथासंभव दृश्य इन पुस्तकों में दिखाई पड़ता है। अनुज कुमार सिन्हा ने कहा कि इनका जन्म 23 जून यानि हुल दिवस के दिन हुआ। इसका प्रभाव एक सौ वर्ष बाद उनके व्यक्तित्व में पत्रकारिता के रुप में दिखाई पड़ता है। आपने तेवर की पत्रकारिता की। महादेव टोप्पो ने कहा कि मुझे दो पत्रकारों ने अखबार में जगह दी- एक बलबीर दत्त जी और दूसरे हरिवंश जी। बलबीर दत्त ने कहा कि हरिवंश पुराण में 25 प्रकरण हैं। हरिवंश जी की पुस्तकों की संख्या भी पचीस हो गई है। इसलिए इसे हरिवंश पुराण का नया संस्करण माना जा सकता है। हरिवंश जी और विनय भरत जी से एक लम्बी बातचीत चली। कुशल संचालन अनीश अंकुर जी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन चंद्रभूषण जी ने किया।

रक्षा राज्य मंत्री ने सफाई कर्मियों के साथ सुनी प्रधानमंत्री के मन की बात

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात के 118वें एपिसोड को रविवार को रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने अपने आवास पर सैकड़ों सफाई कर्मचारियों के साथ सुनी। इसके बाद उन्होंने विभिन्न वार्डों के सफाई कर्मियों के बीच कंबल का वितरण किया। सेठ ने इस अवसर पर कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणादायक बातें सुनकर हम सब को एक ऊर्जा प्राप्त होती है और उसी ऊर्जा के साथ हम लोग आगे काम कर पाते हैं। हमारे देश के ऐसे होनहार जो अपने-अपने क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करते हैं उसे जानने का मौका मिलता है। देश में कुंभ का आयोजन हो रहा है। इस कुंभ की व्यवस्था की पूरे विश्व में सराहना हो रही है। इसे जानने का मौका मिल रहा है। सेठ ने कहा कि स्टार्टअप और भारतीय स्पेस डॉकिंग ऐसे कई उत्कृष्ट कार्य, जो आज भारत विश्व के चौथे नंबर पर है, ऐसी गाथाओं को सुनकर पूरा देश गौरवान्वित महसूस करता है। रेडियो के मन की बात के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों को भारत की गाथा को जानने का अवसर मिलता है। वर्ष 2047 तक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत बनाने का सपना और कैसे भारत सर्वश्रेष्ठ भारत बने, इन सभी गाथाओं को सुनने का अवसर मिलता है। सेठ ने कहा कि आज पंडरा मंडल सुखदेव नगर मंडल के सैकड़ों सफाई कर्मियों के साथ मन की बात सुनने का अवसर प्रदान हुआ।

जेसीआई रांची का 65वां शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रविवार को रांची के होटल रेनड्यू में जेसीआई रांची ने 65वें शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया। इस भव्य कार्यक्रम के मुख्य अतिथि झारखंड के पहले मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी जी थे, और विशिष्ट अतिथि के रूप में जेसीआई इंडिया की पूर्व नेशनल प्रेसिडेंट जेसी राखी जैन उपस्थित रहीं। समारोह में संस्था के नवनिर्वाचित अध्यक्ष जेसी प्रतीक जैन ने अपनी ऊजार्वान टीम के साथ शपथ ग्रहण किया। मुख्य अतिथि बाबूलाल मरांडी जी ने अध्यक्ष प्रतीक जैन और उनकी टीम को शुभकामनाएँ देते हुए जेसीआई को जूनियर चैंबर इंटरनेशनल के बजाय यूथ चैंबर इंटरनेशनल के रूप में संबोधित किया, जो युवाओं के नेतृत्व और समाज में सकारात्मक बदलाव का प्रतीक है। विशिष्ट अतिथि जेसी राखी जैन ने जेसीआई रांची को ₹मिनी जेसीआई जोन₹ के रूप में सराहा और इसकी उपलब्धियों के लिए बधाई दी। उन्होंने नई टीम को समाजसेवा और विकास के लिए प्रेरित करते हुए उनकी योजनाओं की प्रशंसा की। नवनिर्वाचित अध्यक्ष जेसी प्रतीक जैन ने अपनी टीम को संबोधित करते हुए लीडिंग द चेंज थीम पर जोर दिया। उन्होंने इस साल समाज के विकास के लिए कई योजनाओं की घोषणा की, जिनमें 50 जरूरतमंद विद्यार्थियों को स्कॉलरशिप प्रदान करने की योजना प्रमुख है। सचिवः जेसी सनी केडिया, उपाध्यक्षः जेसी अभिषेक जैन, जेसी निशांत मोदी, जेसी निखिल, जेसी मयंक अग्रवाल, जेसी साकेत अग्रवाल, जेसी तरुण अग्रवाल, कोषाध्यक्षः जेसी कौशल मुरारका, संयुक्त सचिवः जेसी सौरभ जालान, प्रवक्ताः जेसी आदित्य जालान। निर्देशकः जेसी अभिषेक नारनौली, जेसी अक्षत अग्रवाल, जेसी अमन सिंघानिया, जेसी अनीश जैन, जेसी अंकित अग्रवाल, जेसी अनुभव अग्रवाल, जेसी किशन अग्रवाल, जेसी मंदीप सिंह, जेसी मोहित बागला, जेसी निखिल मोदी, जेसी नितिन पोद्दार, जेसी प्रवीण अग्रवाल, जेसी ऋषभ छापरिया, जेसी ऋषभ जैन, जेसी ऋषभ जालान, जेसी ऋषभ सिंघानिया, जेसी ऋषि मुरारका, जेसी संदीप खेमका, जेसी संकेत सरावगी, जेसी सौरव नरेडी, जेसी सृजन हेतमसरिया। कार्यक्रम की प्रमुख झलकियांः मंच संचालन का दायित्व जेसी ऋषभ जैन ने निभाया, जबकि कार्यक्रम के आयोजन और संचालन में जेसी देवेश जैन, जेसी तपिश केडिया, और जेसी केशू जैन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर जेसीआई रांची के पूर्व अध्यक्ष, पूर्व सचिव और रांची के प्रतिष्ठित संस्थानों के प्रतिनिधि बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

आजसू के बिना झारखंड की कल्पना संभव नहीं : प्रवीण प्रभाकर

रांची : झारखंड आंदोलनकारी नेता प्रवीण प्रभाकर ने रविवार को आजसू में घर वापसी की। रांची के पार्टी कार्यालय में आजसू सुप्रीमो सुदेश महतो ने प्रवीण प्रभाकर को आजसू की सदस्यता दिलाई। पार्टी की सदस्यता लेने के बाद प्रवीण प्रभाकर ने कहा झारखंड अलग राज्य आंदोलन की इतिहास में आजसू की महत्वपूर्ण भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। पार्टी के गठन से लेकर राज्य गठन तक आजसू ने हर कदम पर अपने संघर्ष और योगदान से राज्य के भविष्य को आकार देने में अहम भूमिका निभाई है। आजसू ने 1986 में अपनी स्थापना की और इसके बाद पार्टी ने झारखंड की मांग को लेकर निर्णायक कदम उठाए। 1989 में केंद्र सरकार से वार्ता करके, आजसू ने झारखंड के मुद्दे को राष्ट्रीय स्तर पर उठाया। इसके परिणामस्वरूप, झारखंड विशेष समिति का गठन किया गया, जिसमें आंदोलनकारियों को भी बुलाया गया। समिति की रिपोर्ट में यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया कि झारखंड की समस्याओं का समाधान किया जाए। प्रवीण प्रभाकर ने कहा कि 2000 में झारखंड राज्य का गठन हुआ और यह कहना गलत नहीं होगा कि यह एक लंबी और कठिन यात्रा का परिणाम था। हालांकि, इस आंदोलन में आजसू ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन 1999 में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) ने आजसू को राज्य गठन के संदर्भ में प्रस्ताव भेजा। आजसू ने एनडीए का साथ देते हुए झारखंड के अलग राज्य के निर्माण में अपनी पूरी ताकत झोंकी, और अंततः झारखंड राज्य का सपना पूरा हुआ। आजसू की यह ऐतिहासिक भूमिका झारखंड के इतिहास में हमेशा याद रखी जाएगी, क्योंकि इसने न केवल राज्य गठन की प्रक्रिया को गति दी, बल्कि झारखंड के समग्र विकास की दिशा में भी अहम योगदान दिया।

रांची ब्रह्मकुमारी विवि में मनाया ब्रह्म बाबा का 56वां स्मृति दिवस

रांची : शहर के पिठौरिया के नवा टोली स्थित प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में रविवार को संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्म बाबा का 56वां पुण्य स्मृति दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सेवा केंद्र संचालिका बीके राजमती ने ब्रह्म बाबा के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बाबा ने मानव मात्र के जीवन को सुखी बनाने के लिए कई प्रेरणाएं दी हैं। बाबा की शिक्षाएं मनोवैज्ञानिक रूप से बहुत लाभदायक सिद्ध हुई हैं और आज पूरे विश्व में ब्रह्म बाबा की शिक्षा के जरिये लाखों लोगों ने अपना जीवन सुखमय बनाया है। युवा समाजसेवी आशुतोष द्विवेदी ने कहा कि ब्रह्म बाबा एक आध्यात्मिक प्रणेता थे, जो लोगों के जीवन से अवगुणों को छुड़ाने के मार्गदर्शक बने। समाजसेवी सह बाडू पंचायत के सरपंच अशोक उरांव ने जीवन में आध्यात्मिकता को अपनाने की बात कही। समाजसेविका संपति देवी ने भी अनुभव साझा किया और ब्रह्म बाबा को श्रद्धा सुमन अर्पित किया। इस अवसर पर संस्था की उर्मिला देवी, लीला देवी, कविता सेन और किरण देवी सहित कई अन्य लोग मौजूद थे।

मजदूर-किसान एकता दिवस पर सीटू और किसान सभा का प्रदर्शन

रांची : रविवार को सीटू और झारखंड राज्य किसान सभा ने राजधानी रांची में शहीद अल्बर्ट एक्का चौक पर प्रदर्शन किया और देशव्यापी मजदूर-किसान एकता दिवस का पालन किया। मौके पर उपस्थित लोगों ने मजदूर-किसान विरोधी नीतियां बदलने तक केंद्र की मोदी सरकार के खिलाफ संघर्ष करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम के माध्यम से मोदी सरकार द्वारा पारित कापोर्रेटपरस्त 4 लेबर कोड एवं नई कृषि बाजार नीति रद्द करने की मांग की गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मजदूर एवं किसान नेताओं ने कहा कि स्वतंत्र भारत में मजदूर वर्ग की पहली आम हड़ताल 19 जनवरी 1982 को हुई थी जिसे समाज के विभिन्न तबकों और सभी विपक्षी दलों ने समर्थन किया था। उस ऐतिहासिक आंदोलन से मजदूर वर्ग ने जीत हासिल की थी। लेकिन वर्तमान मोदी सरकार मजदूर-किसान की मांगों के प्रति घोर उदासीन है और समझौतों का उल्लंघन करते हुए वादाखिलाफी एवं लोकतंत्र विरोधी रवैया अपना रही है। इसलिए मोदी सरकार की कापोर्रेटपरस्त नीतियों को बदलने के लिए मजदूरों व किसानों की व्यापक एकता बनाकर संघर्ष तेज किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता सीटू नेता अनिर्वान बोस ने किया जबकि मौके पर सीटू के कनकरंजन चौधरी, एम एल सिंह, अभिजीत मल्लिक, एजाज खान, सुमित गुप्ता, मनोज मंडल, नवीन चौधरी, अमित राय, किसान सभा के प्रफुल्ल लिंडा, विरेन्द्र कुमार, सुखनाथ लोहरा, बेन्जामिन कुजुर, प्रकाश टोप्पो, आक्रांत सिंह मुण्डा, शूलचंद नायक, एडवा नेत्री, वीणा लिण्डा सहित अन्य लोग शामिल थे।

बीजेपी ने जन्म प्रमाण पत्र फजीर्वाड़े पर सख्त कार्रवाई की मांग की

रांची : झारखंड में प्रशासनिक लापरवाही और भ्रष्टाचार के खिलाफ भाजपा ने मोर्चा खोल दिया है। रांची नगर निगम द्वारा झारखंड कैडर के आईएएस अधिकारी राजीव रंजन के बेटे के नाम पर तीन अलग-अलग जन्म प्रमाण पत्र जारी करने के मामले में भाजपा ने उच्च स्तरीय जांच की मांग की है। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता अजय साह ने इस मामले को प्रदेश में व्याप्त भ्रष्टाचार का एक गंभीर उदाहरण बताया। उन्होंने आरोप लगाया कि रांची नगर निगम में आम नागरिकों को जन्म प्रमाण पत्र के लिए महीनों तक अधिकारियों के चक्कर लगाने पड़ते हैं। जबकि प्रभावशाली लोग अपने संपर्कों का इस्तेमाल कर नियमों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। अजय साह ने इस मामले को आंतरिक सुरक्षा से भी जोड़ा क्योंकि यह मामला पासपोर्ट में संशोधन से जुड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि यदि नगर निगम इतने आसानी से फर्जी जन्म प्रमाण पत्र जारी कर सकता है। पहले भी इस तरह के कई मामलों का सामने आना संभव है। भाजपा प्रवक्ता ने इस प्रकरण में दोषी अधिकारियों पर फजीर्वाड़े के आरोप के तहत कार्रवाई की मांग की और भारतीय दंड संहिता की धारा 336 के तहत मामले की जांच का अनुरोध किया। अजय साह नगर निगम और अन्य नगर निकायों की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए और कहा कि इन संस्थानों में जवाबदेही का अभाव है। उन्होंने नगर निकाय चुनावों के संदर्भ में भी चिंता जताई और कहा कि जनप्रतिनिधियों की अनुपस्थिति ने इन संस्थानों को भ्रष्टाचार के केंद्र में बदल दिया है। भाजपा ने मांग की है कि इस भ्रष्टाचार पर नियंत्रण पाने के लिए सख्त कदम उठाए जाएं और दोषियों को कड़ी सजा दी जाए।

एक नजर

अवैध शराब की मिनी फैक्ट्री में छापेमारी

धनबाद : सहायक उत्पाद आयुक्त के निर्देश पर धनबाद के राजगंज थाना क्षेत्र के बेलायटांड में ईंट भटे की आड़ में चल रहे नकली अवैध शराब की मिनी फैक्ट्री का भांडा फोड़ हुआ है। दो सौ पंद्रह पेटी नकली अंग्रेजी शराब के साथ भारी मात्रा में स्प्रीट,रेपर,खाली बोतल,कैरामल कैमिकल जब्त हुआ है।जब्त नकली शराब RS, IB ब्रांड के है सभी नकली शराब इट भट्ठा के बगल में मकान में अवैध शराब धंधेबाज मुरली साह के द्वारा तैयार किया जा रहा था इसे बिहार भेजने का सिलसिला लंबे समय से जारी थी। उत्पाद दारोगा अमित कुमार गुप्ता,जितेंदर कुमार सिंह कुलदीप कुमार और जय हेंब्रम के नेतृत्व में उक्त कार्रवाई हुई है। पूरे मामले पर जानकारी देते हुए उत्पाद दरोगा अमित कुमार गुप्ता ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर राजगंज पुलिस की सहयोग से कार्रवाई की गई है करीब 25 लाख रुपए के शराब बरामद हुए हैं धाबाचिता मोड़ के मुरली साव इसमें शामिल है छापेमारी की सूचना मिलते ही मौके से फरार हो गया उसके खिलाफ कार्रवाई के अनुशंसा की है।

बालीडीह थाना क्षेत्र में महिला की हत्या

बोकारो : बोकारो में महिला की हत्या कर शव को फेका गया था। गला घोटकर किया गया है हत्या। बालीडीह थाना क्षेत्र के रेलवे स्टेशन के समीप रेलवे के खंडहर नुमा आवास के पास शव को फेका गया था। मौके पर पहुंची पुलिस और जांच में जुटी। मृतक महिला का उम्र लगभग 25 वर्ष बताई जा रही और अभी पहचान नहीं हो पाई है। बालीडीह थाना क्षेत्र का है मामला। बताते चले की बोकारो के बालीडीह थाना क्षेत्र में एक शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई है। महिला की अपराधियों ने गला घोटकर हत्या कर दिया है। घटना की सूचना पाकर मुख्यालय डीएसपी पुलिस दलबल के साथ पहुंची जहां हत्या के कारणों का पता लगाने में जुटी हुई है साथ ही मृतिका की पहचान भी की जा रही है। हत्या किन कारणों से हुआ और कौन कौन लोग इसमें शामिल है पुलिस वैज्ञानिक अनुसंधान के जरिए पता लगाने में जुटी हुई है और इसके लिए फिंगर एक्सपर्ट के साथ-साथ एफएसएल की टीम को भी बुलाया गया है। डीएसपी ने कहा कि घटनास्थल को सील कर दिया गया है और पूरे मामले की तहकीकात की जा रही है अपराधी जल्द ही सलाखों के पीछे होगा।

12 फरवरी को होगा युवा लायंस फोर्स की वन भोज सह मिलन समारोह : देव शर्मा

बोकारो : युवा लायंस फोर्स की बैठक आवासीय कार्यालय बोदरो में हुई। जिसकी अध्यक्षता बिजय दास और संचालन संजय शर्मा ने किया। जिसमें मुख्य रूप से युवा कांग्रेस के प्रदेश उपाध्यक्ष सह युवा लायंस फोर्स के केंद्रीय अध्यक्ष देव शर्मा शामिल हुए। सैकड़ो युवाओं, मजदूरों, समाजसेवियो, एवं युवा लायंस फोर्स के नेता और कार्यकताओं के सर्वसम्मति से 12 फरवरी दिन बुधवार को बोदरो मे युवा लायंस फोर्स का वनभोज सह मिलन समारोह निर्धारित किया गया। और इसी दिन के साथ युवा लायंस फोर्स का सदस्यता अभियान का भी शुरूआत किया जायेगा। देव शर्मा ने कहा कि युवा लायंस फोर्स एक सामाजिक संगठन है जिसमें बोकारो जिला शहरी, ग्रामीण, सेक्टर, चास चंदनक्यारी समेत ज़िले के सभी विधानसभा में सक्रिय सदस्य हैं। यह संगठन बेरोजगार एवं मजदूर वर्ग के लोगों के साथ हमेशा खड़ी रहती है साथ ही समय-समय पर धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करती है जिसमें हजारों के तादाद में मजदूर , युवा, एवं समाजसेवी शामिल होते हैं। आज बैठक में युवा नेता देव शर्मा ने कहा कि मैं दिन-रात दबे कुचले एवं मजदूर वर्ग के लोगों के लिए खड़ा रहता हूं और आगे भी रहूंगा, हमारे संगठन 15 वर्षों से हर क्षेत्र में सक्रिय रहा है।

बोकारो जनरल अस्पताल के चिकित्सा प्रमुख से 20 लाख रुपये की ठगी, पुलिस जांच में जुटी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : बोकारो जनरल अस्पताल के चिकित्सा प्रमुख डॉ. विभूति भूषण करुणामय साइबर जालसाजों ने झूठे आरोप और धमकी का सहारा लेकर डॉक्टर से 20 लाख 86 हजार 947 रुपये ठग लिए। साइबर अपराधियों ने उन्हें फर्जी मनी लॉन्ड्रिंग केस में फंसाने की धमकी देकर यह रकम ऐंठ ली। डॉक्टर की शिकायत पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। यह घटना डिजिटल ठगी के बढ़ते खतरों को उजागर करती है और सतर्कता की जरूरत पर बल देती है। इसके पहले भी साइबर अपराधियों ने बीजीएच के डॉक्टरों को निशाना बनाया है डॉ द्वारा दी गई जानकारी पर साइबर थाना पुलिस ने FIR दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। डॉक्टर ने पुलिस को विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि घटना 15 जनवरी की है, जब वह अस्पताल के इकोकार्डियोग्राफी रूम में मरीज की जांच कर रहे थे। डॉक्टर विभूति को एक फोन कॉल आया, जिसमें कॉलर ने खुद को टेलीफोन विभाग का कर्मचारी बताया। कॉलर ने कहा कि डॉक्टर के नाम से जारी एक मोबाइल नंबर से अवैध फोटो और वीडियो वायरल हुए हैं, और उनका नंबर दो घंटे में बंद हो सकता है। इसके समाधान के लिए कॉलर ने उन्हें कीपैड पर 9 दबाने को कहा। डॉक्टर ने निर्देशों का पालन किया, जिसके बाद किसी ने खुद को पुलिस अधिकारी बताकर कहा कि उनके नाम से मुंबई के नासिक एक मोबाइल नंबर रजिस्टर किया गया है। व्हाट्सएप वीडियो कॉल से बढ़ी संदिग्ध गतिविधियां अपराधी ने डॉक्टर से व्हाट्सएप वीडियो कॉल पर एकांत कमरे में बात करने को कहा। ढाई घंटे तक बातचीत में अपराधी ने डॉक्टर को नासिक जाकर एफआईआर दर्ज कराने या ऑनलाइन काउंटर एफआईआर का सुझाव दिया। डॉक्टर ने नासिक जाने में असमर्थता जताई, जिसके बाद अपराधी ने उन्हें ऑनलाइन एफआईआर का विकल्प दिया।

फर्जी बैंक खातों और मनी लॉन्ड्रिंग का हवाला

इसके बाद शातिर ने चिकित्सक को झांसे में लेने के लिए स्पीकर पर फोन रखकर किसी और से बात कराई। 'उधर से जवाब आया कि इस नंबर से पांच प्रदेशों में अवैधानिक कृत्य चल रहा है। अपराधी ने डॉक्टर को फर्जी बैंक खाता खोलने और मनी लॉन्ड्रिंग के आरोपों का डर दिखाया। उसने दावा किया कि डॉक्टर के नाम से केनरा बैंक में खाता खुला है, जिससे नरेश गोयल के मनी लॉन्ड्रिंग मामले का कनेक्शन है। अपराधी ने गैर-जमानती वारंट की प्रति व्हाट्सएप पर भेजकर डॉक्टर को और भयभीत कर दिया।

अवैध रेलवे ई-टिकट कारोबार का पर्दाफाश 13 ई टिकट के साथ 32,230 नगद जब्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : ऑपरेशन उपलब्ध के तहत बोकारो आफ ने अवैध तरीके से रेलवे ई टिकट की खरीद और आपूर्ति का कारोबार चल रहा था। सूचना के आधार पर जब बोकारो आरपीएफ ने सेक्टर 9 बी रोड स्थित सिम ब्रदर्स कैफे नाम के दुकान पर जब तलाशी ली गई तो पता चल वहां पर कुल 13 ई टिकट दो लाइव ई टिकट और 11 पुरानी ई टिकट मिला जिसका मूल्य लगभग 32,230.05/ रूपया है एवं उसे जगह पर से ई टिकट में उपयोग होने वाली उपकरण को भी जप्त की गई बताते चले की आद्रा कार्यालय से डी एस सी आरपीएफ द्वारा पेबल डाटा और आरोपी राकेश कुमार रोशन के खिलाफ मामला 86/ 25 यू एस 143 रेलवे अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया। ऑपरेशन उपलब्ध के तहत बोकारो आईपीएफ संतोष कुमार की अगुवाई में बोकारो आरपीएफ द्वारा सेक्टर 9 बी रोड स्थित सिंह ब्रदर्स कैफे नाम की दुकान पर 12:30 बजे छापा मारा गया। जहां मौके पर से बहुत सारे रेलवे का ई-टिकट बरामद की गई । छानबीन पर राकेश कुमार रोशन के नाम से एक एजेंट आईडी भी पेश किया गया। इसके बावजूद वह अपने निजी लाभ के लिए व्यक्तिगत यूजर आईडी के माध्यम से अवैध रूप से रेलवे की ई टिकट की खरीद और आपूर्ति करते पकड़ा गया। उपयोग में आने वाले उपकरण एक मॉनिटर एक कीबोर्ड एक माउस कैनन का प्रिंटर एक एचपी का सीपीयू एक डायरी और वीवो कंपनी का एक मोबाइल फोन बरामद की गई।

एलआईसी राष्ट्रीयकरण दिवस के अवसर पर बीमा कर्मचारी संघ ने बनाई मानव श्रृंखला

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : रविवार को बीमा कर्मचारी संघ के धनबाद शाखा के सदस्यों में रणधीर वर्मा चौक पर मानव श्रृंखला बनाई। अवसर था 70वें जीवन बीमा व्यवसाय राष्ट्रीयकरण दिवस का। कार्यक्रम में बीमा कर्मचारी संघ, हजारीबाग मंडल के अध्यक्ष हेमंत मिश्रा ने कहा कि 19 जनवरी 1956 को ही जीवन बीमा व्यवसाय के राष्ट्रीयकरण की दिशा में पहला कदम उठाया गया था, जीवन बीमा अध्यादेश की घोषणा के माध्यम से, सभी बीमा कंपनियों के नियंत्रित व्यवसाय का प्रबंधन तत्काल प्रभाव से केंद्र सरकार को सौंप दिया गया था। प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने संसद में घोषणा की थी कि जीवन बीमा का राष्ट्रीयकरण समाजवादी समाज की ओर हमारे मार्च में एक महत्वपूर्ण कदम है। वास्तव में यह देश की आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के निर्माण के प्रयास में एक ऐतिहासिक क्षण था। 1956 से ही एलआईसी राष्ट्र निर्माण गतिविधियों के लिए भारी निवेश प्रदान करके भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी के रूप में कार्य कर रही है। पूर्व राष्ट्रपति माननीय डॉ अब्दुल कलाम ने सही कहा था कि एलआईसी हर आर्थिक गतिविधि में सरकार की भागीदार रही है। अपने आदर्श वाक्य जनता का पैसा जनता के लिए के अनुरूप, एलआईसी ने 31 मार्च 2024 तक बड़े पैमाने पर समुदाय के लाभ के लिए 51 लाख करोड़ रुपये से अधिक का निवेश किया है। इसने अब तक केंद्र और राज्य सरकार की प्रतिभूतियों और आवास, बिजली, सिंचाई, सड़क और पुल, रेलवे आदि के लिए निवेश के रूप में 34,38,020 करोड़ रुपये प्रदान किए हैं। 24 वर्षों से अधिक समय तक 23 निजी कंपनियों के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करने के बाद भी, एलआईसी 70 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी के साथ आगे बढ़ रही है।

झारखंड मुक्ति मोर्चा का सदस्यता अभियान की हुई शुरूआत, 300 से अधिक लोगों ने ली सदस्यता

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : झारखंड मुक्ति मोर्चा ने बोकारो जिले में सदस्यता अभियान की शुरूआत की। अभियान का उद्घाटन नयामोड़ स्थित भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा स्थल पर नमन करके किया गया। पहले दिन ही तीन सौ से अधिक लोगों ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। डा. रतनलाल मांझी ने कहा कि झारखंड के सभी आंदोलनकारी नेताओं और पूर्व नेताओं का सम्मान किया जाएगा। उन्होंने यह भी बताया कि पार्टी का उद्देश्य जिले में झामुमो के पचास हजार सदस्य बनाने का है, और इसके लिए गांव-गांव में सदस्यता अभियान चलाया जाएगा। प्रत्येक गांव से 100-100 सदस्यों को जोड़ा जाएगा। झारखंड में सबसे अधिक सदस्य बोकारो जिले से बनाया जाएगा।डॉ. रतनलाल मांझी ने बताया कि यह अभियान पार्टी को जमीनी स्तर पर मजबूत बनाने और आम जनता तक पार्टी की विचारधारा पहुंचाने का एक महत्वपूर्ण कदम होगा। सदस्यता अभियान में सभी पुराने नेता एवं आंदोलनकारियों को शामिल किया जाएगा।कार्यक्रम में मुख्य रूप से बी के चौधरी, मंटू कुमार यादव, मोहन मुर्मू, हसन अंसारी, मुक्तेश्वर महतो, विजय रजवार, प्रमोद तापड़िया, पानबाबू केवट, दीपक महतो, मनोहर मुर्मू,पंकज मरांडी, भागीरथ शर्मा, बालवीर मिश्रा, फि रदौस अंसारी, शांति सोरेन, आलोक सिंह, कन्हैया सिंह, रंजीत महतो, महानंद मुर्मू, अरविंद मुर्मू ,बबीता देवी, कुंती देवी, बसंती देवी, श्री राम हेंब्रम, मिथुन मंडल, अशोक हेंब्रम, अजय हेंब्रम, लुकमान अंसारी, अशोक दसंदी, बलराम महतो, संपूर्ण सोरेन, खुदीराम दास, सदानंद गोप, गयाराम महतो, झारी हसदा, दिलीप मुर्मू, प्रदीप मंडल, संजय मुर्मू, आकाश टुडू, ओपन मुर्मू, मोहम्मद हारुन रशीद, संतोष हेंब्रम, लालजी मांझी, विकास महतो, दिनेश यादव, दिलीप ठाकुर,सोहराय हसदा, धर्मवीर गुप्ता, सुरेंद्र कुमार,अजय किस्कू, अर्जुन महतो, धनश्वर तुरी, सहित सैकड़ो लोग उपस्थित थे।

13वें वार्षिक उत्सव प्रकाश 25 में दिव्यांग बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : रविवार को नारायणी चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित जगजीवन नगर स्थित दिव्यांग बच्चों की विशेष स्कूल पहला कदम स्कूल के विशेष बच्चों ने आईआईटी आईएसएम के कर्तव्य द्वारा आयोजित 13वें वार्षिक उत्सव प्रकाश में भाग लिया। इन विशेष बच्चों ने झारखंड की लोक कला की सुंदर प्रस्तुति देकर सभी का मन मोह लिया। इस इवेंट में सभी अतिथियों एवं अभिभावकों ने बच्चों की प्रतिभा को सराहा। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विशेष बच्चों की प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना और समाज में उनकी भागीदारी को बढ़ावा देना था। झारखंड की समृद्ध लोक कला और संस्कृति को इन बच्चों ने अपनी अद्भुत प्रस्तुतियों के माध्यम से मंच पर जीवंत कर दिया । इस आयोजन ने न केवल विशेष बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाया, बल्कि उनकी क्षमताओं और कला को पहचानने का एक बेहतरीन मंच प्रदान किया। पहला कदम परिवार के प्रवक्ता ने कहा हमारे दिव्यांग बच्चों की प्रतिभा को आयोजक ने एक प्लेटफॉर्म देकर उनका आत्मविश्वास बढ़ाया इसके लिए हम सभी का आभार व्यक्त करते हैं।

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म में बढ़ती महिला हिंसा पर जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : ऑनलाइन माध्यम में बढ़ते महिला हिंसा पर आज सहयोगिनी संस्था द्वारा कसमार के टांगटोना पंचायत भवन में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सहयोगिनी की सचिव कल्याणी सागर ने बताया कि तकनीक का दुरुपयोग कर ऑनलाइन प्लेटफॉर्म में लड़कियों तथा महिलाओं पर हिंसा की संख्या बढ़ती जा रही है। जिसे जन जागरूकता के माध्यम से रोका जा सकता है। उन्होंने कहा डिजिटल प्लेटफार्म में महिलाओं पर ज्यादा प्रहार हो रहा है। साइबर अपराधी महिला को टारगेट कर परेशान कर रहे है। जिस पर अंकुश लगाना जरूरी है । रिसोर्स पर्सन संगीता देवी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि लड़कियों को मानसिक रूप से प्रताड़ित करने का सबसे आसान तरीका मोबाइल हो गया है। जिससे हमें सचेत रहने की जरूरत है ।सोशल मीडिया के माध्यम से लड़कियों तथा महिलाओं को सबसे ज्यादा हिंसा का शिकार होना पड़ रहा है । इस संबंध में गांव या जमीनी स्तर पर महिलाओं एवं लड़कियों को प्रशिक्षित करने का कार्य सहयोगिनी के द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि कसमार प्रखंड के बगदा, दुगार्पुर, टांगटोना, तथा खैराचातर पंचायत के 19 गांव में इससे संबंधित जागरूकता का कार्य किया जा रहा है। सहयोगिनी की उत्प्रेरक रेखा देवी कहा कि साइबर हिंसा, महिलाओं के खिलाफ होने वाला एक गंभीर अपराध है. यह कई रूपों में होती है, जैसे कि साइबर उत्पीड़न, बदला लेने वाला पोर्न, बलात्कार की धमकियां,यौन उत्पीड़न, हत्या, साइबर बुलीइंग,साइबर स्टॉकिंग प्रमुख है। साइबर हिंसा में अपराधी साथी या पूर्व साथी, सहकर्मी, सहपाठी या अज्ञात व्यक्ति हो सकता है, जिससे हमें सावधान रहना है। साइबर हिंसा से निपटने के लिए, भारतीय दंड संहिता, 2000 का आई टी कानून और 2021 के आई टी रूल्स जैसे कानून हैं। साइबर क्राइम की शिकायत के लिए टोल फ्री नंबर 1930 पर कॉल किया जा सकता है। कार्यक्रम को सहयोगिनी किशोरी क्लब की खुशबू कुमारी, उर्मिला कुमारी, सोनिया कुमारी, पूजा कुमारी आदि उपस्थित थी।

संक्षिप्त खबरें

विनोद बिहारी महतो जनजातीय कन्या उच्च विद्यालय में शोक सभा का हुआ आयोजन

धनबाद : विनोद ज्ञान ज्योति ट्रस्ट राजगंज के सदस्य सामाजिक कार्यकर्ता सुकदेव प्रामाणिक का विगत दिनों आकस्मिक निधन हो जाने पर आज रविवार को शोक सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अगुवाई ट्रस्ट के संयोजक शंकर किशोर महतो ने की। कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉ निवास मेहता, इंद्र नारायण महतो, अयोध्या प्रसाद महतो, शिव शंकर शर्मा,प्रमोद चौरसिया, रामेश्वर महतो, जितेन्द्र नाथ महतो, हीरालाल महतो, महेन्द्र प्रसाद महतो, कौशल्या देवी, नुना राम महतो, प्रदीप दे, तारापद नापित, चुन्नीलाल अग्रवाल, राजीव रंजन महतो,कामेश्वर महतो सहित अन्य लोग शामिल थे।

महुदा थाना क्षेत्र के होटल में कोयला लदा वाहनों से कोयला का खेल जारी

धनबाद : धनबाद और बोकारो को जोड़ने वाली फोर लाइन सड़क में महुदा थाना क्षेत्र के अंतर्गत कांड्रा पंचायत के समीप कोयला लोड़ ट्रकों से होटल में कोयला सप्लाई करता है जिससे ड्राइवर खलासी का अपना खर्चा निकाल लेता है, जानकारों ने बताया कि रात दिन किसी भी वक्त ट्रक चालक ट्रक को खाना खाने के बहाने रोकते है,जिससे भोजन का खर्च के अलावे होटल वाले को बड़े पैमाने पर कोयला भे देते है जिसके तहत होटल वाले अपना चूल्हा के अलावे ईट भट्ठ वगैरह में कोयला को बड़े पैमाने पर बेच देते है जिससे रुपये मिलते है।

शॉर्ट सर्किट से लगी आग, लाखों की संपत्ति जलकर खाक

धनबाद : धैया राहरगोड़ा में बीती रात विभीषण विश्वकर्मा के घर में शॉर्ट सर्किट से आग लगने की वजह से लाखों की संपत्ति जलकर खाक हो गई। मकान मालिक विभीषण विश्वकर्मा ने बताया कि बीते रात लगभग 10:00 बजे के आसपास स्टोर रूम में आग शॉर्ट सर्किट् के कारण लगी । आग भयावह थी, पड़ोसियों की मदद से जैसे तैसे आग पर काबू पाया गया । इसके बाद रात्रि लगभग 1:00 बजे के आसपास बेटा आनंद विश्वकर्मा के कमरे से आग की लपटे बाहर आई तो देखा कि रूम पूरी तरह से जल रहा है जिसे आनन-फानन में बुझाया गया पर घर में टीवी, वाशिंग मशीन, पलंग, गद्दा, कपड़ों सहित जरूरी कागजात एवं लगभग 15000 रुपए कैश भी जल चुके थे । इस घटना की जानकारी पूर्व पार्षद पति कुमार कौशल जी को दी गई। साथ ही प्रशासन को भी फोन के माध्यम से सूचित किया गया । पीड़ित परिवार सरकारी सहायता की उम्मीद में है।

अंतर्राष्ट्रीय महाधिवेशन की सफलता पर किन्नरों ने गरीबों को वितरित किया भोजन, कपड़ा और राशि

धनबाद : गरीबों को भोजन कराने में हमें बहुत संतुष्टि मिलती है और जजमानों के घरों में खुशियां आए इसके लिए दुआ भी करवाती हूं। ये बात रविवार को अखिल भारतीय किन्नर समाज की प्रदेश अध्यक्ष छम छम देवी ने कही। किन्नरों का धनबाद में हुए अंतरराष्ट्रीय महाअधिवेशन की सफलता के बाद छम छम देवी के द्वारा अपने आवास जामाडोबा झरिया में कुष्ठ रोगियों ,विकलांगों और गरीबों को भोजन कराया और कपड़े और राशि का वितरण किया। उन्होंने कहा कि हमारे पूरे झारखंड के किन्नरों की ओर से समस्त धनबाद वासियों, जिला प्रशासन, मीडिया की महाअधिवेशन की अपार सफलता में अहम भूमिका निभाने के लिए किन्नर समाज हमेशा सभी सहयोगियों का आभारी रहेगा। मौके पर बंसी किन्नर,श्वेता किन्नर,निर्मला किन्नर, काजल किन्नर, राखी किन्नर आदि किन्नर मौजूद थे।

तेतुलमुड़ी ग्राम में एक शाम पुरखों के नाम कार्यक्रम का हुआ आयोजन

धनबाद : हाड़ी जाति विकास मंच धनबाद जिला अंतर्गत सिजुआ तेतुलमुड़ी ग्राम धनबाद में एक शाम पुरखों के नाम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप से हाड़ी जाति सुधार समिति धनबाद जिला अध्यक्ष राजू हाड़ी एवं विशिष्ट अतिथि के रूप ने हाड़ी जाति विकास मंच धनबाद जिला अध्यक्ष डब्लू हाड़ी उपस्थित हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ सभी पदाधिकारियों ने बाबा साहब के मानचित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित कर एवं माल्यार्पण कर किया । तत्पश्चात कार्यक्रम स्थल पर स्थित शहीद शक्ति नाथ महतो के प्रतिमा को माल्यार्पण कर एवं पुरखों को मौन रख कर किया । इस कार्यक्रम में विशेष रूप से परम पूजनीय शहीद शक्ति नाथ महतो जी के पत्नी श्रीमती साधो देवी उपस्थित हुए । उन्होंने भी शक्ति नाथ महतो को माल्यार्पण कर अपने पति को नम आंखों से याद किया । तत्पश्चात सिजुआ तेतुलमुड़ी ग्राम द्वारा आए हुए सभी अतिथियों को अंगवस्त्र माला एवं बुके साथ में प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया । साथ ही सिजुआ तेतुलमुड़ी ग्राम के शिक्षित होनहार, प्रतिभावान सभी बच्चों को सम्मानित किया गया । इस कार्यक्रम का उद्देश्य है कि हर नव वर्ष में समाज से पूर्वजों को याद किए जाते है । इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्रदेश सलाहकार संजय कुमार हरि, जिला कार्यकारी अध्यक्ष सुभाष हरि, सचिव बच्चन हरि, कोषाध्यक्ष मानिक चंद हरि, सुखदेव हाड़ी, राजेश हाड़ी, जगदीश हाड़ी, आनंद हाड़ी, सुरेश हाड़ी, प्रदीप हाड़ी, राजेश हाड़ी, विरु हाड़ी, तुलसी हाड़ी, विजय हाड़ी, राम स्वरूप हाड़ी, पुरन हाड़ी, प्रकाश हाड़ी प्रदेश युवा सचिव समेत कई समाज के लोग मौजूद थे।

एक नजर

सिविल सर्जन ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का किया निरीक्षण

साहिबगंज/बरहेट : रविवार को सिविल सर्जन डॉ प्रवीण कुमार संथालिया के द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरहेट में डीएमएफटी मद से आपूर्ति किए गए डिजिटल एक्स रे मशीन का अधिष्ठापन की प्रक्रिया का आकलन किए। एक्स रे मशीन की स्थापना के लिए निर्धारित कक्ष, विद्युत आपूर्ति, इलेक्ट्रिक बैकअप, तकनीशियन की प्रतिनियुक्ति, आवश्यक कनेक्शन, एक्स रे मशीन की सुरक्षित संचालन आदि को देखा गया। साथ ही ओपीडी, इमरजेंसी का नियमित रूप से संचालन, संस्थागत प्रसव, दवा एवं उपकरण, लैबोरेटरी, एमटीसी, स्वच्छता आदि का जायजा लिए।

बिजली करंट लगने से मिस्त्री बेहोश

साहिबगंज/कोटालपोखर : बरहरवा प्रखंड अंतर्गत कोटालपोखर के मधुवापाड़ा निवासी बिजली मिस्त्री साहजुल अली 35 वर्षीय करंट लगने से बेहोश हो गया। जानकारी के अनुसार मिस्त्री इंडक्शन चूल्हा मरम्मती कर रहा था, उसी दौरान उसे करंट लग गया। दरअसल मरम्मती के दौरान करंट लगने के बाद बिजली गुल होने के कारण वो सिर्फ मूर्छित हो गया नहीं तो उसका जान जा सकता था। जिसे इंडक्शन मरम्मती कराने आए व्यक्ति व मिस्त्री के परिजनों ने इलाज के लिए गुमानी अस्पताल ले गए। जहां उसका इलाज चल रहा है।

अज्ञात चोरों ने कई दुकानों से लाखों रुपये और सामानों की चोरी की

साहिबगंज : जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र अंतर्गत मदनशाही में शनिवार की रात्री चोरों ने भीषण चोरी की। चोरों ने एक सरकारी शराब की दुकान, एक कपड़े की दुकान, एक किराना की दुकान में लाखों के समान व नगद रुपए उड़ा लिए। वहीं कई दुकान में चोरी का असफल प्रयास भी किया। शराब दुकानदार सोनू कुमार ने बताया कि उन्हें टाइगर दुकानदार से सूचना मिली कि दुकान का ताला टूटा हुआ है। दुकान से कैश लगभग 2.75 लाख रुपए और शराब की कई बोतल गायब मिली हैं। कपड़ा दुकानदार अभिषेक दास ने बताया कि लगभग लाखों रुपए के कपड़ो व नगद 9 हजार रुपए की चोरी हुई है। दुकान के पीछे से चोर दुकान के अंदर घुसे थे। पीछे की खिड़की व छत का दरवाजा टूटा हुआ मिला है। चंदन कुमार दास ने बताया कि उनके किराने की दुकान से नगद 5 हजार व लगभग 2 हजार का समान चोरी हुआ है। चोर छत से अंदर घुसे थे। इधर चोरों ने शंकर वर्मा के आभूषण की दुकान में भी चोरी करने का असफल प्रयास किया। इधर पुलिस ने घटना स्थल पर पहुंचकर मामले की जांच पड़ताल की।

बोरियो प्रखंड में 16 मार्च से होगा गायत्री महायज्ञ

साहिबगंज/बोरियो : अखिल विश्व गायत्री परिवार शाखा बोरियों के तत्वाधान में आगामी 16 मार्च से 19 मार्च तक चौबीस कुण्डीय शक्ति संबंधन गायत्री महायज्ञ सह विराट पुस्तक मेला का आयोजन बोरियो छोटा पुल प्रज्ञापीठ में होगा। गायत्री शक्तिपीठ की सविता कुमारी ने बताया कि 16 मार्च को कलश शोभा यात्रा, 17 मार्च को देव पूजन एवं गायत्री महायज्ञ, 18 मार्च को गायत्री महायज्ञ एवं विभिन्न संस्कार एवं 19 मार्च को यज्ञ की पूणार्हुती एवं टोली विदाई होगी। गायत्री महायज्ञ में हरिद्वार के पुरोहित आएंगे।

साहेबगंज में पोक्सो एक्ट पर एक दिवसीय कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : झालसा, रांची के निर्देश पर और प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश- सह- अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार, साहेबगंज अखिल कुमार के मार्गदर्शन में पॉक्सो एक्ट के तहत विभिन्न स्टेकहोल्डर्स के बीच कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन संयुक्त रूप से प्रधान न्यायाधीश, कुटुंब न्यायालय, साहेबगंज संजय कुमार उपाध्याय, जिला जज सह अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश प्रथम धीरज कुमार, जिला जज सह अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश द्वितीय सह विशेष न्यायाधीश पोस्को कोर्ट बीरेंद्र कुमार श्रीवास्तव, जिला जज सह अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश तृतीय शेखर कुमार, जिला लोक अभियोजक आनंद चौबे, जिला अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष प्रेम नाथ तिवारी, पुलिस उपाधीक्षक विजय कुशवाहा ने दिप प्रज्ज्वलित कर किया। कार्यक्रम मे पॉक्सो एक्ट यानि प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम सेक्सुअल ऑफन्स एक्ट को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। पॉक्सो अधिनियम को भारत सरकार के महिला और बाल विकास मंत्रालय द्वारा वर्ष 2012 मे अधिनियमित किया गया था, जिसके अंतर्गत बाल यौन शोषण, यौन उत्पीड़न एवं पॉनोग्राफी के विरुद्ध कार्रवाई के लिये कड़े प्रावधान किये गये है, इसके उल्लंघन से जेल के साथ जुमार्ने का भी प्रावधान है। कार्यक्रम मे पीड़िता को न्याय दिलाने के लिये किस तरह केस को फ्रेम करना है उसे बारीकी से बताया गया, साथ ही पीड़िता को मुआवजा दिलाने की दिशा मे कार्रवाई करने की बात को बताया गया। जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव विश्वनाथ भगत ने कहा कि लोगों को जागरूक करने के लिए इस तरह के कार्यक्रम होते रहते है और किसी भी समस्या के लिए प्राधिकार कार्यालय में या नालसा हेल्प लाइन 15100 पर सम्पर्क कर सकते हैं। कार्यक्रम में न्यायिक पदाधिकारी के साथ, मेडिकल ऑफिसर, एलडीसी के चीफ अरविन्द गोयल, जिले के पुलिस पदाधिकारी और सहिया, छात्राएं उपस्थित थी।

निसात आलम क्षेत्र भ्रमण कर जनता को किया आभार व्यक्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरहरवा : रविवार को निसात आलम ने बरहरवा प्रखंड के रामनगर तथा कालू पंचायत के थोप ग्राम, कन्हाईडांगा, रामनगर, सपेरिया पाड़ा आदि गांव का दौरा कर ग्रामीणों से रुबरु होकर ग्रामीणों का आभार व्यक्त किया। कहा की पाकुड़ विधानसभा से चुनाव में हमे प्रचंड वोट से जीत दिलाने में आपकी बहुत बड़ी भागीदारी है यहां तक कि आपने झारखंड में सबसे ज्यादा वोटो से जीता कर इतिहास रचने का काम किया है। जिसके लिए हम आपको तहे दिल से धन्यवाद करते है और आपने जो प्यार, स्नेह, समर्थन, विश्वास जताने का काम किया है उसके लिए हम आपके सुख दुःख में हमेशा आपके साथ खड़ा रहूंगी। हमारे पूर्व मंत्री आलमगीर आलम जब भी रांची से अपने आवास आते थे तो क्षेत्र का भ्रमण करते थे और लोगों की समस्या से रूबरू होते थे मैं भी उन्हीं के अधूरे सपने को पूरे करने के लिए जब भी आवास आती हूं तो किसी न किसी क्षेत्र में आप लोग का स्नेह प्यार सुख-दुख बांटने आपके समक्ष चली आती हूं। मौके पर जिला अध्यक्ष सह विधायक प्रतिनिधि बरकत खान, प्रखंड अध्यक्ष रंजीत टुडू, कार्यकारी प्रखण्ड 20 सूत्री अध्यक्ष अशोक कुमार दास, अनारुल खान, मुखिया प्रोमॉय मरांडी, छोटेलाल रामानी, दाऊद शेख, तैयब शेख, सोम हंसदा, मोकिम, रफीक, सिद्दिक, रियासत, अफजल, इंताज शेख, गियासुद्दीन शेख, सहित सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित थे।

जिले में चौकीदार एवं स्वास्थ्य विभाग नियुक्ति परीक्षा शांतिपूर्ण संपन्न

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिला स्तरीय चौकीदार नियुक्ति परीक्षा के लिए कुल 17 परीक्षा केंद्र बनाए गए, जबकि एनएचएम नियुक्ति परीक्षा के लिए एकमात्र केंद्र संत जेवियर स्कूल हिंदी माध्यम निर्धारित किया गया। जिला स्तरीय एनएचएम नियुक्ति परीक्षा केंद्र संत जेवियर स्कूल हिंदी माध्यम में सफलतापूर्वक आयोजित की गई। परीक्षा में कुल 491 अभ्यर्थियों को शामिल होना था, जिसमें से 375 अभ्यर्थियों ने परीक्षा दी, जबकि 116 अनुपस्थित रहे। जिला स्तरीय चौकीदार नियुक्ति परीक्षा केंद्र रेलवे उच्च विद्यालय में शांतिपूर्ण और पारदर्शी तरीके से संपन्न हुई। परीक्षा में कुल 364 अभ्यर्थियों को शामिल होना था, जिनमें से 327 अभ्यर्थियों ने उपस्थिति दर्ज कराई, जबकि 37 अनुपस्थित रहे। परीक्षा केंद्र केन्द्रीय विद्यालय में परीक्षा में कुल 164 अभ्यर्थियों को शामिल होना था, जिनमें से 149 अभ्यर्थियों ने उपस्थिति दर्ज कराई, जबकि 15 अनुपस्थित रहे। परीक्षा केंद्र मुख्यमंत्री उत्कृष्ट बाङ्ग विद्यालय पोखरिया में परीक्षा में कुल 364 अभ्यर्थियों को शामिल होना था, जिनमें से 344 अभ्यर्थियों ने उपस्थिति दर्ज कराई, जबकि 20 अनुपस्थित रहे। परीक्षा केंद्र उत्क्रमित कन्या उच्च विद्यालय में परीक्षा में कुल 214 अभ्यर्थियों को शामिल होना था, जिनमें से 190 अभ्यर्थियों ने उपस्थिति दर्ज कराई, जबकि 24 अनुपस्थित रहे। परीक्षा केंद्र जवाहर नवोदय विद्यालय में परीक्षा में कुल 284 अभ्यर्थियों को शामिल होना था, जिनमें से 261 अभ्यर्थियों ने उपस्थिति दर्ज कराई, जबकि 23 अनुपस्थित रहे। परीक्षा केंद्र संध्या इंटर महाविद्यालय में परीक्षा में कुल 464 अभ्यर्थियों को शामिल होना था, जिनमें से 422 अभ्यर्थियों ने उपस्थिति दर्ज कराई, जबकि 42 अनुपस्थित रहे।

फुटबॉल के जादूगर कांशीनाथ महतो मेला का कल होगा आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिल्ली : सिल्ली फुटबॉल खेल के जादूगर कहे जाने वाले एजी बिहार रांची के प्रसिद्ध फुटबॉल खिलाड़ी स्वर्गीय काशीनाथ महतो की स्मृति में लगने वाले भेलवा टुंगरी टुसू मेला का आयोजन प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 21 जनवरी को किया गया है जिसमें फुटबॉल खेल, क्रिकेट खेल ,महिला पता नाच टुसू दर्शनी और मुर्गा लड़ाई का भी आयोजन किया गया है । स्वर्गीय काशीनाथ महतो अपने जमाने के जाने-माने फुटबॉल खिलाड़ी थे। लेंगहातु फुटबॉल क्लब के नाम से उन्होंने फुटबॉल टीम की स्थापना की थी जिसका वह कप्तान थे। एलएफसी की जर्सी में वे 10 नंबर की जर्सी पहनते थे। स्वर्गीय काशीनाथ महतो को उनकी खेल की जादू देखने के लिए काफी बड़ा भीड़ जमा हो जाता था। उनके साथ खेलने वालों में मधुसूदन महतो, रामनाथ महतो, भंदु उरांव, नीताई उरांव ,श्री दाम महतो, सूंची राम महतो, बनमाली महतो, भृगु राम उरांव, फूलचंद उरांव, हरेंद्र उरांव ,राजेंद्र महतो, रविंद्र महतो, समरा महतो, हराधना महली ,रोहिना महतो, बुधराम कर्मकार ,अनूप साहू ,जोगेंद्र महतो , रंजीत महतो, रंजीत मिंज राजेंद्र उरांव जैसे खिलाड़ी लेंगहातु फुटबॉल क्लब टीम से खेला करते थे । स्वर्गीय काशीनाथ महतो के निधन से फुटबॉल खेल को बड़ा झटका लगा, लोगों ने उसकी स्मृति में भेलवा टुंगरी लेंगहातु में मेला का आयोजन कर उनको श्रद्धांजलि देते हैं तथा मेला कमेटी की ओर से उनके साथ फुटबॉल खेलने वाले लोगों को काशीनाथ महतो के परिवार के सदस्यों द्वारा सम्मानित किया जाता है । मेला में श्रद्धांजलि देने के लिए काशीनाथ महतो का पूरा परिवार उपस्थित रहता है मेला के आयोजन में मधुसूदन महतो लक्ष्मण महतो विशाल महतो विकास महतो सुभाष महतो महतो मनोहर महतो फारूक मोमीन चांद हुसैन धनेश्वर बेदिया बंशीधर उरांव जीतू महतो जितेंद्र महतो हराधना महतो कैलाश महतो शिशुपाल महतो दिलीप मिंज आदि लोगों का बड़ा योगदान है।

दोवाडु गांव में विभिन्न घरों में चोरी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिल्ली : सिल्ली थाना अंतर्गत दोवाडु गांव में बीते रात शनिवार को चोरों ने आठ घरों का ताला तोड़ा जिसमें चार घरों में चोरी करने में सफल रहे। जानकारी के मुताबिक दोवाडु निवासी कामेश्वर उपाध्याय, लक्ष्मण उपाध्याय एवं अजीत उपाध्याय के घर में चोरों ने चोरी की। बताते चले कि कामेश्वर उपाध्याय के घर में ताला लगा था एवं शनिवार की रात चोरों ने ताला तोड़कर सोने का हार, मांग टीका, चांदी का आभूषण, कांसा की थाली, नगद 55 हजार रुपये साथ में जमीन के कागजात एवं एलआईसी का बॉन्ड पेपर भी चोरी कर ले गए। भुक्तभोगियों द्वारा सिल्ली थाने में लिखित आवेदन दिया गया जिसके आलोक में पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर मामले को लेकर छानबीन में जुट गई है।

कल्पना स्टूडियो मालिक हत्याकांड का पुलिस ने किया खुलासा, बेटे ने दी थी सुपारी, तीन आरोपी गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चांडिल : थाना क्षेत्र के कल्पना स्टूडियो मालिक दिलीप गोराई की हत्या के मामले में पुलिस ने बड़ा खुलासा किया है। जांच में पता चला कि दिलीप गोराई की हत्या की साजिश उनके छोटे बेटे राकेश गोराई ने रची थी। राकेश ने 65,000 रुपये की सुपारी देकर हत्या करवाने की साजिश रची। पुलिस की जांच में खुलासा हुआ कि राकेश गोराई ने अपने रिश्ते के भांजे सुमित सोलंकी को 65,000 रुपये देकर अपने पिता की हत्या की योजना बनाई। सुमित ने अपने सहयोगी कैलाश कर्मकार के साथ मिलकर 13 जनवरी 2025 को चांडिल के कल्पना स्टूडियो में घुसकर दिलीप गोराई को गोली मार दी। घायल दिलीप गोराई को इलाज के लिए टाटा मेन हॉस्पिटल (टीएमएच) ले जाया गया, जहां उनकी मौत हो गई। पुलिस ने तकनीकी और मानवीय खुफिया जानकारी के आधार पर हत्या में शामिल तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने राकेश गोराई (30 वर्ष), मृतक दिलीप गोराई का छोटा बेटा, सुमित सोलंकी (19 वर्ष), सुपारी किलर और कैलाश कर्मकार (19 वर्ष), सुमित के सहयोगी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। घटना में प्रयुक्त हीरो स्प्लेंडर प्लस बाइक काली रंग, नंबर जेएच05बीपी-5975 तथा घटना के दौरान अभियुक्तों द्वारा पहने गए कपड़े बरामद किये गए है।पुलिस ने बताया कि घटना में प्रयुक्त पिस्तौल की बरामदगी और अन्य सहयोगियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी जारी है। इस मामले का खुलासा अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अरविंद कुमार सिन्हा के नेतृत्व में गठित विशेष टीम ने किया। छापेमारी और जांच में कई थाना प्रभारियों ने सहयोग किया। पुलिस टीम में अरविंद कुमार सिन्हा, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी चांडिल, अजय कुमार, पुलिस निरीक्षक, चांडिल, दिलसन बिरुवा, थाना प्रभारी, चांडिल, संतन कुमार तिवारी, थाना प्रभारी, नीमडीह, बजरंग कुमार महतो, थाना प्रभारी, चौका, विक्रमादित्य पांडेय, थाना प्रभारी, ईचागढ़, आलम चांद महतो, थाना प्रभारी, तिरुलडीह, असलम अंसारी, कपाली ओपी, सुमित तिर्की, कपाली ओपी, अमित कुमार, चांडिल थाना और सहुल कुमार भारती, चांडिल थाना शामिल थे।

संक्षिप्त खबरें

राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के अंतर्गत चलाया गया जागरूकता कार्यक्रम

साहिबगंज: राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह 2025 के उपलक्ष में सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम के तहत आज साहिबगंज जिले के प्रमुख स्थान में साइकिल चालकों के बीच सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम किया गया जिसमें साइकिल चालकों को सड़क सुरक्षा से संबंधित जानकारी दी गई। राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह 2025 के कार्यक्रम के तहत आज साहिबगंज जिले के प्रमुख स्थान रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन में साइकिल चालक जागरूकता कार्यक्रम किया गया। जिसमें साइकिल चालकों को सड़क सुरक्षा से संबंधित जानकारी दी गई एवं सड़क पर साइकिल से यातायात करते वक्त यातायात नियमों का पालन करने को कहा गया। सभी साइकिल चालकों को रिफ्लेक्टिव टैप परावर्तक पट्टी का उपयोग के बारे में बताया गया जिसे साइकिल के आगे पीछे लगाना अति आवश्यक है जिससे रात्रि अंधेरे एवं कोहरे में यातायात करते वक्त साइकिल दूसरे वाहन को नजर में आ जाए। साथ ही सड़क सुरक्षा पर आधारित नुक्कड़ नाटक का आयोजन साहिबगंज स्थित हाट बाजार में किया गया जिसका उद्देश्य ग्रामीण वासियों के बीच सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक किया जाए। जिला परिवहन पदाधिकारी द्वारा बताया गया कि नेक नागरिक बनकर सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति की मदद बिना किसी संकोच या बिना किसी भय के करें क्योंकि नेक नागरिक गुड समेरिटर्न पॉलिसी के अंतर्गत सरकार द्वारा घायल व्यक्ति को मदद पहुंचाने पर ?2000 के पुरस्कृत राशि एवं प्रशस्ति पत्र दिया जाएगा। सड़क सुरक्षा पंपलेट, बुकलेट आदि वितरण किया जा रहा है एवं सभी आम जनमानस को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक एवं ट्रैफिक नियम के बारे में जानकारी दिया जा रहा। सड़क सुरक्षा माह 2025 का कार्यक्रम सिर्फ आंकड़ों को कम करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोगों को जीवन के प्रति अधिक जिम्मेदार बनने का संदेश देता है। इस मौके पर जिला सड़क सुरक्षा प्रबंधक नीरज कुमार साह, रोड इंजीनियर एनालिस्ट अनुज पराशर, आईटी सहायक राजहंस एवं अन्य कर्मी मौजूद रहे।

इंटर कला के टॉप टेन हासिल करने वाले छात्र की पढ़ाई में आर्थिक स्थिति बन रही बाधा

पटमदा: बोड़ाम प्रखंड के भुला पंचायत अंतर्गत जामबनी गांव के टॉपर छात्र मनोज कुमार महतो जो वर्तमान में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से अंग्रेजी ऑनर्स में स्नातक की पढ़ाई कर रहे हैं। उनके पढ़ाई का सत्र 2023-26 है। अब तक तीन सेमेस्टर की पढ़ाई पूरी कर चुके है लेकिन अंतिम तीन सेमेस्टर की पढ़ाई बाकी है। उनके पढ़ाई में प्रत्येक माह 3500 रुपया का खर्चा आता है। मनोज के पढ़ाई का खर्चा उनके पिता सुधीर चंद्र महतो गम्हरिया में एक फाइबर फैक्ट्री में कार्य करके पूर्ण करते थे। 8 जनवरी को गम्हरिया के एक तालाब में नहाने के क्रम में उनके पिता घाट में फिसल कर गिर जाने से बांया पैर अचल होने से पक्षाघात के शिकार हो गए। मनोज के घर में उनके पिता के अलावा उनकी माता और बड़ी बहन हैं ।उनके पिता के अलावा घर में कमाने वाला कोई नहीं है। उनके पिता के पक्षाघात हो जाने से उनके पढ़ाई में आर्थिक संकट उत्पन्न हो गई है और उनको स्नातक की पढ़ाई छूट जाने का डर सता रहा है। मनोज ने बताया कि अभी आगे की पढ़ाई पूरी करने में लगभग अस्सी हजार रुपया का खर्चा होगा। मनोज कुमार महतो एक मेधावी छात्र है उन्होंने वर्ष 2020 में मैट्रिक में 459 अंक लाकर विद्यालय टॉपर, वर्ष 2022 में इंटर परीक्षा में 442 अंक लाकर जिला में तीसरा और पुरे कोल्हान में छठा स्थान प्राप्त किया था। उन्होंने सीयूईटी परीक्षा में अच्छा रैंक लाकर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में नामांकन लेकर अंग्रेजी ऑनर्स से स्नातक की पढ़ाई कर रहे हैं। उनकी माता गायत्री महतो ने कहा कि मनोज के पिता के पक्षाघात हो जाने से मनोज के पढ़ाई में आर्थिक उत्पन्न हो गया है।

गंगा में डूबी नाव, साहिबगंज जिला के एक ही परिवार से डूबे कई लोग

साहिबगंज: बिहार के कटिहार जिला के अमदाबाद प्रखंड के हरदेव टोला के निकट रविवार की सुबह 8:30 बजे गंगा में नाव डूब गई। जिसमें सवार एक ही परिवार के आधा दर्जन लोग व अन्य यात्री डूब गए। बताया जाता है कि घटना के बाद स्थानीय लोगों ने 4 लोगों को बाहर निकाल अस्पताल पहुंचाया। जिसमें इलाज के दौरान 1 की मौत हो गई। वहीं दर्जनों भर लोगों का अभी तक कुछ पता नहीं चला है। मिली जानकारी के अनुसार साहिबगंज जिला के तालझारी थाना अंतर्गत सकरीगली, बांसकोला के वार्ड नंबर 4 निवासी चमेली देवी पति स्वर्गीय जगन मंडल की शनिवार की दोपहर लगभग 3 बजे मौत हो गई थी। इसकी सूचना पर चमेली के पुत्र दिलीप मंडल, चमेली देवी के भाई सुदाम मंडल, किशन मंडल, भगना मनोज मंडल, चमेली देवी के दामाद पवन मंडल, दिलीप मंडल के जीजा सूजन मंडल, विजय मंडल, बहन झूमा देवी व 3 वर्षीय बालक सहित अन्य यात्री छोटी नाव से साहिबगंज, बांसकोला आ रहे थे। तभी हादसे के शिकार हो गए। इधर परिजनों के लंबे इंतजार के बाद चमेली देवी का शव बांसकोला गंगा घाट के निकट अंतिम संस्कार के लिए ले जाया जा रहा था। तभी हादसे की सूचना मिलते ही परिजनों में चीख-पुकार मच गई। दिलीप मंडल की पत्नी सुमित्रा देवी व चमेली की पुत्री उमा मंडल सहित परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है।

क्रिकेट लीग कम नॉक आउट टूर्नामेंट में नेताजी क्रिकेट क्लब ने 156 रनों से की जीत दर्ज

साहिबगंज: जिला क्रिकेट संघ के तत्वाधान में सिदो-कान्हू स्टेडियम में चल रहे सीनियर क्रिकेट लीग टूनार्मेंट में रविवार को सीएबी रेड, बरहरवा बनाम नेताजी क्रिकेट क्लब के बीच मैच खेला गया। नेताजी क्रिकेट क्लब ने टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करते हुए 30 ओवर में 9 विकेट के नुकसान ओर 257 रन बनाया। चंदन ने 10, अनुज ने 51, मिस्टर एनर्जी ने 16, पीयूशम ने 25, अनिकेश ने 36, संजीव ने 38, जयंत ने 12 व बिष्णु ने 42 रन बनाए। सीएबी रेड बरहरवा के गेंदबाज पीयूष गुप्ता ने 4, शुभम ने 3, अमूल व जुनैद ने 1-1 विकेट लिया। जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी सीएबी रेड, बरहरवा की टीम 18.5 ओवर में 101 रन बना कर ऑल आउट हो गई। पीयूष गुप्ता ने 11, अमूल व वसीम ने 33-33 रनों की पारी खेली। नेताजी क्रिकेट क्लब के गेंदबाज मिस्टर एनर्जी ने 4, अनुज ने 2, गौरव व संजीव ने 1-1 विकेट लिए। नेताजी क्रिकेट क्लब ने 156 रनों से जीत हासिल की। नेताजी क्लब के खिलाड़ी मिस्टर एनर्जी को मैन ऑफ दी मैच घोषित किया गया। मुख्यातिथि डॉ सुरेंद्र नाथ तिवारी ने मिस्टर एनर्जी को मैन ऑफ दी मैच की ट्रॉफी से पुरस्कृत किया।

आम आदमी पार्टी तो अपना रिपोर्ट कार्ड पेश नहीं करेगी...!

नीरज कुमार दुबे

दिल्ली के मतदाताओं पर देश की नजर इसलिए भी है क्योंकि नवीनतम सांख्यिकीय पुस्तिका दशार्ती है कि साल 2023-24 में दिल्ली की प्रति व्यक्ति आय 4, 61, 910 रुपये थी जो देश में गोवा और सिक्किम के बाद तीसरी सबसे अधिक है। यानि शहर की प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय स्तर की प्रति व्यक्ति आय 1, 84, 205 रुपये से दोगुनी से भी अधिक थी।

दिल्ली विधानसभा चुनावों को एक बार फिर जीतने के लिए आम आदमी पार्टी पूरा जोर लगा रही है। आम आदमी पार्टी वोट मांगने के दौरान अपनी मुफ्त की रेवड़ियों के बारे में तो जनता को बता ही रही है साथ ही वह संविधान और लोकतंत्र की दुहाई भी दे रही है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि आम आदमी पार्टी की सरकार की ओर से दी गयी मुफ्त की सौगातें बड़ा छलावा साबित हुई हैं और लोकतंत्र तथा संविधान की मयार्दा का भी इस पार्टी की सरकार ने बिल्कुल ध्यान नहीं रखा।

आप देख रहे होंगे कि आजकल अरविंद केजरीवाल रोज प्रेस के सामने आकर बड़ी बड़ी बातें कर रहे हैं लेकिन आंकड़े बता रहे हैं कि पिछले पांच सालों में इन्होंने कुछ काम नहीं किया और सारा वक्त प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा से लड़ने में बर्बाद कर दिया। जिस विधानसभा को दिल्ली के लोगों की समस्याओं का हल निकालना था उसको आम आदमी पार्टी ने मोदी सरकार के खिलाफ प्रस्ताव पास करने का मंच बनाकर रख दिया। दिल्ली विधानसभा को किस तरह आम आदमी पार्टी ने अपने राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति का मंच बना कर रखा इसे आप इसी से समझ सकते हैं कि निवर्तमान विधानसभा ने पूरे पांच साल में मात्र 74 दिन ही कार्य किया। पांच साल में 1825 दिन होते हैं मगर इनमें से काम हुआ मात्र 74 दिन।

हम आपको बता दें कि यह दिल्ली की विधानसभा के अब तक के सबसे कम कार्य दिवस का रिकॉर्ड है। इसके अलावा बड़ी-बड़ी बातें करने वाली आम आदमी पार्टी की सरकार ने पूरे पांच साल में मात्र 14 विधेयक पारित किये। यानि दिल्ली की विधानसभा ने अपने इतिहास में पांच साल में सबसे कम विधेयक पारित करने का रिकॉर्ड भी बनाया है। खास बात यह रही कि यह जो 14 विधेयक पारित हुए उनमें से पांच विधायकों के भत्ते, सुविधाएं और उन्हें मिलने वाली सैलरी से संबंधित थे। साथ ही दिल्ली के विधायकों के कामकाज का आकलन इसी से लगाया जा सकता है कि 2020 से 2025 तक विधायकों ने विधानसभा में सालाना आधार पर औसत 219 प्रश्न ही पूछे। इसके अलावा आम आदमी पार्टी के शासन में विधानसभा में जिस दिन भी कार्यवाही हुई वह औसतन मात्र तीन घंटे तक चली। इसके अलावा विधानसभा के 74 कार्य दिवसों में से मात्र नौ दिन ही प्रश्नकाल हुआ।

यही नहीं, आम आदमी पार्टी की सरकार ने कभी विधानसभा का सत्रावसान भी नहीं किया ताकि जब चाहें विधानसभा की बैठक बुला सकें और वहां से राजनीतिक बयानबाजी कर सकें। दरअसल विधानसभा का सत्रावसान होने पर सत्र को दोबारा आहूत करने के लिए उपराज्यपाल की अनुमति चाहिए होती है और उन्हें सदन की बैठक बुलाने का कारण भी बताना होता है। आम आदमी पार्टी को लगता था कि यदि उपराज्यपाल ने बैठक बुलाने की अनुमति नहीं दी तो कैसे अपने राजनीतिक हित सधेंगे इसलिए वह कभी सत्रावसान करते ही नहीं थे। यही नहीं, विधानसभा में सीएजी की जो रिपोर्टें प्रस्तुत की जानी थीं वह भी नहीं की गयीं।

जहां तक आम आदमी पार्टी की सरकार की ओर से बांटी जाने वाली मुफ्त रेवड़ियों की बात है तो उसकी सच्चाई यह है कि जनता को जितना दिया नहीं गया उतना हर योजना में घोटाला हो गया है। यह घोटाले भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीके के हैं। मसलन एक दारू की बोतल पर दूसरी बोतल फ्री दी गयी लेकिन शराब नीति के जरिये घोटाला करके दिल्ली के सरकारी खजाने को हजारों करोड़ रुपए का चूना लगा दिया गया। जनता को 200 यूनिट बिजली फ्री देने की बात की गयी लेकिन एक यूनिट फालतू होते ही भारी भरकम बिजली बिल भेजे गये। जनता को 700 लीटर पानी फ्री देने की बात हुई लेकिन लोगों के भारी भरकम पानी के बिल आये। खास बात यह रही कि पानी का बिल तो हर महीने आ गया लेकिन नल से जल हर रोज नहीं आया और जहां जहां नल से जल आया वह गंदा आया।

इसके अलावा प्रदूषण से निबटने की कोई स्थायी और प्रभावी योजना नहीं होने के चलते दिल्ली इतनी प्रदूषित हो गयी कि लोगों को तमाम तरह की स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हो गयी हैं। अक्सर बुजुर्गों को होने वाली सांस की बीमारी दिल्ली के बच्चों को भी हो गयी है। दिल्ली में पवित्र यमुना नदी को गंदा नाला बनने से रोकने में आम आदमी पार्टी की सरकार पूरी तरह विफल रही। दिल्ली में यमुना का जल इतना प्रदूषित है कि त्योहारों पर श्रद्धालु अगर पानी में चले जायें तो उन्हें चर्म रोग हो जाते हैं और इस पानी का शोधन करने में मशीनों के हाथ पांव फूल जाते हैं। यही नहीं, दिल्ली की सरकार अपने शिक्षा मॉडल का ढिंढोरा खूब पीटती है लेकिन अपने अब तक के कार्यकाल में वह एक भी नया स्कूल, एक भी नया कॉलेज या एक भी नया अस्पताल नहीं बना सकी है। दिल्ली में जल निकासी की व्यवस्था इतनी खराब है कि बारिश आने पर बेसमेंट में पानी भर जाने से छात्र डूब कर मर जाते हैं। यही नहीं, दिल्ली एमसीडी में आम आदमी पार्टी का शासन होने के बावजूद कूड़े के पहाड़ वहीं के वहीं हैं।

इसके अलावा, अरविंद केजरीवाल भले इस समय मंदिर मंदिर जाकर हिंदुओं को लुभाने के प्रयास कर रहे हैं लेकिन तथ्य यह है कि आम आदमी पार्टी के शासन के दौरान ही हिंदू दीवाली पर पटाखे नहीं चला पाये। वह बात भी गौर करने लायक है कि आम आदमी पार्टी महिलाओं को अभी 1000 रुपए मासिक देने और चुनाव बाद 2100 रुपए देने की बात कर रही है लेकिन सवाल उठता है कि महिलाओं की सुध उसे अपने शासन की शुरूआत या मध्य में क्यों नहीं आई थी? यही नहीं, एक दारू की बोतल पर दूसरी दारू की बोतल फ्री देकर आम आदमी पार्टी ने महिलाओं का ही सिरदर्द सबसे ज्यादा बढ़ाया था।

वैसे यहां सवाल आम आदमी पार्टी से ही नहीं है बल्कि दिल्ली के मतदाताओं से भी है। आम आदमी पार्टी के घोषणापत्र में किये गये फ्री के वादों को देखने की बजाय क्या किसी मतदाता ने इस सरकार का रिपोर्ट कार्ड देखा है। दिल्ली के मतदाताओं को यह जानकर हैरानी होगी कि अपने घोषणापत्र का प्रचार कर रही आम आदमी पार्टी की सरकार अपना रिपोर्ट कार्ड नहीं पेश कर रही है क्योंकि रिपोर्ट में दिखाने के लिए कुछ है ही नहीं।

दिल्ली के मतदाताओं पर देश की नजर इसलिए भी है क्योंकि नवीनतम सांख्यिकीय पुस्तिका दशार्ती है कि साल 2023-24 में दिल्ली की प्रति व्यक्ति आय 4, 61, 910 रुपये थी जो देश में गोवा और सिक्किम के बाद तीसरी सबसे अधिक है। यानि शहर की प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय स्तर की प्रति व्यक्ति आय 1, 84, 205 रुपये से दोगुनी से भी अधिक थी। इसके अलावा एक और आंकड़ा यह बताता है कि सबसे कम महंगाई दर के मामले में झारखंड के बाद दिल्ली का नंबर आता है। यानि दिल्ली में आमदनी ज्यादा है और महंगाई कम है इसलिए सवाल उठता है कि ऐसी स्थिति में भी सबको सब कुछ फ्री में क्यों चाहिए? देश की जनता देख रही है कि क्या दिल्ली का मतदाता अपने निजी फायदे पर ध्यान देने की बजाय इस बार अपने शहर के फायदे को देखेगा?

संपादकीय

युद्धविराम और शांति

दिल्ली विधानसभा चुनावों को एक बार फिर जीतने के लिए आम आदमी पार्टी पूरा जोर लगा रही है। आम आदमी पार्टी वोट मांगने के दौरान अपनी मुफ्त की रेवड़ियों के बारे में तो जनता को बता ही रही है साथ ही वह संविधान और लोकतंत्र की दुहाई भी दे रही है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि आम आदमी पार्टी की सरकार की ओर से दी गयी मुफ्त की सौगातें बड़ा छलावा साबित हुई हैं और लोकतंत्र तथा संविधान की मयार्दा का भी इस पार्टी की सरकार ने बिल्कुल ध्यान नहीं रखा। आप देख रहे होंगे कि आजकल अरविंद केजरीवाल रोज प्रेस के सामने आकर बड़ी बड़ी बातें कर रहे हैं लेकिन आंकड़े बता रहे हैं कि पिछले पांच सालों में इन्होंने कुछ काम नहीं किया और सारा वक्त प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा से लड़ने में बर्बाद कर दिया। जिस विधानसभा को दिल्ली के लोगों की समस्याओं का हल निकालना था उसको आम आदमी पार्टी ने मोदी सरकार के खिलाफ प्रस्ताव पास करने का मंच बनाकर रख दिया। दिल्ली विधानसभा को किस तरह आम आदमी पार्टी ने अपने राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति का मंच बना कर रखा इसे आप इसी से समझ सकते हैं कि निवर्तमान विधानसभा ने पूरे पांच साल में मात्र 74 दिन ही कार्य किया। पांच साल में 1825 दिन होते हैं मगर इनमें से काम हुआ मात्र 74 दिन। हम आपको बता दें कि यह दिल्ली की विधानसभा के अब तक के सबसे कम कार्य दिवस का रिकॉर्ड है। इसके अलावा बड़ी-बड़ी बातें करने वाली आम आदमी पार्टी की सरकार ने पूरे पांच साल में मात्र 14 विधेयक पारित किये। यानि दिल्ली की विधानसभा ने अपने इतिहास में पांच साल में सबसे कम विधेयक पारित करने का रिकॉर्ड भी बनाया है। खास बात यह रही कि यह जो 14 विधेयक पारित हुए उनमें से पांच विधायकों के भत्ते, सुविधाएं और उन्हें मिलने वाली सैलरी से संबंधित थे। साथ ही दिल्ली के विधायकों के कामकाज का आकलन इसी से लगाया जा सकता है कि 2020 से 2025 तक विधायकों ने विधानसभा में सालाना आधार पर औसत 219 प्रश्न ही पूछे। इसके अलावा आम आदमी पार्टी के शासन में विधानसभा में जिस दिन भी कार्यवाही हुई वह औसतन मात्र तीन घंटे तक चली। इसके अलावा विधानसभा के 74 कार्य दिवसों में से मात्र नौ दिन ही प्रश्नकाल हुआ। यही नहीं, आम आदमी पार्टी की सरकार ने कभी विधानसभा का सत्रावसान भी नहीं किया ताकि जब चाहें विधानसभा की बैठक बुला सकें और वहां से राजनीतिक बयानबाजी कर सकें। दरअसल विधानसभा का सत्रावसान होने पर सत्र को दोबारा आहूत करने के लिए उपराज्यपाल की अनुमति चाहिए होती है और उन्हें सदन की बैठक बुलाने का कारण भी बताना होता है। आम आदमी पार्टी को लगता था कि यदि उपराज्यपाल ने बैठक बुलाने की अनुमति नहीं दी तो कैसे अपने राजनीतिक हित सधेंगे इसलिए वह कभी सत्रावसान करते ही नहीं थे।

चिंतन-मनन

धर्मराज युधिष्ठिर ने निभाया था भ्रातृ धर्म

गहन वन से तृषार्त पाण्डव गुजर रहे थे। पानी की तलाश में वे इधर-उधर घूम ही रहे थे कि अकस्मात उन्हें एक सरोवर दिखाई दिया। भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव जल पीने के पूर्व ही मृत्यु का ग्रास बन गए। कारण यह था कि एक यक्ष ने उनसे प्रश्न किए थे, किंतु उन्होंने उस ओर ध्यान नहीं दिया और बिना जवाब दिए ही पानी पीने लगे। लेकिन वे यक्ष का कोपभाजन बने और उन्हें मृत्यु प्राप्त हुई।

इतने में युधिष्ठिर आए और पानी पीने की कोशिश करने लगे। उनसे भी यक्ष ने प्रश्न किए, जिनके युधिष्ठिर ने समुचित उत्तर दे दिए। तब यक्ष ने प्रसन्न होकर कहा, तुम जल पीने के अधिकारी हो। मेरी इच्छा है कि तुम्हारे चारों भ्राताओं में से किसी एक को जीवन दान दूं। बोलो, मैं किसे पुनर्जीवित करूं?

प्रश्न बड़ा ही विचित्र था और साथ ही कठिन भी, क्योंकि युधिष्ठिर को चारों भाई एक समान प्रिय थे, तथापि एक क्षण भी सोचे बिना वे बोले, यक्षश्रेष्ठ आप नकुल को ही जीवन दान दें। यक्ष हंस पड़ा और बोला, धर्मराज, कौरवों से युद्ध में भीम की गदा और अर्जुन का गांडीव बड़ा ही उपयोगी सिद्ध होगा। इन दो सगे भाइयों को छोड़कर नकुल का जीवन क्यों चाहते हो।

धर्मराज बोले, यक्षश्रेष्ठ हम पांचों भ्राता ही माताओं के स्नेह चिह्न हैं। माता पुंती के पुत्रों से मैं शेष हूं, किंतु माद्री मां के तो दोनों ही पुत्र मर चुके हैं। अतः यदि एक के ही जीवन का प्रश्न है, तो माद्री मां के नकुल का ही पुनर्जीवन इष्ट है। यक्ष ने सुना, तो भावविह्वल हो बोला, युधिष्ठिर तुम धर्मतत्व के ज्ञाता हो, मैं तो सिर्फ तुम्हारी परीक्षा ले रहा था कि तुम वास्तव में धर्म के अवतार हो या नहीं। अतएव मैं चारों भाईयों को जीवन देता हूं।

युद्ध विराम समझौते का ईमानदारी से पालन जरूरी

ललित गर्ग

यह शांतिपूर्ण विश्व संरचना के लिये सुखद ही है कि करीब डेढ़ वर्ष से जारी इस्राइल-हमास संघर्ष खत्म करने के लिये युद्धविराम पर सहमति बन गई है। लेकिन इस एवं ऐसे युद्धों ने ऐसे अनेक ज्वलंत प्रश्न खड़े किये हैं कि जब युद्ध की अन्तिम निष्पत्ति टेबल पर बैठकर समझौता करना ही है तो यह युद्ध के प्रारंभ में ही क्यों नहीं हो जाता? युद्ध भीषणतम तबाही, असंख्य लोगों की जनहानि एवं सर्वनाश का कारण बनता है तो ऐसी तबाही होने ही क्यों दी जाये? खेर देर आये दुरस्त आये, इजराइल और हमास ने बुधवार को युद्ध विराम समझौते के पहले मसौदे पर सहमति जताई, जो संघर्ष को समाप्त करने की दिशा में अब तक का सबसे बड़ा एवं अहम कदम है। अन्य बातों के अलावा, 60-दिवसीय युद्ध विराम प्रक्रिया में दोनों पक्षों के बंधकों को रिहा करना, सहायता बढ़ाना, नष्ट हो चुके फिलिस्तीन का पुनर्निर्माण करना और हमलों को रोकना शामिल होगा। डेढ़ साल से अधिक समय के युद्ध के बाद, युद्ध विराम फिलिस्तीन के लोगों तथा हमास द्वारा बंधक बनाए गए लोगों के लिए बहुत जरूरी राहत है। इसी तरह रूस एवं यूक्रेन के बीच लम्बे समय से चल रहा युद्ध भी समाप्त हो, यह शांतिपूर्ण उन्नत विश्व संरचना के लिये नितांत अपेक्षित है। क्योंकि ऐसे युद्धों से युद्धरत देश ही नहीं, समूची दुनिया पीड़ित, परेशान एवं प्रभावित होती है। इस तरह युद्धरत बने रहना खुद में एक असाधारण और अति-संवेदनशील मामला है, जो समूची दुनिया को विनाश एवं विध्वंस की ओर धकेलने देता है। ऐसे युद्धों में वैसे तो जीत किसी की भी नहीं होती, फिर भी इन युद्धों का होना विजेता एवं विजित दोनों ही राष्ट्रों को सदियों तक पीछे धकेल देता, इससे भौतिक हानि के अतिरिक्त मानवता के अपाहिज और विकलांग होने के साथ बड़ी जनहानि का भी बड़ा कारण बनता है।

इस्राइल-हमास में पिछले डेढ़ साल से चल रहे युद्ध के विराम को एक अहम कामयाबी माना जा रहा है। भले ही इस समझौते के लिये अमेरिका में सत्ता परिवर्तन के बीच संघर्ष समाप्ति का श्रेय लेने की होड़ हो, लेकिन गाजा के लोग जिस मानवीय त्रासदी से जूझ रहे थे, उन्हें जरूर इससे बड़ी राहत मिलेगी। संयुक्त राष्ट्र के तमाम प्रयासों व मध्यपूर्व के इस्लामिक देशों एवं भारत की बार-बार की गई पहल के बावजूद अब तक शांति वार्ता सिरे न चढ़ सकी थी। जिसकी कीमत करीब पचास हजार लोगों ने अपनी जान देकर चुकायी। इस युद्ध से गाजा के विभिन्न क्षेत्रों में जो तबाही हुई है, उससे उबरने में दशकों लग सकते हैं। निस्संदेह, इस्राइल व हमास के बीच युद्ध विराम पर सहमति होना महत्वपूर्ण है, लेकिन जब तक समझौता यथार्थ में लागू होता न नजर आए, तब कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी। संघर्ष में वास्तव में हमास के कितने लड़ाके मारे गए यह कहना कठिन है, लेकिन बड़ी संख्या में बच्चों-महिलाओं ने युद्ध में जान गवांई। एक अनुमान के अनुसार गाजा संघर्ष में उपजी मानवीय त्रासदी में करीब बीस लाख लोग विस्थापित हुए हैं। इस्राइली हमलों में अस्पताल-स्कूल भी निशाना बने, जिन्हें शरणार्थियों की सुरक्षित पनाहगाह माना जाता है। इस्राइल पर अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में युद्ध अपराध तक के आरोप लगाए गए। बहरहाल, जब लंबे समय के बाद शांति की स्थितियां बन रही हैं तो विश्व समुदाय, शक्तिशाली राष्ट्रों व संयुक्त राष्ट्र का दायित्व बनता है कि समझौते की शर्तों को साफ नियत एवं नीति से क्रियान्वित किया जाये। ताकि मध्यपूर्व में स्थायी शांति एवं अमनचैन की राह मजबूत हो सके। निश्चित रूप से युद्ध शांति का विकल्प नहीं हो सकता। इस संघर्ष की शुरूआत भले हमास ने की हो, लेकिन इसकी सबसे बड़ी कीमत उन लोगों ने चुकाई, जो इसके लिये जिम्मेदार नहीं थे।

युद्ध के आघात से युद्धरत देशों के साथ समूची दुनिया प्रभावित हुई है। युद्ध के आघात से तात्पर्य युद्ध के दौरान होने वाली दर्दनाक घटनाओं के परिणामस्वरूप व्यक्तियों द्वारा अनुभव किए जाने वाले मनोवैज्ञानिक संकट और शारीरिक-भावनात्मक पीड़ा से है, जैसे कि हिंसा का शिकार होना, दूसरों को नुकसान पहुंचाना, या संघर्ष के कारण प्रियजनों को खोना। युद्ध सामाजिक विश्वास को तोड़ता है, सामाजिक सामंजस्य को कम करता है और सामाजिक एवं राष्ट्रीय पूंजी को नुकसान पहुंचाता है। सशस्त्र संघर्ष के बाद, समाज उपसमूहों में गहराई से विभाजित हो जाता है जो युद्ध विराम के समझौते के बावजूद बाद के दौर में एक दूसरे से डरते हैं और नफरत करते हैं और लड़ाई जारी रखने के लिए तैयार रहते हैं। युद्ध के आघात से पीड़ित लोगों में अक्सर दूसरे पक्ष के साथ मेल-मिलाप करने और शांतिपूर्ण समाधान खोजने की इच्छा कम हो जाती है। कमजोर नागरिक समाज और कम सरकारी क्षमताएं लोगों को बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में असमर्थ बना सकती हैं और राज्य के बिगाड़ने वालों या राजनीतिक विरोधियों द्वारा आसानी से हेरफेर किया जा सकता है। यह स्थिति अक्सर हिंसा के निरंतर चक्रों के लिए मंच तैयार करती है।

हालांकि, अक्तूबर, 2023 में हमास के हमले से आहत इस्राइल कई मोर्चों पर लगातार युद्ध से थक चुका है, लेकिन अभी भी अरब जगत उसकी विश्वसनीयता पर सवाल उठा रहा है। ऐसी आशंका इसीलिए भी है कि कई बार बातचीत अंतिम दौर पर पहुंचते-पहुंचते पटरी से उतरती गई है। बात और घात लगातार चलते रहे हैं। अब भविष्य में देखना होगा कि दोनों पक्ष समझौते के अमल के प्रति कितनी ईमानदारी से प्रतिबद्ध नजर आते हैं। हालांकि, अपने बंधकों की जल्द रिहाई को लेकर इस्राइल के विपक्षी राजनीतिक दलों व मंत्रिमंडल में भी मतभेद उभर रहे हैं, लेकिन इतनी लंबी लड़ाई के बाद थक चुकी इस्राइली सेना को भी राहत देने की मांग की जाती रही है। बहरहाल, युद्ध विराम के प्रश्न पर इस्राइल व हमास के बीच सहमति से शांति की उम्मीदें प्रबल हुई हैं। जहां एक ओर अमेरिका में वर्तमान राष्ट्रपति जो बाइडेन व नव निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप समझौते के लिए श्रेय ले रहे हैं, वहीं ईरान इसे फलस्तीनी प्रतिरोध की जीत बता रहा है।

अभी गाजा में मानवीय सहायता पहुंचाने के मार्ग में आने वाली बाधाओं को भी दूर किया जाना है। दरअसल, सात अक्तूबर 2023 को हमास के क्रूर हमलों में इस्राइल के बारह सौ लोग मारे गए थे और करीब ढाई सौ लोगों को हमास के लड़ाके सौदेबाजी के लिये बंधक बनाकर ले गए थे। साफ था कि इस अपमानजक घटना का इस्राइल प्रतिशोध लेगा, लेकिन संघर्ष करीब डेढ़ वर्ष तक चलेगा, इसकी उम्मीद किसी को नहीं थी। हालांकि, कुछ इस्राइली बंधक रिहा किए गए, कुछ युद्ध के बीच मारे गए, लेकिन बचे बंधकों की रिहाई का भारी दबाव नेतन्याहू सरकार पर लगातार बना रहा। संघर्ष में वास्तव में हमास के कितने लड़ाके मारे गए यह कहना कठिन है, लेकिन बड़ी संख्या में बच्चों-महिलाओं ने युद्ध में जान गवांई। एक अनुमान के अनुसार गाजा संघर्ष में उपजी मानवीय त्रासदी में करीब बीस लाख लोग विस्थापित हुए हैं। इस्राइली हमलों में अस्पताल-स्कूल भी निशाना बने, जिन्हें शरणार्थियों की सुरक्षित पनाहगाह माना जाता है। इस्राइल पर अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में युद्ध अपराध तक के आरोप लगाए गए। निश्चित रूप से युद्ध शांति का विकल्प नहीं हो सकता। हालांकि, इस बात को लेकर शंकाएं व्यक्त की जा रही हैं कि इस समझौते से फिलस्तीनी संकट का स्थायी समाधान हो सकेगा। इस युद्ध मसले का हल कूटनीति और आपसी बातचीत से ही निकालने के प्रयास किये जाने की आवश्यकता भारत लगातार व्यक्त करता रहा है।

वैश्विकी : ट्रंप टीम को लेकर आशा और आशंका

डॉ. दिलीप चौबे

अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति का पद संभालने के ठीक पहले दुनिया में नई शक्ति समीकरण बन रहे हैं। जहां तक भारत और अमेरिका के संबंधों की बात है, खालिस्तानी आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नू प्रकरण का पटाक्षेप होने वाला है। निवर्तमान बाइडन प्रशासन ने पन्नू को लेकर भारत पर दबाव बनाने की कोशिश की थी जिसे विदेश मंत्रालय ने अपने कूटनीतिक कौशल और सूझबूझ से निपटाया। पन्नू प्रकरण में केंद्र सरकार ने जहां अपनी कुछ कमजोरियों को स्वीकार किया वहीं अमेरिका के निराधार आरोपों को खारिज कर दिया। देश की उच्चस्तरीय जांच समिति ने सरकारी एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय और उन पर नियंत्रण की बात स्वीकार की ताकि भविष्य में ऐसे मामलों को जल्दी से सुलझाया जा सके। यह स्पष्ट है कि आने वाले दिनों में ट्रंप प्रशासन पन्नू जैसे खालिस्तानी आतंकवादियों पर लगाम लगाएगा।

अमेरिका में इस बीच राष्ट्रपति ट्रंप की टीम के सहयोग सदस्यों का अनुमोदन करने के लिए सीनेट में सुनवाई

चल रही है। सीनेट में रिपब्लिकन पार्टी का मामूली बहुमत है। इस कारण यह आशंका व्यक्त की जा रही है कि ट्रंप टीम के कुछ सदस्यों को अनुमोदन हासिल करने में कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। सुनवाई के प्रारंभिक दौर से यह जाहिर हुआ कि मंत्री पद के जो उम्मीदवार नीतियों में निरंतरता कायम रखने के पक्ष में हैं उन्हें डेमोक्रेटिक पार्टी के सीनेटर का भी समर्थन हासिल होगा। वहीं जो मंत्री और अधिकारी बाइडन प्रशासन की नीतियों में बड़ा बदलाव चाहते हैं करना चाहते हैं उन्हें विरोध का सामना करना पड़ेगा। ट्रंप प्रशासन की ओर से नामांकित एटार्नी जनरल पाम बॉन्ड्री की सुनवाई के दौरान डेमोक्रेटिक सदस्यों ने उन्हें कठघरे में खड़ा करने की कोशिश की। उन्हें अगले चार वर्षों तक अमेरिका के विधि मंत्रालय (डिपार्टमेंट आफ जस्टिस) का कामकाज संभालना है। डेमोक्रेटिक सदस्यों को आशंका है कि बॉन्ड्री बाइडन प्रशासन के अधिकारियों और समर्थकों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई कर सकती हैं। बाइडन समर्थक और मुख्यधारा की मीडिया के लोग संघीय जांच ब्यूरो के प्रमुख के रूप में कश्यप पटेल (काश पटेल) को लेकर सबसे अधिक भयभीत हैं। काश पटेल को पाम बॉन्ड्री की देखरेख में काम करना है। यही कारण है कि सुनवाई के दौरान कई सदस्यों ने पाम बॉन्ड्री से जानना चाहा कि वह काश पटेल पर कैसे काबू रखेंगी। पटेल पूरी तरह ट्रंप के प्रति निष्ठावान हैं। उनके कामकाज की शैली और तेवर बहुत आक्रामक हैं। फिलहाल अनुमान है कि डेमोक्रेटिक सदस्यों के तीव्र विरोध के बावजूद उन्हें अनुमोदन हासिल हो जाएगा। सबसे अधिक दुविधा तुलसी गवार्ड को लेकर है। उन्हें अमेरिका की 17 खुफिया एजेंसियों पर निगरानी रखने वाले राष्ट्रीय खुफिया निदेशक (डीएनआई) के रूप में मनोनीत किया गया है। वास्तव में डीएनआई अमेरिकी राष्ट्रपति के लिए आंख और कान का काम करता है। तुलसी गवार्ड युद्ध विरोधी हैं तथा दूसरे देशों में सैनिक हस्तक्षेप करने के खिलाफ हैं। वह वैष्णव हैं और हरे कृष्ण संप्रदाय से जुड़ी हैं। स्वाभाविक है कि वह बांग्लादेश में हरे कृष्ण संप्रदाय के धार्मिक नेता चिन्मय प्रभु के उत्पीड़न और हिन्दू अल्पसंख्यकों पर अत्याचार को लेकर चिंतित होंगी। उनकी नियुक्ति भारत के लिए भी अनुकूल सिद्ध होगी।

अमेरिका में युद्ध समर्थक लॉबी हरसंभव कोशिश कर रही है कि तुलसी के नामांकन को सीनेट नामंजूर कर दे। रिपब्लिकन पार्टी के दो या तीन सदस्य यदि पाला बदलते हैं तो तुलसी की नियुक्ति खटाई में पड़ जाएगी। यह ट्रंप के लिए भी बड़ा झटका होगा। अमेरिका की राजनीति में इस्राइल समर्थक नेताओं का बोलबाला है। इन दिनों वहां आम चर्चा है कि ट्रंप प्रशासन के कार्यकाल में अमेरिका और इस्राइल मिलकर ईरान के परमाणु प्रतिष्ठानों पर हमला करेंगे। फिलिस्तीन में हमास और लेबनान में हिजबुल्ला की कमर तोड़ने के बाद इस्राइल ईरान को निशाना बनाना चाहता है। इसी खतरे का मुकाबला करने के लिए ईरान और रूस ने हाल में राजनीतिक सहयोग का समझौता किया है। राष्ट्रपति ट्रंप शांति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को प्राथमिकता देते हैं अथवा पश्चिम एशिया के दलदल में फंसने का जोखिम उठाते हैं इससे आने वाला अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम निर्धारित होगा।

एक नजर

सांसद कालीचरण सिंह मिसाल कायम कर रहे हैं जनप्रतिनिधियों के लिए

चतरा : चतरा सांसद कालीचरण सिंह ने आम जनता के लिए सबसे अधिक उपलब्ध रहने का रिकार्ड बनाया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, जैसे ही उन्हें किसी व्यक्ति के सिस्टम द्वारा परेशान किए जाने की सूचना प्राप्त होती है, उसे संबंधित अधिकारी से संपर्क कर हर संभव न्याय दिलाने का कार्य करना अपना कर्तव्य समझते हैं। ये संस्कार उनमें सांसद चुने जाने से पहले भी देखने को मिलती थी। मेरे जैसे हजारों लोग इसके गवाह हैं। लेकिन सांसद चुने जाने के बाद ये दायरा और बढ़ गया है। करीब 20 लाख की आबादी वाले चतरा संसदीय क्षेत्र में सांसद कालीचरण सिंह मसीहा के रूप में अपनी पहचान बनाने में कामयाब रहे हैं। सांसद कालीचरण सिंह जनप्रतिनिधियों के लिए मिसाल कायम कर रहे हैं। चतरा लोकसभा चुनाव के लिए मतदान 20 मई 2024 को हुआ और मतगणना 4 जून 2024 को हुई। महज छह माह में सांसद कालीचरण सिंह ने अपने कुशल नेतृत्व के कारण वर्ष 2024 के झारखंड विधानसभा चुनाव में जिले के दोनों विधानसभा क्षेत्रों चतरा और सिमरिया के साथ-साथ लातेहार और पांकी विधानसभा क्षेत्रों में भी भाजपा प्रत्याशी को जीत दिला दी है। वह भाजपा को मजबूत बनाने के लिए लगातार जनसंपर्क अभियान में लगे हुए हैं। वह बिना किसी भेदभाव के सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास के मंत्र के अनुसार काम कर रहे हैं। उनका मोबाइल फोन हर किसी के लिए उपलब्ध है। जनता की सेवा के प्रति 24 घंटे सजग रहने की जानकारी है। मशहूर और गैर मशहूर हर किसी के फोन कॉल रिसीव करना और उनकी समस्याओं का समाधान करना उनकी फितरत का हिस्सा है। अपने सीमित संसाधनों के बावजूद सांसद ऐसा जन-हितैषी माहौल बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

अपहरणकर्ता अमित ने बहन को पास कराने के लिए धनंजय को दिए थे दो लाख रुपये : एसपी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : रामगढ़ शहर के बाजारटांड़ में एक ठेकेदार धनंजय कुमार सिंह के अपहरण कांड पर एसपी अजय कुमार ने नया खुलासा किया है। रविवार को संवाददाता सम्मेलन में एसपी ने बताया कि अपहरणकर्ता अमित ने वर्ष 2017 में धनंजय कुमार को दो लाख रुपए दिए थे। इतनी मोटी रकम उसने अपनी बहन की परीक्षा पास कराने के लिए धनंजय को दिया था। क्योंकि धनंजय ने उसे शिक्षा विभाग में अच्छी पैठ होने की बात कही थी। जब उसकी बहन परीक्षा पास नहीं कर पाई, तब अमित ने धनंजय से दो लाख रुपए मांगना शुरू किया। पिछले आठ वर्षों में जब धनंजय ने उसे वह रुपए नहीं दिए, तब अमित ने अपहरणकर्ता और फिरौती मांगने की योजना बनाई। रामगढ़ शहर के बाजारटांड़

में कुलदीप साहू के घर में वह किराए पर रुका। यहां सांडी निवासी रवीश मुंडा के साथ मिलकर अपहरण की योजना बनाई। रवीश मुंडा कोयला का कारोबारी था। इसीलिए धनंजय को इन लोगों ने कारोबार का ही झांसा दिया। 18 जनवरी को जब धनंजय रामगढ़ पहुंचा तो रवीश और अमित ने उसे इस किराए के मकान में बंधक बनाकर रखा। इस दौरान उसकी कनपटी पर बंदूक तानी। पहले तो उसके मोबाइल से एक लाख रुपए ऑनलाइन ट्रांसफर करने की कोशिश की गई। लेकिन नहीं होने पर 50 हजार रुपए फोन पे के माध्यम से ट्रांसफर किया गया। साथ ही नगद चार हजार ही उन लोगों ने छीन लिए। इस दौरान धनंजय को नशे का इंजेक्शन भी दिया गया, ताकि कुछ दस्तावेज पर हस्ताक्षर कराया जाए। धनंजय कुमार को कमरे में बंद कर अमित और रवीश जब बाहर निकले तो किसी तरह धनंजय ने अपना हाथ रस्सी से बाहर निकाला। इसके बाद मुंह पर लगे टेप को हटाया और खिड़की से राह चलते लोगों से मदद मांगी। शोर सुनकर लोगों ने सूचना पुलिस को दी। पुलिस जब मौके पर पहुंची तो वह अपराधी घर के बाहर ही मौजूद था। रवीश और अमित को पुलिस ने मामले में गिरफ्तार किया है। अपराधियों के पास से पुलिस ने नाइन एमएम पिस्टल, छह जिंदा गोली, नशीला इंजेक्शन बरामद किया है।

संक्षिप्त खबरें

भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर की जयंती धूमधाम से मनायी गयी

पतरातू: रविवार को अखिल भारतीय नाई समाज समिति पतरातू के तत्व धान में भारत रत्न जननायक कपूर्री ठाकुर की जयंती हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी धूमधाम से मनाई जाएगी। जिसके लिए माननीय विधायक श्री रोशन लाल चौधरी बड़कागांव विधानसभा के आवासीय कार्यालय में नाई समाज पतरातू के सैकड़ो लोग मुलाकात किया। वही समिति के अध्यक्ष गणेश कुमार ठाकुर ने कहा की सर्व समिति से निर्णय लिया गया कि भारत रत्न जननायक कपूर्री ठाकुर जयंती सह वन भोज कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बड़कागांव विधानसभा के विधायक माननीय श्री रोशन लाल चौधरी एवं विशिष्ट अतिथि जिला पार्षद राजाराम प्रजापति भुनेश्वर ठाकुर दशरथ ठाकुर रामाश्रय ठाकुर लालचंद ठाकुर जिला सचिव एवं उद्घाटन करता प्रदेश अध्यक्ष राजू ठाकुर केरली पब्लिक स्कूल रांची के प्रोपराइटर रामेश्वर ठाकुर रामगढ़ जिला अध्यक्ष पूर्ण कांत ठाकुर होंगे। माननीय मुख्य अतिथि महोदय से मुलाकात कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित दशरथ ठाकुर ललन ठाकुर बसंत ठाकुर श्यामलाल ठाकुर आशीष ठाकुर परमेश्वर ठाकुर रामप्रसाद ठाकुर लालमोहन ठाकुर अमित ठाकुर पारकेश्वर ठाकुर के. डी. ठाकुर प्रकाश ठाकुर विजय ठाकुर संजय ठाकुर राज किशोर ठाकुर राजू ठाकुर अजय ठाकुर किशोरी ठाकुर अशोक ठाकुर बेगन ठाकुर इत्यादि।

श्री श्याम मंदिर में संकीर्तन का हुआ आयोजन

चतरा : रविवार को श्री श्याम मंदिर में विधिवत श्याम संकीर्तन का आयोजन किया गया। आज की जजमान श्री जयप्रकाश जी मित्तल नेगणेश पूजा के बाद ज्योति प्रज्वलन किया एवं श्री श्याम 84 के पाठ के बाद भजनों के गायन का सिलसिला शुरू हुआ। भजनों को आगे बढ़ते हुए। जो प्रेम गली में आए नहीं वह प्रेम निभाना क्या जाने कब आएगा मेरा सांवरिया, कीर्तन की है रात बाबा आज थाने आनो है, तेरे हाथों की लकीर बदलेगा, बाबा तेरा स्वागत है, के भजनों से भक्ति झूमने को मजबूर हो गए। आज के यजमान श्री जयप्रकाश मित्तल के तत्वावधान में आयोजित यह कार्यक्रम रात देर तक चलता रहा। भजनों की श्रृंखला को कमल बगड़िया, सांवरमल अग्रवाल, विष्णु शर्मा, पीयूष शर्मा,इंदर अग्रवाल, भारती बगड़िया , ध्रुव सिंह ,मनोज शर्मा एवं अन्य भक्तों ने मिलकर आगे बढ़ाया। यह कार्यक्रम प्राण प्रतिष्ठा के पूर्व विशेष रूप से आयोजित किया गया। आगामी 3 फरवरी से 7 फरवरी तक श्याम बाबा का भव्य प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर अनिल गोयल, राजेश पथरवा, ओम प्रकाश अग्रवाल, शंभू अग्रवाल, रमेश अग्रवाल, संजय चौधरी, राजेश पटवारी, नरेश अग्रवाल अभिषेक सिंघानिया, मनीष अग्रवाल, प्रकाश पटवारी, निखिल अग्रवाल, पिंकी अग्रवाल, मीना बगड़िया, अरुण बगड़िया, एवं म्यूजिक पर दिलीप सुधीर एवं दीपक उपस्थित थे।

पीयूभीएनएल से विस्थापितों को हक मिलने की उम्मीद

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : विस्थापित प्रभावित अधिकार समिति के सदस्यों को पीवीयूएनएल के नए अधिकारियों से उम्मीद की किरण जगी है। प्रबंधन के नए अधिकारियों ने विस्थापितों को भरोसा दिलाया है कि आने वाले कुछ ही दिनों में विस्थापितों के लिए रोजगार के अवसर सृजन किया जाएंगे और योग्यता के अनुसार काम पर विस्थापतों को रखा जाएगा, मगर कुछ अधिकारी और विस्थापित नाम के नेता प्रबंधन को बदनाम करने में लगे हैं । ताकि विस्थापितों का हक ना मिल सके ऐसा विस्थापित प्रभावित अधिकार समिति के सदस्यों का कहना है। इस कारण रविवार को पंचबहिनी मंदिर के प्रांगण में एक बैठक भी आयोजित की गई,इसकी अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष खुशबू देवी और संचालन

दयानंद प्रजापति ने किया। विस्थापित प्रभावित अधिकार समिति के अध्यक्ष खुशबू देवी ने कहा कि के प्रबंधक से बातचीत से विस्थापितों को हक मिलने की उम्मीद है, मगर कुछ अधिकारी और विस्थापित नेता ही विस्थापितों का कल्याण नहीं चाहते हैं। अध्यक्ष ने कहा कि कुछ अधिकारी और विस्थापित नेता प्रबंधन का दलाली कर रहे हैं , ताकि प्रबंधन को बदनाम किया जा सके और विस्थापन के नाम पर लंबे समय तक एक दुकान चलता रहे। पतरातू में विस्थापन के नाम पर कुछ लोगों की दुकानदारी चल रही है ।

सांसद ने उत्तर झारखंड संभाग स्तरीय खेल कूद प्रतियोगिता का किया उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चतरा : धरती के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में एकल अभियान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय उत्तर झारखंड संभाग स्तरीय खेल कूद प्रतियोगिता का विधिवत उद्घाटन मुख्य अतिथि चतरा लोकसभा सांसद कालीचरण सिंह, नन्दलाल केशरी, पंकज दुबे, विनय सांसद प्रतिनिधी पवन कु राय , विवेक सिंह , विकास केशरी, विनोद जैन, दुलाल ठाकुर आदि ने दीप प्रज्वलित एवं मां भारती के चित्र पर पुष्पांजलि कर किए। इस प्रतियोगिता में उत्तर झारखंड के 11 जिले से लगभग 600 खिलाड़ी भाग लेरहे है। अतिथियों का स्वागत दुमका एकल की टीम ने ढोल नगाड़े एवं पारंपरिक नृत्य के साथ बहनों द्वारा पुष्प वर्षण कर की। समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने एकल के अनुशासनात्मक और

सुव्यवस्थित टीम व्यवस्था एवं आयोजन को देख आयोजन समिति की भूरी भूरी प्रशंशा की और क्षेत्र की पावन धरती पर टीम को स्वागत करते हुए राष्ट्र सेवा के लिए उत्प्रेरित किया वही एकल के क्षेत्रीय संगठन मंत्री पवन कुमार राय ने कहा कि यह संस्था राष्ट्रीय गांधी शांति पुरस्कार प्राप्त संस्था है जो देश के वनवासी वी पिछड़े क्षेत्रों में देश में लगभग डेढ़ लाख विद्यालय का संचालन कर लोगों को पंचमुखी सिद्धांत पर काम करते हुए राष्ट्र निर्माण में अपनी महती भूमिका निभा रही है। महिलाओं की कबड्डी में चतरा और कोडरमा फाइनल में पहुंच गई है। समारोह मे सांसद प्रतिनिधि,विनय कुमार सिंह कुमार विवेक,मां भद्रकाली कॉलेज के प्राचार्य श्री दुलाल ठाकुर जी, बिनोद जैन जी, आयोजन को सफल बनाने में विकास कुमार केशरी सांसद प्रतिनिधि सचिन्द्र पासवान, भरत सिंह, मनोरमा कुमारी, एवम सैकड़ों कार्यकर्ता अपना योगदान दे रहे है।

उत्तर प्रदेश

योगी ने हेलिकॉप्टर से देखा पूरा महाकुंभ

गंगा में 108 डुबकी लगाई, जननांग की नस खींची, महाकुंभ में 24 घंटे तपस्या कर रहे

प्रयागराज। महाकुंभ का आज 7वां दिन है। उट योगी भी पहुंचे हैं। उन्होंने हेलिकॉप्टर से महाकुंभ मेला क्षेत्र का जायजा लिया। थोड़ी देर में अफसरों के साथ मीटिंग करेंगे। मंथन होगा कि 29 जनवरी को मौनी अमावस्या पर 8-10 करोड़ श्रद्धालु आए तो भीड़ कैसे संभालेंगे। 22 जनवरी को महाकुंभ में होने वाली कैबिनेट मीटिंग की तैयारियां, ढट मोदी और राष्ट्रपति के प्रस्तावित कार्यक्रम पर भी मंथन होगा। जूना अखाड़े के बाद अब निरंजनी अखाड़े में भी नागा संन्यासी बनने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। यहां 400 से ज्यादा संन्यासियों का संस्कार किया जा रहा है। इनकी कसम प्रार्थना भोर में 4 बजे होगी। रविवार को दोपहर 12 बजे तक 31 लाख श्रद्धालुओं ने स्नान किया। अब तक कुल 8 करोड़ लोग स्नान कर चुके हैं। 27 जनवरी को गृहमंत्री अमित शाह भी कुंभ आएंगे। वह संगम स्नान करके पूजा-अर्चना करेंगे। मेला क्षेत्र के सेक्टर-6 में बालू को खउइ से बराबर किया जा रहा था, तभी लाल कपड़े में लपेटा नवजात लड़के का शव मिला। इसके बाद काम रोक दिया गया। पुलिस के मुताबिक, शव करीब 10 दिन पुराना है। रात 10 बजे महाकुंभ में बम की सूचना से अफरा-तफरी का माहौल हो गया। शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती के शिविर में बम की सूचना पर फोर्स मौके पर पहुंची। छानबीन के दौरान कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। महाकुंभ में प्रतिदिन देश और विदेश के विभिन्न क्षेत्रों से लाखों श्रद्धालु त्रिवेणी संगम में आस्था और विश्वास की डुबकी लगा कर देश की धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों को आत्मसात कर रहे हैं। आज एनडीआरएफ टीमों की तत्परता, दृढ़ता और कार्य कुशलता ने त्रिवेणी संगम क्षेत्र में स्नान करने आए झारखंड के एक ही परिवार के पांच लोगों के जीवन का बचाने का काम किया। दुर्घटना उस समय हुई जब उस परिवार की नाव गहरे पानी में तेज बहाव की वजह से अनियंत्रित होकर डूबने लगी। मौके पर ही एनडीआरएफ की टीम पानी में गस्त लगा रही थी, बचाव कार्मिकों ने संकटग्रस्त परिवार की बचाव पुकार को सुनते ही बिना समय गंवाए अपने कर्तव्य का पालन करते हुए तत्काल गहरे पानी में फंसी नाव के पास पहुंच कर सभी फंसे हुए लोगों को उस नाव से बाहर निकाला और अपनी नाव से सुरक्षित स्थान पर ले आए। केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर प्रयागराज महाकुंभ पहुंचे। इस दौरान उन्होंने सेक्टर 18 में जूना अखाड़े के शिविर में अवधेशानंद महाराज से मुलाकात की। सीएम योगी ने कहा, श्भव्यता और दिव्यता के साथ महाकुंभ आयोजित हो रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महाकुंभ के लिए जो विजन दिया है उसको स्थानीय स्तर पर लागू करने के लिए सभी पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहे हैं। पौष पूर्णिमा और मकर संक्रांति के स्नान संपन्न हो गए हैं। मौनी अमावस्या और बसंत पंचमी के 2 बड़े महा स्नान कुंभ की शोभा हैं। 7 हजार से अधिक संस्थाएं यहां आ चुकी हैं। आज 1 करोड़ से अधिक लोग यहां मौजूद हैं। इतनी बड़ी संख्या के लिए सभी विभाग मिलकर उनकी सुविधा और सुरक्षा के लिए काम कर रहे हैं। 29 जनवरी और 3 फरवरी के महा स्नान के आयोजन को ध्यान में रखकर हमने व्यवस्था का अवलोकन किया है। मुझे विश्वास है कि हम इसका सफल आयोजन कराएंगे। मेले में रंग-बिरंगे साधु आए हैं। इनमें से एक हैं कबीर दीपक। जबलपुर से आए ये संत नाक से बांसुरी बजा भक्तों का मनोरंजन कर रहे हैं। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष रवींद्रपुरी महाराज ने कहा- 400 से 500 संन्यासी नागा बन रहे हैं। इनकी कसम प्रेयर भोर में 4 बजे होगी। इसके बाद इन संन्यासियों को दीक्षा दी जाएगी। सुबह 9 बजे तक दीक्षा चलेगी। जूना अखाड़े के बाद अब निरंजनी अखाड़े में भी नागा संन्यासी बनने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। निरंजनी अखाड़े में 400 से ज्यादा संन्यासियों का संस्कार किया जा रहा है। महाकुंभ में चिमटे वाले बाबा को फिर गुस्सा आ गया। उन्होंने एक यूट्यूबर को पीट दिया। महाकुंभ में दुनियाभर से मीडिया आई है। दूसरी तरफ यूट्यूबर भी यहां अपनी रिपोर्टिंग के लिए पहुंचे हैं। कवरेज के दौरान कई यूट्यूबर को बाबा के गुस्से का सामना करना पड़ रहा, जिनका वीडियो सामने आया। योगी ने मुरारी बापू की कथा में कहा- आज मैंने देखा कि प्रयागराज के सारे घाट श्रद्धालुओं से भरे हैं। मुझे बापू की कई कथाओं में सहभाग करने का अवसर प्राप्त हुआ। प्रत्येक कथा में कुछ न कुछ नया होता हैं। प्रयाग की धरती पर अक्षय वट है, सरस्वती कूप भी है, नागवासुकी का पावन मंदिर है, महर्षि भारद्वाज जी का आश्रम है और पावन त्रिवेणी का संगम भी है, इस पवित्र धरा पर आप सभी का अभिनंदन है। योगी ने कहा- कथा का संदेश राष्ट्रीय एकता का संदेश होना चाहिए। अखंड़ भारत का संदेश होना चाहिए। उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम के मिलन का संदेश होना चाहिए। आप सभी अंखड़ भारत का संदेश लेकर जाएं।

श्रीराम सेना ने साप्ताहिक भंडारा के साथ किया वृक्षारोपण

अररिया : फारबिसगंज रेलवे स्टेशन स्थित हनुमान मंदिर में श्रीराम सेना की ओर से रविवार को सप्ताहिक भंडारा का आयोजन किया गया। भंडारा का शुभारंभ रेलवे स्टेशन परिसर स्थित खाली स्थान पर वृक्षारोपण कर भंडारा का आयोजन किया गया। मौके पर मौजूद श्रीराम सेना के अध्यक्ष प्रदीप देव ने कहा कि इस आयोजन से आमलोगों को फायदा हो रहा है।उन्होंने कहा कि जहां भंडारा के आयोजन से जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है।वहीं वृक्षारोपण से पर्यावरण बचाने का सामाजिक संदेश दिया जा रहा है। श्रीराम सेना के प्रदेश अध्यक्ष डिंपल चौधरी ने कहा कि इस आयोजन से शहरवासियों का जुड़ना हमारी सफलता है।श्रीराम सेना की ओर से जरूरतमंदों के लिए शुरू किया गया भंडारा भविष्य में भी आयोजित होता रहेगा।

स्व.शांति देवी जिला स्तरीय फुटबाल टूनार्मेंट

मथुरा छापर को हरा एसडीआईसी पहुंची सेमीफाइनल में

संवाददाता

कुशीनगर। फाजिलनगर के नोनिया पट्टी सोनबरसा में हो रहे स्वर्गीया शांति देवी जिला स्तरीय फुटबाल टूनार्मेंट में चौथे दिन का मुकाबला एसडीआईसी(शांति देवी इंटर कालेज)टीम और मथुरा छापर टीम के बीच खेला गया। जिसमें एसडीआईसी (शांति देवी इण्टर कालेज) की टीम ने 8-1से मथुरा छापर को एकतरफा पराजित कर सेमीफाइनल में जगह सुनिश्चित कर

लिया।एसडीआईसी (शांति देवी इंटर कालेज) की ओर से अनश शेख तथा सर्फुद्दीन ने तीन तीन गोल तथा जाफिल व तहां खान ने एक एक गोल किया। वहीं मथुरा छापर टीम से भोला ने एक गोल किया। मैच का शुभारंभ रेड हिल्स के साहिल अंसारी ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करके कराया। आयोजक जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि डा.शुभम यादव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए आभार प्रकट किया। इस दौरान प्रधानाचार्य राजदेव यादव, इकबाल अंसारी,अल्ताफ अंसारी,गोविंद चौबे, शम्भू यादव, मोतीलाल यादव, अरविंद यादव, संदीप कुशवाहा, मनोज यादव, मुन्ना कुशवाहा, सुधाकर कन्नौजिया, राणा प्रताप कुशवाहा, बृजेश कुशवाहा, सिंधु यादव उस्मान गनी नूरी समेत खेलप्रेमी मौजूद रहे।

संक्षिप्त डायरी

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ वित्त विहीन गुट ने नवागत जिला विद्यालय निरीक्षक का स्वागत किया

संवाददाता

कुशीनगर। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ वित्त विहीन गुट के पदाधिकारियों ने नवागत जिला विद्यालय निरीक्षक कुशीनगर श्रवण कुमार गुप्ता का स्वागत माल्यार्पण व बुके देकर किया। शनिवार को सदस्य प्रदेश कार्यकारिणी पुरन्दर प्रताप यादव, जिलाध्यक्ष निजामत अली के नेतृत्व संगठन के शिक्षक जिनिवि कार्यालय पहुंचे और नवागत जिला विद्यालय निरीक्षक कुशीनगर का जोरदार स्वागत किया। नवागत जिला विद्यालय निरीक्षक श्री गुप्ता ने सभी से शिष्टाचार वार्ता किया और बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण, नैतिक व संस्कारिक शिक्षा प्रदान करने पर जोर दिया। इस अवसर पर मंडल उपाध्यक्ष गोरखपुर ज्ञानेश्वर सैनी, रामप्रवेश यादव, श्री नारायण कुशवाहा, अतुल सैनी आदि मौजूद रहे।

नेवेली पावर प्लांट में हुआ सड़क सुरक्षा जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन

संवाददाता

हमीरपुर। उत्तर प्रदेश के हमीरपुर से सटे कानपुर नगर के नेवेली पावर लिमिटेड में, मेसर्स पावर मेक प्रोजेक्ट लिमिटेड की तरफ से सड़क सुरक्षा अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर 17 जनवरी 2025 को बड़ी तादाद में लोग मौजूद रहे, कार्यक्रम में खासतौर से नेवेली के सेफ्टी डीजीएम आर बालामुर्गन, अरविंद कुमार, शरद चन्द्रा, आनंद सक्सेना, राज शेखर, सेफ्टी विभाग के ऋषि कुमार, अकबर खान सहित सभी हेड ऑफ डिपार्टमेंट और वर्कर शामिल रहे। कार्यक्रम में अकबर खान ने सड़क सुरक्षा की शपथ भी दिलाई। इस मौके पर डीजीएम आर बालामुर्गन ने सड़क सुरक्षा के के नियमो को फॉलो करने पर जोर दिया। ये पहला कार्यक्रम है जो ओ एंड एम एजेंसी मेसर्स पावर मेक प्रोजेक्ट्स लिमिटेड की तरफ से संचालित किया गया है। जबकि 27 जनवरी तक कार्यक्रम चलेगा। कार्यक्रम के अगले दिन 18 जनवरी को सुबह नेवेली के गेट नो 1 पर टू व्हीलर और फोर व्हीलर ड्राइवरों को अभियान चलाकर जागरूक किया गया, कार्यक्रम के दौरान हैलमेट में रिफलैक्टिव स्टीकर लगाने के साथ ही सीट बेल्ट इस्तेमाल के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस मौके पर सड़क सुरक्षा रैली भी निकाली गयी। रैली की शुरूआत सर्विस बिल्डिंग से हुई जबकि नेवेली के ओ एण्ड एम जी एम ने हरि झंडी दिख कर रैली को रवाना किया।

आठ शहरों में घरों की बिक्री में 26 फीसदी की गिरावट: रिपोर्ट

- बिक्री में गिरावट महाराष्ट्र और हरियाणा में चुनाव और संपत्ति की बढ़ी हुई कीमतों से आई

मुंबई ।

मुंबई, अहमदाबाद, बेंगलुरु समेत देश के आठ प्रमुख शहरों में घरों की बिक्री में 2024 की अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में सालाना आधार पर 26 प्रतिशत की गिरावट देखी गई है। बताया जा रहा है कि बिक्री में गिरावट महाराष्ट्र और हरियाणा में चुनाव और संपत्ति की बढ़ी हुई कीमतों की वजह से आई है। एक रियल एस्टेट परामर्श मंच की हाल ही में जारी एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। रिपोर्ट के मुताबिक इस विश्लेषण में शामिल आठ में से तीन शहर महाराष्ट्र और हरियाणा में स्थित हैं जहां पर बीती तिमाही में विधानसभा के चुनाव हुए। हालांकि दिल्ली-एनसीआर को छोड़कर सालाना आधार पर बाकी सभी सात शहरों शहरों में घरों की बिक्री में गिरावट आई है। दिल्ली-एनसीआर में दिसंबर तिमाही में घरों की बिक्री 50 प्रतिशत बढ़कर 9,808 इकाई रही जबकि पिछले साल की समान अवधि में यह आंकड़ा 6,528 था। बीते वर्ष की चौथी तिमाही में नई परियोजनाएं पेश करने में 33 प्रतिशत की गिरावट आई है। आठ में से पांच शहरों में पिछली तिमाही के दौरान पेश नई परियोजनाओं की संख्या घटी है। संपत्तियों की खरीद-बिक्री या किराये पर लेन-देन की जानकारी देने वाले मंच के एक अे धिकारी ने कहा कि अक्टूबर-दिसंबर में त्योहारों के दौरान बिक्री में तिमाही आधार पर वृद्धि हुई। इसके बाद भी अधिकांश क्षेत्रों में बिक्री और नई पेशकश में पिछले साल के मुकाबले गिरावट देखी गई। रिपोर्ट के अनुसार मुंबई क्षेत्र (एमएमआर) में सालाना आधार पर 31 प्रतिशत की गिरावट के साथ 33,617 घरों की बिक्री हुई, जबकि पिछले साल की समान अवधि में 48,553 घरों की बिक्री हुई थी। पुणे में इस दौरान 31 प्रतिशत की गिरावट के साथ 18,240 घरों की बिक्री हुई। वहीं बेंगलुरु में 23 प्रतिशत की गिरावट के साथ 13,236 घरों की बिक्री हुई, हैदराबाद में 36 प्रतिशत की गिरावट के साथ 13,179 घरों की बिक्री हुई और चेन्नई में पांच प्रतिशत की गिरावट के साथ 4,073 घरों की बिक्री हुई।

बाजारों में ब्रांडेड खाद्य तेलों में मिलावट

▸▸ धड़ल्ले से बिक रहा है मिलावटी खाद्य तेल

▸▸ बड़ी-बड़ी कंपनियां कर रही हैं करोड़ों की कमाई

मुंबई ।

नामी गिरामी ब्रांडेड कंपनियां खाद्य तेलों में मिलावट करके खुलेआम मिलावटी तेल बेच रही हैं। खाद्य तेलों में बड़े पैमाने पर ब्रान आयल मिलाया जा रहा है। इसे उपभोक्ताओं को महंगे दामों में बेचा जा रहा है। धान की भूसी का तेल सबसे ज्यादा खाद्य तेल में मिलाकर, ब्रांडेड कंपनियों ब्रांड के नाम से महंगे दामों पर बेच रही हैं।

सरसों, सोयाबीन और मूंगफली के तेल से ब्रान ऑयल 40 से लेकर 60 रुपए प्रति लीटर तक सस्ता होता है। सरकार ने ब्लेंडिंग कानून में बड़ी कंपनियों के लिए बदलाव कर दिए हैं। इसका फायदा बड़ी-बड़ी कंपनियां उठा रही हैं। बड़ी-बड़ी कंपनियां अंग्रेजी में लेबल छपवाती हैं। उसमें बहुत छोटे अक्षरों में मल्टी सोर्स आयल लिखा रहता है।

जो उपभोक्ता ब्रांडेड सोयाबीन, सरसों और मूंगफली का तेल खरीदता है। उसे मालूम ही नहीं होता है, वह मिलावटी तेल खरीद रहा है। वह भी महंगे दामों पर खरीद रहा है।

केंद्र सरकार ने 3 फरवरी 2023 को तेल के ब्लेंडिंग कानून में बदलाव किए हैं। नए बदलाव के अनुसार अब कंपनियों को 20 फीसदी तक दूसरे तेल की मिलावट करने की अनुमति दी गई है। ब्रांडेड कंपनियों द्वारा जो सरसों, मूंगफली और सोयाबीन का तेल बेचा जा रहा है। उसमें सबसे सस्ता धान की भूसी का तेल मिलाया जा रहा है। इससे ब्रांडेड कंपनियों को बड़ी कमाई हो रही हैं। वहीं उपभोक्ताओं को खुले आम बड़ी-बड़ी कंपनियों द्वारा लूटा जा रहा है। उपभोक्ता को पता नही होता है। वह मिलावटी तेल खरीद रहा है। बड़ी कंपनियां अपने फायदे के लिए सरकार के नियमों में परिवर्तन कराकर करोड़ों रुपए कमा रही हैं। अन ब्रांडेड तेल बेचने वालों के लिए मिलावट के अलग कानून हैं। सरकार ने ब्रांडेड कंपनियों के लिए अलग कानून बना दिया है। ब्रांडेड कंपनियां तेल में किस तेल की कितनी मिलावट कर रही हैं। इसकी जानकारी उपभोक्ताओं को नहीं देती है। उनके लेबल भी अंग्रेजी भाषा में होते हैं। मल्टी सोर्स ऑयल भी बहुत छोटे अक्षरों में लिखा रहता है। यह लूट पिछले कुछ समय से बढ़ती ही चली जा रही है। सरकार इस लूट पर आंख बंद करके बैठी हुई है।

सेंसेक्स की प्रमुख छह कंपनियों का मार्केट कैप 1.71 लाख करोड़ घटा

सबसे ज्यादा नुकसान इन्फोसिस और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज को हुआ

मुंबई ।

पिछले सप्ताह सेंसेक्स की प्रमुख 10 सबसे कीमती कंपनियों में से छह के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में सामूहिक रूप से 1.71 लाख करोड़ रुपये की गिरावट आई। सबसे ज्यादा नुकसान सूचना प्रौद्योगिकी आईटी क्षेत्र की कंपनियों इन्फोसिस और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) को हुआ। शीर्ष 10 कंपनियों में से टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, इन्फोसिस, हिंदुस्तान यूनिलीवर और आईटीसी के बाजार मूल्यांकन में सामूहिक रूप से 1,71,680.42 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। वहीं रिलायंस इंडस्ट्रीज, भारती एयरटेल, भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) और भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) की बाजार हैसियत बढ़ गई। समीक्षाधीन सप्ताह में इन्फोसिस का बाजार मूल्यांकन 62,948.4 करोड़ रुपये घटकर 7,53,678.38 करोड़ रुपये रहा गया।

सबसे अधिक नुकसान इन्फोसिस को ही हुआ। तीसरी तिमाही के नतीजों की घोषणा के बाद मुनाफावसूली के बीच शुक्रवार को इन्फोसिस के शेयर में करीब प्रतिशत की गिरावट आई। टीसीएस का बाजार पूंजीकरण 50,598.95 करोड़ रुपये घटकर 14,92,714.37 करोड़ रुपये, हिंदुस्तान यूनिलीवर का मूल्यांकन 20,605.92 करोड़ रुपये घटकर 5,53,152.52 करोड़ रुपये और आईसीआईसीआई बैंक का मूल्यांकन 16,005.84 करोड़ रुपये घटकर 8,65,495.17 करोड़ रुपये, एचडीएफसी बैंक की बाजार हैसियत 15,640.8 करोड़ रुपये घटकर 12,51,799.81 करोड़ रुपये और आईटीसी के मूल्यांकन में 5,880.51 करोड़ रुपये की गिरावट आई और यह 5,50,702.93 करोड़ रुपये रह गया। इस रुख के `` विपरीत रिलायंस इंडस्ट्रीज का मूल्यांकन 79,773.34 करोड़ रुपये बढ़कर 17,60,967.69 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। भारतीय स्टेट बैंक की बाजार हैसियत 18,697.08 करोड़ रुपये बढ़कर 6,81,930.22 करोड़ रुपये, एलआईसी का बाजार पूंजीकरण 9,993.5 करोड़ रुपये बढ़कर 5,40,724.05 करोड़ रुपये और भारती एयरटेल का बाजार पूंजीकरण 7,080.98 करोड़ रुपये बढ़कर 9,27,014.97 करोड़ रुपये हो गया।

आम बजट में आरएंडडी के प्रोत्साहन के लिए नई योजना की घोषणा

नई योजना से विदेशी कंपनियों को भारत में निवेश के लिए आकर्षित किया जाएगा

नई दिल्ली ।

आम बजट 2025-26 में भारत में शोध एवं विकास (आरएंडडी) को बढ़ावा देने के लिए एक प्रोत्साहन पीएलआई) योजना की घोषणा की गई है। इस नई योजना के माध्यम से विदेशी कंपनियों को भारत में निवेश के लिए आकर्षित किया जाएगा, जिससे देश को नवोन्मेषण का वैश्विक केंद्र बनाने में मदद मिलेगी। पीएलआई योजना के बारे में बात करते हुए डेलायट इंडिया के एक भागीदार ने इसे एक महत्वपूर्ण कदम बताया है। उन्होंने कहा कि सरकार ऐसी नीति पर काम कर रही है जिसमें कर रियायतें कम हों और उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन योजनाएं हों, जो निवेश और रोजगार को बढ़ावा दें। हमें भारत को अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला के रूप में आगे बढ़ाने की जरूरत है और यदि ऐसी नीति हो सकती है जो इसे प्रोत्साहित करे, जैसे कि विदेशी कंपनियों को शामिल करने वाली पीएलआई योजना, तो यह देश के लिए बड़ा कदम होगा। वित्त वर्ष 2025-26 का बजट संसद में एक फरवरी को पेश किया जाएगा। उन्होंने बताया कि नयी योजना में विदेशी कंपनियों को भारत आने के लिए प्रोत्साहित करने वाली नीतियाँ हो सकती हैं, जो देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा दें। भारत

एक सेवा आधारित अर्थव्यवस्था है और अगर इसे आगे बढ़ाया जाए, तो यह विदेशी मुद्रा अर्जित करने का एक महत्वपूर्ण स्रोत हो सकता है। सरकार की इस नई योजना से आर्थिक उत्थान को लेकर नए किरदार की उम्मीदें हैं और देश को नए दिशानिर्देश में ले जाने की उम्मीद है।

विदेशी निवेशकों ने जनवरी में अब तक भारतीय शेयर बाजार से 44,396 करोड़ निकाले

दिसंबर में एफपीआई ने भारतीय शेयर बाजार में 15,446 करोड़ रुपये का निवेश किया था

नई दिल्ली । डॉलर मजबूत होने, अमेरिका में बॉन्ड प्रतिफल बढ़ने और कंपनियों के तिमाही नतीजे कमजोर रहने की आशंका से विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने इस महीने अब तक भारतीय शेयर बाजार से 44,396 करोड़ रुपये की निकासी की है। डिपॉजिटरी के आंकड़ों से यह जानकारी मिली है। इससे पहले दिसंबर में एफपीआई ने भारतीय शेयर बाजार में 15,446 करोड़ रुपये डाले थे। घरेलू और वैश्विक मोर्चे पर तमाम तरह की अड़चनों की वजह से विदेशी निवेशकों के रुख में बदलाव हुआ है। बाजार के एक विशेषज्ञ ने कहा कि भारतीय रुपये में लगातार गिरावट ने विदेशी निवेशकों पर काफी दबाव डाला है। यही वजह है कि वे भारतीय बाजार से अपना निवेश निकाल रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसके अलावा हाल की गिरावट के बावजूद भारतीय शेयरों का ऊंचा मूल्यांकन, कमजोर तिमाही नतीजों की संभावना, आर्थिक वृद्धि की रफ्तार को लेकर अनिश्चितता निवेशकों को प्रभावित कर रही है।

आंकड़ों के अनुसार विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने इस महीने 17 जनवरी तक भारतीय शेयरों से 44,396 करोड़ रुपये निकाले हैं। दो जनवरी को छोड़कर इस महीने के सभी दिन एफपीआई बिकवाल रहे हैं। जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के एक मुख्य निवेश रणनीतिकार ने कहा कि एफपीआई की लगातार बिकवाली की मुख्य वजह डॉलर की मजबूती और अमेरिका में बॉन्ड प्रतिफल का बढ़ना है। डॉलर सूचकांक 109 से ऊपर है और 10 साल के अमेरिकी बॉन्ड पर प्रतिफल 4.6 प्रतिशत से ज्यादा है। ऐसे में एफपीआई का उभरते बाजारों में बिकवाली करना तर्कसंगत है, खासकर सबसे महंगे उभरते बाजार भारत में।

हेल्थ इंश्योरेंस कितना जरूरी, जानिए इसकी महत्वपूर्णता

- अरबों रुपये के मालिक भी हेल्थ इंश्योरेंस का लाभ उठाते हैं

मुंबई । बॉलीवुड के प्रमुख अभिनेता सैफ अली खान पर हुए हाल हमले के बाद उनकी स्थिति अभी स्टेबिल है। हमले के बाद सैफ अली खान ने तत्काल इंश्योरेंस कवर की जरूरत महसूस की और इंश्योरेंस कंपनी से 36 लाख रुपये का दावा किया। हालांकि, कंपनी ने उन्हें केवल 25 लाख रुपये की मंजूरी दी है। सैफ अली खान की इस घटना से यह साफ हो जाता है कि हेल्थ इंश्योरेंस कितना आवश्यक है। अरबों रुपये के मालिक भी हेल्थ इंश्योरेंस का लाभ उठाते हैं तो आम लोग क्यों न करें? हेल्थ इंश्योरेंस एक सुरक्षा पुस्तिका है जो आपकी सेहत की आमदनी को सुनिश्चित करती है। अस्पताल में भर्ती होने पर बिल का बोझ बढ़ सकता है, लेकिन हेल्थ इंश्योरेंस इस बोझ से आपको मुक्ति दिलाता है। हेल्थ इंश्योरेंस किसतना कवर चाहिए, यह आपकी उम्र और परिवार के सदस्यों पर निर्भर करता है। फैमिली फ्लोटर प्लान जैसे योजनाएं परिवार के सभी सदस्यों का कवर करने में मदद कर सकती है। हेल्थ इंश्योरेंस की कई निजी और सरकारी कंपनियां हैं जो इस सुरक्षा का संदेश फैला रही हैं।

छह माह की चुनौतियों के बाद रिलायंस ने फिर पकड़ी वृद्धि की राह : ब्रोकरेज कंपनियां

- कंपनी ने दिसंबर तिमाही में उम्मीद से बेहतर नतीजे दिए

नई दिल्ली । देश की प्रमुख कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) छह महीने की चुनौतियों के बाद एक बार फिर वृद्धि के पथ पर लौट आई है। कंपनी ने दिसंबर तिमाही में उम्मीद से बेहतर नतीजे दिए हैं। एक ब्रोकरेज कंपनियों ने यह बात कही है। कच्चे तेल से लेकर दूरसंचार और खुदरा क्षेत्र में कार्यरत समूह ने अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में अपनी सबसे ऊंची 43,800 करोड़ रुपये की कर-पूर्व आय (ईबीआईटीडीए) दर्ज की है। इन आंकड़ों से पता चलता है कि समूह ने विभिन्न कारोबार क्षेत्रों में मजबूत प्रदर्शन किया है। मुख्य रूप से कंपनी ने तेल-से-रसायन (ओ2सी) क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन किया है। इसके अलावा कंपनी के उपभोक्ता खुदरा कारोबार में भी सुधार हुआ है। कंपनी विनाइल, पॉलिएस्टर श्रृंखला और ईथेन आयात लॉजिस्टिक्स में निवेश के साथ घरेलू बाजार पर केंद्रित अपनी रसायन क्षमता का विस्तार करना चाहती है। एक रिसर्च कंपनी ने कहा कि उसे 2025 में समूह के कारोबार को आगे बढ़ाने के लिए कई उत्प्रेरक दिख रहे हैं। इसमें खुदरा क्षेत्र में बदलाव, नई ऊर्जा की शुरुआत और डिजिटल कारोबार में नई गति शामिल है। इसने कहा कि हमारा मानना है कि तीसरी तिमाही का नतीजा उम्मीदों के अनुरूप रहा है। यह निकट अवधि में उम्मीद से थोड़ा कमतर नतीजों में आखिरी है। अब हमारा मानना है कि खुदरा क्षेत्र में बदलाव, नए ऊर्जा कारोबार की शुरुआत और डिजिटल कारोबार की रफ्तार समूह के लिए उत्प्रेरक साबित होंगे।

देश की पहली सोलर कार लॉन्च, सिर्फ 80 पैसे में 1 किमी दौड़ेगी

- कीमत 3.25 लाख रुपए

नई दिल्ली । भारतीय ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री में नए इनोवेशन की ओर बड़े कदम बढ़ रहे हैं। हाल ही में पुणे की बेस्ड इलेक्ट्रिक व्हीकल स्टार्ट-अप कंपनी वेव मोबिलिटी ने देश की पहली सोलर पावर्ड कार वायवे ईवा को लॉन्च किया है। यह कार केवल 3.25 लाख रुपए में उपलब्ध है और कंपनी का दावा है कि यह 250 किमी की ड्राइविंग रेंज के सिंगल चार्ज पर प्रदर्शन कर सकती है। वायवे ईवा का डिजाइन भी विशेष है, जिसमें सोलर पैनल को सनरूफ पर इस्तेमाल किया गया है। कार में अंदर कंफर्ट और एंटरटेनमेंट के लिए एसी, एपल कारप्ले, और एंड्रॉयड ऑटो कनेक्टिविटी सिस्टम भी शामिल हैं। इसकी टॉप स्पीड 70 प्रति किमी है और फुल चार्ज होने में सिर्फ 45 मिनट लगते हैं। पर्यावरण को देखते हुए सोलर पावरड व्हीकल्स का उपयोग करने में यह कदम बहुत महत्वपूर्ण है। भारत में सोलर कारों की एंट्री से मोटर व्यावसाय में गहरा तबदला देखने के अवसर हैं, जिससे न केवल इंडस्ट्री में विकास होगा बल्कि पर्यावरण की भी ध्यान में रखा जा सकेगा।

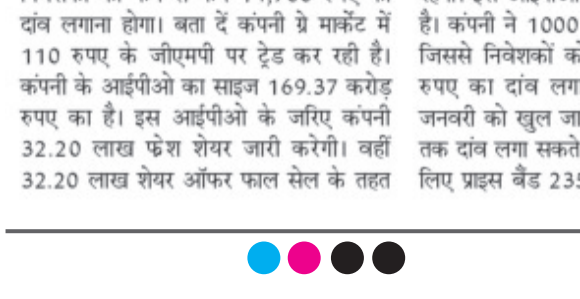

कंपनियों के तिमाही परिणाम, एफपीआई के रुख से तय होगी शेयर बाजार की दिशा

- कच्चे तेल के दाम, डॉलर के मुकाबले रुपये की चाल भी बाजार की दिशा के लिए महत्वपूर्ण रहेगी

मुंबई ।

इस सप्ताह घरेलू शेयर बाजारों की दिशा एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक जैसी बड़ी कंपनियों के तिमाही नतीजों, डोनाल्ड ट्रंप के अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण करने के बाद की घोषणाओं और विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) की गतिविधियों के रुख से तय होगी। विश्लेषकों ने यह राय जताई है। ट्रंप सोमवार को दूसरे कार्यकाल के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण करेंगे। सप्ताह के दौरान भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल), एचडीएफसी बैंक, हिंदुस्तान यूनिलीवर, डॉ रेड्डीज, अल्ट्राटेक सीमेंट, जेएसडब्ल्यू स्टील और आईसीआईसीआई बैंक सहित कई बड़ी कंपनियां अपने दिसंबर तिमाही के नतीजे घो षित करेंगी। इसके अलावा विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) और घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) के बीच का संघर्ष भी बाजार की जटिलता को और बढ़ा रहा है। बाजार के एक वरिष्ठ तकनीकी विश्लेषक ने कहा कि जैसे-जैसे तिमाही नतीजों का सीजन आगे बढ़ेगा, निवेशकों का ध्यान आगामी केंद्रीय बजट पर केंद्रित होने की उम्मीद है, जो साल के लिए सरकार के आर्थिक और राजकोषीय रुख की रूपरेखा तैयार करेगा। बाजार प्रतिभागी नीतिगत उपायों, राजकोषीय आवंटन और विकास पहल पर बारीकी से नजर रखेंगे। उन्होंने कहा कि वैश्विक मोर्चे पर सभी की नजरें डोनाल्ड ट्रंप पर हैं। विशेषज्ञों ने कहा कि वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल के दाम, डॉलर के मुकाबले रुपये की चाल भी बाजार की दिशा के लिए महत्वपूर्ण रहेगी। एक बाजार विशेषज्ञ कहते हैं कि तीसरी तिमाही के लिए नतीजों का सिलसिला जारी है। ऐसे में घरेलू शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव रहेगा। कुछ शेयर विशेष गतिविधियां देखने को मिल सकती हैं। निवेशकों की नजरें कंपनियों के तिमाही नतीजों तथा प्रबंधन की टिप्पणियों पर रहेगी। उन्होंने कहा कि ट्रंप के राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेने के बाद नीतिगत घोषणाएं वैश्विक स्तर पर बाजार धारणा को काफी प्रभावित करेंगी। बाजार विशेषज्ञों ने कहा कि आगे हम उम्मीद करते हैं कि इस सप्ताह बाजार कई घरेलू और वैश्विक कारकों के कारण सतर्क रुख बनाए रखेगा।

सप्ताह के दौरान दिग्गज कंपनियों के तिमाही नतीजे आ रहे हैं, जिन पर सभी की निगाह रहेगी। इसके अलावा 20 जनवरी को डोनाल्ड ट्रंप के सत्ता संभालने के बाद व्यापार शुल्कों की घोषणा और उसके वैश्विक व्यापार पर असर को लेकर सभी की नजरें रहेंगी।

अगर आपको भी है गेमिंग ऐप की लत तो हो जाएं सावधान

धोखाधड़ी के मामलों में लगभग 7 लाख रुपये की राशि बरामद की गई

जम्मू । जम्मू के साइबर सेल डी.पी.ओ. ने ऑनलाइन और ऑफलाइन धोखाधड़ी और साइबर अपराध के मामलों के खिलाफ लड़ाई में नए कदम उठाए हैं। उनकी टीम ने लगातार काम करके आम जनता की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रयास किया है। इस समय साइबर सेल ने कई मामलों को सुलझाते हुए धोखाधड़ी से बरामद की गई राशि का आंकलन किया है। इन मामलों में लगभग 7 लाख रुपये की राशि बरामद की गई है। शिकायतकर्ताओं ने टेलीग्राम पर ट्रेडिंग और नकली गेमिंग एप के माध्यम से धोखाधड़ी के आरोप में शिकायत दर्ज की थी। साइबर सेल जम्मू के एक प्रतिनिधि ने बताया कि वे उन्हें किस तरह कर्मचारियों और तकनीकी उपकरणों के माध्यम से धोखाधड़ी के मामलों में सफलतापूर्वक इन्वेस्टिगेशन करने में मदद मिल रही है। जम्मू साइबर सेल ने धोखाधड़ी के खिलाफ लड़ाई में अग्रणी भूमिका निभाई है और धोखाधड़ी और साइबर अपराध के मामलों में कार्रवाई कर रही है। जानकारी के अनुसार साइबर सैल ने एक बार फिर अलग-अलग साइबर अपराध शिकायतों में धोखेबाजों से 6,90,460 की राशि सफलतापूर्वक बरामद की है। उक्त राशि ऑनलाइन ट्रेडिंग और इनवैस्ट के बारे में अलग-अलग रणनीति अपनाकर लोगों को धोखा देकर इकट्ठी की गई थी। बता दें कि 2 शिकायतों में शिकायतकर्ताओं ने टेलीग्राम पर ट्रेडिंग में इनवेस्ट किया था और अन्य शिकायतों में शिकायतकर्ताओं ने एक नकली गेमिंग एप (एविएटर) के माध्यम से पैसे गंवाए थे।

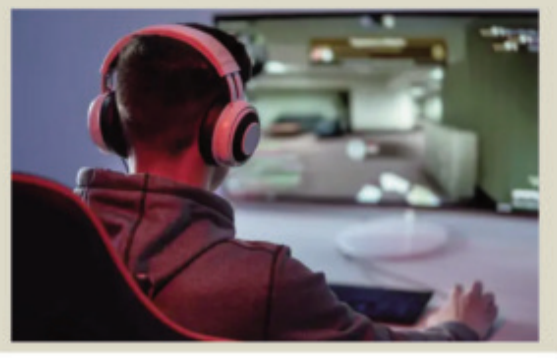

इस सप्ताह सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेंगे 5 नए आईपीओ

मेनबोर्ड आईपीओ 22 जनवरी से 24 जनवरी तक खुला रहेगा

मुंबई ।

घरेलू शेयर बाजार में इस सप्ताह 5 कंपनियों के आईपीओ खुलेंगे। इन 5 कंपनियों में 4 एसएमई सेगमेंट और 1 मेनबोर्ड आईपीओ शामिल है। मेनबोर्ड में इस हफ्ते डेंटा वाटर का आईपीओ खुल रहा है। यह मेनबोर्ड आईपीओ 22 जनवरी से 24 जनवरी तक खुला रहेगा। कंपनी ने 279 रुपए से 290 रुपए प्रति शेयर प्राइस बैंड तय किया है। इस आईपीओ के लिए 50 शेयरों का एक लॉट बनाया गया है। जिससे निवेशकों को कम से कम 14,700 रुपए का दांव लगाना होगा। बता दें कंपनी ग्रे मार्केट में 110 रुपए के जीएमपी पर ट्रेड कर रही है। कंपनी के आईपीओ का साइज 169.37 करोड़ रुपए का है। इस आईपीओ के जरिए कंपनी 32.20 लाख फ्रेश शेयर जारी करेगी। वहीं 32.20 लाख शेयर ऑफर फाल सेल के तहत जारी किए जाएंगे। कंपनी के आईपीओ का 20 जनवरी को खुल रहा है। आईपीओ पर निवेशकों के पास 22 जनवरी तक दांव लगाने का मौका रहेगा। इस आईपीओ का प्राइस बैंड 250 रुपए से 263 रुपए तय किया गया है। ग्रे मार्केट में कंपनी 110 रुपए के प्रीमियम पर ट्रेड कर रही है। कंपनी का आईपीओ 22 जनवरी को खुल जाएगा। निवेशकों के पास 24 जनवरी तक दांव लगाने का मौका रहेगा। इस आईपीओ का प्राइस बैंड 145 रुपए है। कंपनी ने 1000 शेयरों का लॉट बनाया है। जिससे निवेशकों को कम से कम 145000 रुपए का दांव लगाना होगा। आईपीओ 23 जनवरी को खुल जाएगा। निवेशक 27 जनवरी तक दांव लगा सकते हैं। कंपनी ने आईपीओ के लिए प्राइस बैंड 235 रुपए से 250 रुपए प्रति शेयर तय किया है। वहीं लॉट साइज 600 शेयरों का है। निवेशकों को एक साल 1.50 लाख रुपए का निवेश करना होगा। यह एसएमई आईपीओ 24 जनवरी को खुलेगा। निवेशक 28 जनवरी तक आईपीओ पर दांव लगा पाएंगे। कंपनी ने अभी प्राइस बैंड की घोषणा नहीं की है। आईपीओ के जरिए 24.58 लाख शेयर जारी किए जा सकते हैं।

दावोस में दिखेगी भारत की विविधता में एकता की झलक

दावोस । विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की शुरुआती बैठक में भारत ने 'विविधता में एकता' का संदेश दिखाया। सोमवार से पांच दिन तक चलने वाली इस महामहिम सभा में भारत ने अपना सबसे बड़ा प्रतिनिधिमंडल भेजा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आर्थिक नीतियों और डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की सफलता को दुनिया के सबसे अमीर और ताकतवर नेताओं को दिखाने का भारत का मिशन है। भारतीय प्रतिनिधिमंडल में पांच केंद्रीय मंत्रियों के साथ तीन मुख्यमंत्री, करीब 100 सीईओ, सरकारी अधिकारी और कला-संस्कृति के क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों का समावेश है। भारत के प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव करेंगे। बैठक में महाराष्ट्र ने 7 लाख करोड़ रुपये के समझौता ज्ञापन (एमओयू) करने का लक्ष्य रखा है। तेलंगाना और अन्य राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने भी निवेश के अपने हिस्से की तलाश की है। इस महामहिम सभा के माध्यम से भारत अपनी मजबूत वृद्धि दर्ज करने का मिशन ले रहा है, जब दुनियाभर के अर्थशास्त्रियों के सर्वे अनुसार 2025 में वैश्विक आर्थिक स्थितियों के बारे में कमजोर होने की चिंता है। हालांकि, भारत ने अपने रफ्तार को बनाए रखने की पहल रखी है। इस संगठन के सभी दिग्गज नेता, उन्होंने अपने देशों की बढ़ती वृद्धि दर का हर एक मौका सही दिशा में ले जाने की जिम्मेदारी ली है।

सीएम ने पूछा: कैसे करते काम, कितना हो रहा फायदा

दीदी बोली, जीविका के सहारे घर से निकलने का मौका मिला, 30 हजार कमा लेते, आपकी कृपा है

बेगूसराय। प्रगति यात्रा के मुख्य कार्यक्रम स्थल पर लगाए गए स्टॉल का भ्रमण के दौरान मुख्यमंत्री ने जब जीविका दीदी से बात की तो वे उत्साहित हो गए। रंजीता देवी ने बताया कि मुख्यमंत्री हमारे स्टॉल पर रुके, हरित खाद के संबंध में हमसे जानकारी ली। उन्होंने पूछा कि पहले क्या करते थे, हमने बताया कि पहले घर से निकलने का मौका नहीं दिया जा रहा था। आपके द्वारा शुरू किए गए जीविका से हम घर से निकले। हरित खाद बना रहे हैं, आगे बढ़ रहे हैं। इसपर मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे प्रयास से ही जीविका दीदी आगे बढ़ रही हैं, हरित का जैविक खाद बना रही हैं। अभी बेगूसराय के मटिहानी में इस प्रगति यात्रा पर आए, यह आपकी प्रगति का प्रतीक है। हमने मुख्यमंत्री को बताया कि कैसे हरित खाद और जैविक खाद बनाते हैं। हमने बताया कि प्राकृतिक तरीके से पांच प्रकार की वस्तुओं को मिलाकर हम खाद बनाते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम जीविका दीदी को लगातार आगे बढ़ने का मौका दे रहे हैं, बढ़ा रहे हैं। हमने भी उनसे कहा कि आप ही हैं कि आगे बढ़ रहे हैं। आप ही के कृपा से हम घर से बाहर निकले, इससे हमको बहुत फायदा हो रहा है। ड्रोन दीदी के नाम से चर्चित निशा ने बताया कि मुख्यमंत्री हमारे स्टॉल पर आए। हमने उन्हें ड्रोन के संबंध में विस्तार से बताया कि स्प्रे करते हैं। मुख्यमंत्री ने पूछा अच्छा स्प्रे हो रहा है। इनकम के संबंध में पूछा तो हमने कहा कि 25 से 30 हजार महीना इनकम हो रहा है। उन्होंने तारीफ की, पूछा कि किसान इसके बारे में समझ रहे हैं तो हमने

किसानों के संबंध में विस्तार से बताया। मुख्यमंत्री काफी खुश हुए। ओम जीविका स्वयं सहायता समूह मटिहानी की निशा ने बताया कि 2014 से जीविका समूह से जुड़ी है। समूह में जुड़ने से पहले वह एक सामान्य घरेलू महिला थी। लोगों से मिलने की बात तो दूर, घर से बाहर तक नहीं निकलती थी। समूह में जुड़ाव के बाद निशा की दुनिया ही बदल गई। समूह से ऋण लेकर निशा ने अगरबत्ती बनाने का कार्य शुरू किया और उसकी बचत से खेती और गो पालन भी करने लगी। निशा की यात्रा यहीं नहीं रुकी, वह बिहार के ड्रोन ध्वज वाहिका के रूप में अपनी नई पहचान स्थापित की और हैदराबाद में ड्रोन चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। निशा के बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि कार्यक्रम में जीविका ने 14 स्टॉल लगाए थे। जिस पर कृषि, सतत जीविकोपार्जन योजना, पशुधन, स्वास्थ्य और पोषण, सामाजिक विकास, बीमा और वैकल्पिक बैंकिंग, गैर कृषि से संबंधित स्टॉल थे। कृषि में हरित खाद, जीरो बजट प्राकृतिक खेती और विशिष्ट कृषि उत्पादन, कृषि उद्यमी व कृषि उत्पादक कंपनी, कृषि यांत्रीकरण, ड्रोन, कोनो मीटर, रोटावेटर और अन्य कृषि यंत्र। आलू और केला चिप्स, सहकारिता निबंधन। सतत जीविकोपार्जन परियोजना में बांस से निर्मित सूप, डलिया, टोकरी, मिट्टी से बनी मूर्ति, गुड़िया, खिलौना, अनंत, धागा, थैला, पर्दा, गेट झालर, गुलदस्ता आदि था। पशुधन स्टॉल पर पशु सखी मॉडल, मत्स्य सखी मॉडल, डेयरी उत्पाद दूध, दही, पनीर और मिठाई से संबंधित था। स्वास्थ्य और पोषण स्टॉल पर खाद्य विस्तार समूह का प्रदर्शन, टेलीमेडिसिन व पोषण उद्यान। सामाजिक विकास स्टॉल पर दीदी का अधिकार केंद्र, जीविका पुस्तकालय, दीदी की नर्सरी आदि की जानकारी थी। बीमा व बैंक वैकल्पिक बैंकिंग स्टॉल पर ग्राहक सेवा संबंध की जानकारी प्रदर्शित की गई थी। गैर कृषि स्टॉल पर खाद्य सामग्री में मिश्रित अनाज, शहद, तेल, मसाला, चावल का आटा, पापड, तिलौरी, सत्तू, अचार, बड़ी, श्रृंगार प्रसाधन, बैग, सिलाई घर को प्रदर्शित किया गया था। यहां पर घरेलू उपयोग में आने वाली फिनायल, टॉयलेट क्लीनर, सैनिटाइजर, हैंड वॉश, थाली और पत्तल को प्रदर्शित किया गया था। उन्होंने मटिहानी निवासी ड्रोन दीदी निशा देवी से ड्रोन संचालन और इससे होने वाले आय के संबंध में जानकारी ली।

संक्षिप्त डायरी

बदमाशों ने युवक को मारी गोली: 20 घंटे से रीढ़ की हड्डी में फंसी, पटना रेफर

सहरसा। मधेपुरा थाना क्षेत्र में शनिवार की रात करीब 10:30 बजे एक युवक को अज्ञात बदमाशों ने गोली मार दी। घायल की पहचान राहुल कुमार(24) के रूप में हुई है। घटमा के संबंध मे बताया जा रहा है कि राहुल कल रात बाइक से घर लौट रहे थे। इसी बीच सकरपुरा के पास बदमाशों ने उनकी बाइक को ओवरटेक कर रोकने का प्रयास किया। जब राहुल भागने लगे, तो अपराधियों ने पीछे से गोली चला दी। इसके बाद घायल ने सुनसान इलाके से परिजनों को फोन कर मदद मांगी। उन्हें पहले मधेपुरा मेडिकल कॉलेज ले जाया गया, जहां से हायर सेंटर रेफर कर दिया गया। इसके बाद उन्हें सहरसा के एक निजी क्लिनिक में भर्ती कराया गया। वहां से भी रविवार दोपहर को रेफर किए जाने के बाद उन्हें सहरसा सदर अस्पताल लाया गया। सहरसा सदर अस्पताल में एक्स-रे से पता चला कि गोली रीढ़ की हड्डी में फंसी हुई है। डॉक्टर अनिल कुमार ने ऑपरेशन की जटिलता को देखते हुए मरीज को हायर सेंटर रेफर कर दिया। घटना के 20 घंटे बाद भी गोली नहीं निकाली जा सकी थी। इसके बाद परिजन राहुल को बेहतर इलाज के लिए पटना ले गए। बता दें कि जख्मी युवक मधेपुरा के एक मॉल में कार्य कार्यरत है। जंहा से शनिवार के रात वो डयूटी खत्म होने के बाद वापस बाइक से घर लौट रहा था। मधेपुरा पुलिस मामले की जांच और कार्रवाई में जुटी है। परिजन राहुल के जल्द स्वस्थ होने की प्रार्थना कर रहे हैं। साथ ही अपराधियों की गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं।

मिट्टी में दबाकर रखी थी 523 लीटर विदेशी शराब, तस्कर फरार

मोतिहारी। गड़हिया थाना क्षेत्र में पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मिट्टी के अंदर छिपाकर रखी गई 523 लीटर विदेशी शराब बरामद की है। गुप्त सूचना के आधार पर की गई इस छापेमारी में तस्कर मौके से फरार हो गया, लेकिन पुलिस ने उसकी पहचान कर ली है। गड़हिया थानाध्यक्ष राजीव रंजन को शराब की बड़ी खेप की सूचना मिलते ही उन्होंने पुलिस अधीक्षक को सूचित किया और टीम के साथ कार्रवाई की। थानाध्यक्ष ने बताया कि तस्कर की जल्द गिरफ्तारी की जाएगी। उन्होंने कहा कि शराब तस्करों के खिलाफ अभियान लगातार जारी है और इस बरामदगी से तस्करों में खौफ बढ़ा है। बिहार में शराबबंदी के बावजूद तस्कर नए-नए तरीके अपनाकर अवैध कारोबार को अंजाम दे रहे है। पुलिस ने क्षेत्र के लोगों से अपील की है कि वे शराबबंदी अभियान को सफल बनाने में सहयोग करें और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को दे। पुलिस की सख्त कार्रवाई से तस्करों के मंसूबे लगातार नाकाम हो रहे है।

18 साल की युवती की संदिग्ध स्थिति में मौत

गोपालगंज। 18 साल की युवती की संदिग्ध स्थिति में मौत होने का मामला सामने आया है। जानकारी के अनुसार मांझागढ़ थाना क्षेत्र के गौसिया गांव निवासी दिगंबर यादव की बेटी सबिता कुमारी का शव उनके घर से बरामद किया गया है। घटना शनिवार देर रात की बताई जा रही है। लोगों के अनुसार, युवती रात में किसी से फोन पर बात कर रही थी। इसको लेकर परिजनों ने उसे डांट-फटकार लगाई। आशंका है कि इसी बात से आहत होकर युवती ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना के समय घर में उसकी मां और भाभी मौजूद थी। जबकि पिता और भाई घर से बाहर थे। थानाध्यक्ष संग्राम सिंह ने बताया कि फिलहाल मामला आत्महत्या का लग रहा है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मामले का खुलासा हो पाएगा। पुलिस ने युवती की भाभी को हिरासत में लिया है। फोरेंसिक टीम मौके पर जांच कर रही है। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए सदर अस्पताल भेजा गया है।

अवैध बूचड़खानों पर पुलिस ने मारा छापा

बेतिया। कालीबाग थाना पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर प्रतिबंधित मांस बिक्री के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। थाना क्षेत्र के मिस्कार टोला, वार्ड नंबर 10 में स्थित अवैध बूचड़खानों पर की गई छापेमारी में पुलिस ने 11 मवेशियों को मुक्त कराया। साथ ही मांस बिक्री से जुड़े कई आपत्तिजनक सामान जब्त किए। कालीबाग थानाध्यक्ष विवेक कुमार बालेंदु के नेतृत्व में की गई इस कार्रवाई में नगर थानाध्यक्ष मनोज कुमार सिंह भी मौजूद रहे। पुलिस को देखते ही प्रतिबंधित मांस के कारोबारी मौके से फरार हो गए। पुलिस अब इन कारोबारियों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार करने में जुटी है। थानाध्यक्ष बालेंदु ने बताया कि क्षेत्र में प्रतिबंधित मांस बेचे जाने की गुप्त सूचना मिलने के बाद यह छापेमारी की गई। पुलिस टीम अन्य संदिग्ध स्थानों पर भी लगातार छापेमारी कर रही है, ताकि इस अवैध कारोबार पर पूरी तरह से रोक लगाई जा सके।

पूर्व छात्र ने प्रिंसिपल पर चलवाई गोली

लड़की से अश्लील हरकत करते पकड़े जाने पर निकाला गया था, मामा समेत 2 अरेस्ट

नालंदा। स्कूल के पूर्व छात्र ने सेंट जोसेफ के प्रिंसिपल और संचालक डॉ. जोसेफ टीटी पर गोली चलवाई थी। पुलिस ने रविवार को इस मामले का खुलासा किया है। पुलिस ने बताया कि दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। वहीं, पूर्व छात्र समेत तीन लोग फरार है, जिसकी गिरफ्तारी को लेकर छापेमारी की जा रही है। घटना तीन दिन पहले दीपनगर थाना क्षेत्र स्थित एनएच-20 के किनारे कासिमचक के पास हुई थी। इस घटना के बाद एसपी भारत सोनी के निर्देश पर एसआईटी टीम गठित की गई। इस टीम ने सैयद नजफ जाफर अहमद उर्फ अयान (19) और आरफिन कुदरत उर्फ साजी (25) को बिहार थाना के रेलवे गुमटी के पास से गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार दोनों आरोपी

बिहार थाना क्षेत्र के रहने वाले हैं। गिरफ्तार दोनों आरोपियों ने पुलिस की पूछताछ में बताया कि लगभग दो साल पहले स्कूल से निष्कासित छात्र मो. रेयान ने बदले की भावना से इस घटना को अंजाम दिया। छात्र के मामा आरफीन कुदरत ने उसे हथियार मुहैया कराया था। कुल पांच लोगों ने मिलकर इस घटना को अंजाम दिया था। पुलिस के मुताबिक, आरोपी छात्र 10वीं क्लास में पढ़ता था। टीचर ने उसे अश्लील हरकत करते हुए पकड़ा था। इस घटना के बाद प्रिंसिपल ने छात्र को स्कूल से निकाल दिया गया था। इसके बाद छात्र ने अपनी बेइज्जती का बदला लेने के लिए प्लान तैयार की। पुलिस ने बताया कि 'आरोपी छात्र फरार है, जिसकी गिरफ्तारी को लेकर कार्रवाई की जा रही है। वहीं, फिलहाल प्रिंसिपल का इलाज चल रहा है और उनकी हालत बेहतर है। पुलिस ने बताया कि आरोपियों के पास से एक कार, एक जिंदा कारतूस और दो मोबाइल बरामद किए गए हैं।' आरोपी छात्र फिलहाल नीट की तैयारी कर रहा है। वह पिछले 2 साल से मौके की तलाश में था। सूत्रों के मुताबिक, 2 साल पहले मो. रेयान का उसी स्कूल की एक लड़की से अफेयर था। उस लड़की के साथ अश्लील हरकत करते हुए पकड़ा गया था, जिसके बाद दोनों बच्चों को स्कूल से निकाल दिया गया था। हालांकि, लड़की के परिवार के सिफारिश पर छात्रा को वापस रख लिया गया था। वो अभी भी उसी स्कूल में पढ़ती है।

शारीरिक शिक्षक ने सड़क पर मांगी भीख

भागलपुर में सरकार के खिलाफ जाहिर की नाराजगी, कहा- घर चलाने में हो रही परेशानी

भागलपुर। वेतन बढ़ोतरी की मांग को लेकर रविवार को शारीरिक शिक्षक सड़क पर उतर आए। यहां पर दर्जनों की संख्या में शारीरिक शिक्षकों ने दुकानदार रिक्शा चालक सहित लोगों से भीख मांगी और सरकार के प्रति नाराजगी जताई। सड़कों पर उतरे शारीरिक शिक्षकों का कहना है कि सरकार जितनी वेतन देती है, उतने में तो बच्चे का दूध भी नहीं होता है। परिवार को कैसे चलाएं? तीन साल पहले हम लोगों ने शिक्षा विभाग में शारीरिक शिक्षक के रूप में ज्वाइन किया था। लेकिन वेतन महज 8 हजार ही रहा।

तीन साल बाद भी वेतन में बढ़ोतरी नहीं हुई सड़कों पर उतरे शारीरिक शिक्षक का कहना है कि तीन साल पहले जिस घर में मिठाई बांटा गया था। अगल-बगल वाले बधाई देने के लिए आ रहे थे, आज वहीं जिनको मिठाई खिलाया गया था, उनसे मुंह मोड़ रहे हैं। सरकारी स्कूल के बच्चे चुस्त और दुरुस्त रहे। लेकिन, सरकारी स्कूल में शारीरिक शिक्षक को बहाल हुए तीन साल बीत गया। लेकिन, आज भी इनको सरकार की तरफ से मात्र आठ हजार वेतन दिया जा रहा है। जिससे इनका परिवार नहीं चल पा रहा है '।

मजबूरी में इनको भीख मांगना पड़ रहा है। आगे बताया कि हम शारीरिक शिक्षक के रूप में बहाल हुए थे, तो पास पड़ोस में रहने वाले लगातार बधाई दे रहे थे। लेकिन आज वही लोग हम लोगों से मुंह मोड़ रहे हैं। क्योंकि इन्हें डर लगता है कि कहीं हम कर्ज न मांग ले। महिला शिक्षक अपने बच्चों को गोद में लेकर भीख मांगती दिखी। इनका साफ तौर पर कहना था कि सरकार की ओर से जो वेतन हम लोगों को दिया जा रहा है। उस वेतन से बच्चे को दूध नहीं पिला पा रहे हैं। घर चलाना तो दूर की बात हो गई है, हम लोगों ने मैदान में पसीना बहाया। उसके बाद हम लोग लिखित और शारीरिक परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। आज हम लोगों से बढ़िया ठेला वाला और रिक्शावाला है। क्योंकि इन्हें उतनी आमदनी हो जाती है कि परिवार का भरण-पोषण कर पाए। उस लोगों से भी हम लोगों की स्थिति दयनीय है।

सांसद ने मल्टीस्पोर्ट कोर्ट का किया उद्घाटन

सारण। राजेंद्र स्टेडियम परिसर में 89 लाख रुपए की लागत से मल्टीस्पोर्ट बॉक्स ग्राउंड खिलाड़ियों के लिए बनकर तैयार हो गया है। सांसद राजीव प्रताप रूडी, जिलाधिकारी अमन समीर और एसपी कुमार आशीष ने संयुक्त रूप से इस आधुनिक खेल परिसर का उद्घाटन किया।

यह मल्टीस्पोर्ट कोर्ट अपनी तरह का अनूठा मैदान है। जहां एक ही स्थान पर क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन, टेनिस और वॉलीबॉल जैसे विभिन्न खेलों का आयोजन किया जा सकेगा। मैदान में फ्लड लाइट्स की व्यवस्था की गई है, जिससे खिलाड़ी रात में भी प्रैक्टिस कर सकेंगे। विशेष रूप से स्कूली बच्चों को ध्यान में रखते हुए यह सुविधा विकसित की गई है, ताकि वे दिन में पढ़ाई के बाद शाम को खेल का अभ्यास कर सकें। मैदान में दो विशेष क्रिकेट पिच भी बनाई गई हैं। जहां सॉफ्ट और ड्यूज बॉल से प्रैक्टिस की जा सकेगी। साथ ही, छोटे बच्चों के लिए टेनिस बॉल का भी निर्माण किया गया है। जहां वे टेनिस की प्रारंभिक ट्रेनिंग ले सकेंगे।

सांसद रूडी ने इस पहल को शहर के लिए एक महत्वपूर्ण कदम बताया और स्थानीय डॉक्टरों और व्यवसायियों से इस खेल परिसर के रखरखाव में सहयोग की अपील की है।

3 शातिर अपराधी गिरफ्तार

एटीएम मशीन में कार्ड फंसाकर करते थे ठगी

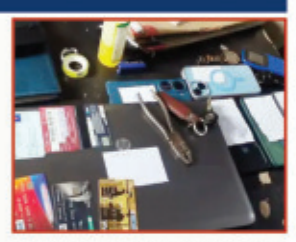

पटना। दानापुर पुलिस ने एटीएम मशीन में कार्ड फंसाकर ठगी करने वाले अंतरराज्यीय गिरोह का पदार्फाश किया है। 3 सदस्यों को गिरफ्तार किया है। 7 एटीएम, 15 हजार कैश, 2 बाइक और एक लैपटॉप बरामद हुआ है। एएसपी भानु प्रताप सिंह ने बताया कि 21 अक्टूबर 2024 को दर्ज शिकायत के आधार पर कार्रवाई की गई है। सीतामढ़ी के मेजरगंज निवासी अभिजीत कुमार से 18 हजार रुपए की ठगी हुई थी। गिरफ्तार अपराधियों की पहचान नवादा के रवि कुमार उर्फ अभिराज, गोपाल कुमार और गया के चंदन कुमार के तौर पर हुई है। अपराधियों ने पूछताछ में बताया कि एटीएम में फेवीक्विक लगाकर कार्ड फंसा देते थे। मशीन पर हेल्पलाइन नंबर की जगह अपना नंबर चिपका देते थे। परेशान लोगों को बातों में उलझाकर कार्ड बदल लेते थे। गिरोह के 20 से अधिक सदस्य बिहार सहित कई राज्यों में एक्टिव है। एएसपी भानु प्रताप सिंह ने आगे बताया कि तीनों आरोपियों क्रिमिनल रिकॉर्ड है। रवि उर्फ अभिराज पर 6 केस, चंदन पर 7 और गोपाल कुमार पर 5 आपराधिक मामले दर्ज है। अपराधियों के पास से 2 घड़ी और 6 मोबाइल भी मिला है। पूछताछ के बाद सभी को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है।

पुलिस टीम पर ईंट-पत्थर से हमला, थानाध्यक्ष सहित 5 चोटिल

बेगूसराय में जमीन कब्जा करने को लेकर बवाल, पुलिस वाहन क्षतिग्रस्त

बेगूसराय। जमीन को लेकर बवाल हुआ है। एक पक्ष की जमीन जोतने की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस पर ईंट-पत्थर से हमला किया गया। जिसमें थानाध्यक्ष सहित 5 पुलिसकर्मी चोटिल हो गए हैं। घटना बखरी थाना क्षेत्र के प्राणपुर गांव की है। बवाल की सूचना मिलते ही एसपी मनीष और बखरी डीएसपी सहित आसपास के सभी थाना की पुलिस मौके पर पहुंची। बवाल को शांत करवा दिया गया है। चोटिल पुलिस कर्मियों का इलाज बखरी पीएचसी में कराया गया है। मामले की जांच-पड़ताल चल रही है। एसआई अर्चना कुमारी, एसआई पुष्पलता, एएसआई कुंदन कुमार, चालक चंदन कुमार आदि का बखरी पीएचसी में चल रहा है। एक पुलिस वाहन क्षतिग्रस्त है। बखरी थानाध्यक्ष फैसल अहमद अंसारी

भी चोटिल हुए हैं। 5 स्थानीय लोगों को भी आई आई है। एक घर में भी आग लगा दिया गया। प्राणपुर में खाता नंबर-1 और खेसरा नंबर-396 के 16 बीघा जमीन के प्लॉट पर 2 साल पहले 150 महादलितों ने घर बना लिया था। जमीन के जोतदार मालिक अबू नसर और सादिक अख्तर आदि मामले को कोर्ट में ले गए। 17 अगस्त 2024 को अनुमंडल कोर्ट से इन लोगों के पक्ष में फैसला सुनाया और गढ़पुरा सीओ को जमीन खाली कराने का आदेश दिया। लेकिन, जमीन खाली नहीं कराया जा रहा था। आज इसी जमीन को लेकर बवाल हो गया। बवाल की सूचना पर पुलिस जब पहुंची तो पुलिस पर भी हमला किया गया। मोहम्मद सादिक का कहना है कि करीब 16 बीघा का यह प्लॉट हम लोगों का है। इस पर महादलित समुदाय के लोगों ने रातों-रात जबरदस्ती घर बना लिया था। हम लोग कोर्ट गए तो कोर्ट ने हमारे पक्ष में फैसला सुनाया। आज जब वहां से गुजर रहे थे तो उसी जमीन पर ट्रैक्टर चलता देखा। हमने पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची तो लोगों ने हमला कर दिया। स्थानीय भू-माफिया अब्दुल सलाम और मोहम्मद वकील के सहयोग से खगड़िया के बहादुरपुर निवासी रुपकांत राय का ट्रैक्टर मंगवा कर खेत जोत रहे थे। पुलिस को हमने सूचना दी। हम लोग नहीं भागते तो बौयेलाल सदा, योगेंद्र सदा, त्रिवेणी सदा, अमीर सदा, मलेछू सदा, मोहन सदा, बिरंची सदा, सुरेश सदा सहित 40-50 महिला और पुरुष थे, वह हम लोगों की भी हत्या कर देते। वह लोग हथियार से भी लैश थे। दूसरे पक्ष का कहना है कि यह बकास मालिक का जमीन है, जमींदार कहता है हमारी जमीन है। वह लोग आज प्रशासन को लेकर आए, हमारी मां-बहनों पर लाठी चलाना शुरू कर दिया। हम लोगों ने कहा कि सरकार की जमीन पर घर बनाए हुए हैं, वही जोत रहे हैं। इतना कहते ही पुलिस ने लाठी चलाना शुरू कर दिया। हम लोग को देखने वाला कोई नहीं है। जमीन खाली करने का नोटिस एसडीओ की ओर से आया था। हम मानवाधिकार आयोग और महादलित आयोग में गए। सबको आवेदन दिए, प्रशासन को हम कह रहे थे कि ट्रैक्टर जुतवा रहे थे तो प्रशासन ने उसे पकड़ लिया। हम लोग उसे छोड़ने के लिए कह रहे थे, प्रशासन का कहना था कि यह जमीन तुम्हारी नहीं है। हमारे पक्ष के कई लोगों पर विभिन्न तरह का केस कर दिया। आज हम लोग उस जमीन पर सब्जी लगाने के लिए ट्रैक्टर से जुतवा रहे थे। तभी वह लोग आए और मारपीट किया, हमारे घरों में आग लगा दिया। पुलिस भी उन्हीं लोगों के पक्ष में आई और हमारे परिवार के महिलाओं के साथ मारपीट किया।

विघ्नहर्ता गणेश को ऐसे मनाएं

विघ्नहर्ता विनायक भगवान गणेश की पूजा यदि सच्चे मन से की जाए तो हर समस्या का समाधान संभव है। बुधवार भगवान गणेश का दिन होता है। बुधवार को गणेश की पूजा करें तो संतान, शिक्षा और भाग्य समृद्ध होता है। गणपति की उपासना से कुंडली के अशुभ योग भी खत्म हो जाते हैं। इसीलिए कलयुग में उन्हें विघ्नविनाशक के रूप में पूजा जाता है। श्रीगणेश जी की बुधवार को पूजा करने का विधान हमारे धर्मग्रंथों में मौजूद है।

बुधवार को प्रात:काल में स्नानादि से निवृत होकर ताम्र पत्र के श्री गणेश यन्त्र को नमक, नींबू से अच्छे से साफ करें। यंत्र को शुद्ध जल से धोने के बाद पूजा स्थल पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख कर के आसान पर विराजमान हो कर सामने श्री गणेश यन्त्र की स्थापना करें। आसान पर बैठने के बाद दांयी हथेली में जल ले कर आसान व भूमि पर जल छिड़कते हुए नीचे लिखे मंत्र को पढ़ें....

ऊं अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा।
य: स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्यभ्यन्तर: शुचि:।।

अब गणेश यंत्र को शुद्ध जल चढ़ाते हुए मंत्र बोले

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलऽस्मिन्सन्निधिं कुरु।।

यदि आप इस मंत्र की आराधना सच्चे मन से करते हैं तो आपकी मनोकामना जरूर पूरी होती है।

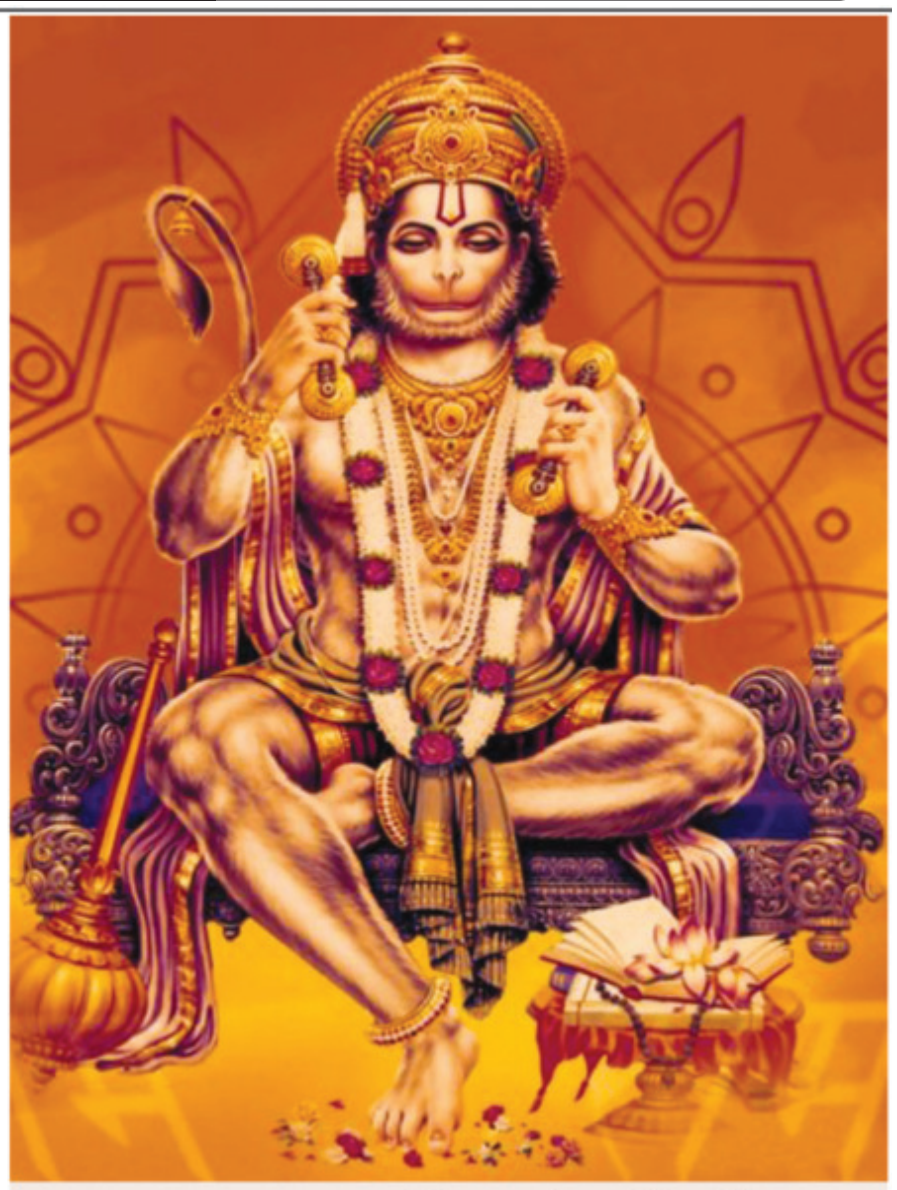

फलदायी होती हैं हनुमान चालीसा की ये चौपाइयां

हनुमानजी की स्तुति हनुमान चालीसा से हम सभी परिचित हैं। हनुमान चालीसा की रचना गोस्वामी तुलसीदास जी ने की थी। हिंदू धर्म ग्रंथों में उल्लेखित है कि बाल्यकाल में जब हनुमानजी ने सूर्य को मुंह में रख लिया तब सूर्य को मुक्त कराने के लिए देवराज इंद्र ने हनुमानजी पर शस्त्र से प्रहार किया। इसके बाद हनुमान जी मूर्छित हो गए। हनुमानजी के मूर्छित होने की बात जब वायु देव को पता चली तो काफी नाराज हुए। लेकिन जब सभी देवताओं को पता चला कि हनुमानजी भगवान शिव के रुद्र अवतार हैं, तब सभी देवताओं ने हनुमानजी को कई शक्तियां दीं। देवताओं ने जिन मंत्रों और हनुमानजी की विशेषताओं को बताते हुए उन्हें शक्ति प्रदान की थी, उन्हीं मंत्रों के सार को गोस्वामी तुलसीदास ने हनुमान चालीसा में वर्णित किया है। हनुमान चालीसा में मंत्र नहीं है लेकिन हनुमानजी की पराक्रम की विशेषताएं बताई गई हैं। हनुमान चालीसा में ही ऐसी 5 चौपाईयां हैं, जिनका यदि नियमित सच्चे मन से वाचन किया जाए तो यह परम फलदायी सिद्ध होती हैं। हनुमान चालीसा का वाचन मंगलवार या शनिवार करना शुभ होता है। ध्यान रखें हनुमान चालीसा की इन चौपाइयों को पढ़ते समय उच्चारण की त्रुटि न करें।

भूत-पिशाच निकट नहीं आवे। महावीर जब नाम सुनावे।।

उपाय- यदि व्यक्ति को किसी भी प्रकार का भय सताता है तो नित्य रोज प्रातः और सायंकाल में 108 बार इस चौपाई का जाप किया जाये तो सभी प्रकार के भय से मुक्ति मिलती है।

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बल बीरा।।

उपाय- यदि व्यक्ति बीमारियों से घिरा रहता है तो निरंतर सुबह-शाम 108 बार जप करके तथा मंगलवार को हनुमान जी की मूर्ति के सामने पूरी हनुमान चालीसा के पाठ से रोगों की पीड़ा खत्म हो जाती है।

अष्ट-सिद्धि नवनिधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।

उपाय- यदि जीवन में व्यक्ति को शक्तियों की प्राप्ति करनी है ताकि जीवन निर्वाह में मुश्किलों का कम सामना करना पड़े तो नित्य रोज, ब्रह्म मुहूर्त में आधा घंटा इन पंक्तियों के जप से लाभ प्राप्त हो सकता है।

विद्यावान गुनी अति चातुर। रामकाज करीबे को आतुर।।

उपाय- यदि किसी व्यक्ति को विद्या और धन चाहिए तो इन पंक्तियों के जप से हनुमान जी का आशीर्वाद प्राप्त हो जाता है। प्रतिदिन 108 बार ध्यानपूर्वक जप करने से व्यक्ति के धन सम्बंधित दुःख दूर हो जाते हैं।

भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचंद्रजी के काज संवारे।।

उपाय- यदि कोई व्यक्ति शत्रुओं से परेशान है या व्यक्ति के कार्य नहीं बन पा रहे है तो हनुमान चालीसा की इस चौपाई का कम से कम 108 बार जप करना चाहिए।

जैन मुनि को केश-लोचन करना अनिवार्य होता है

हाल ही में गुजरात 12वीं बोर्ड में 99.99 प्रतिशत हासिल करने वाले वर्शिल शाह जैन, जैन संत बन गए हैं। वर्शिल महज 17 साल के हैं और गुजरात के ही पालड़ी के रहने वाले हैं। दर्शिल अब जैन मुनि सुवीर्य रत्न विजयजी महाराज के नाम से जाने जाएंगे। पिछले वर्षों में गौर किया जाए तो युवाओं द्वारा संन्यास लेने की सिलसिला काफी बढ़ा है। जैन धर्म के अनुयायियों के लिए भले ही यह पूरा घटनाक्रम सकारात्मक हो, लेकिन जैन धर्म के इतिहास पर नजर डालें तो पाएंगे कि जैन धर्म में संन्यास लेने वाले अनुयायी को मुनि की उपाधि दी जाती है। संन्यास लेने के बाद जैन मुनि को निर्ग्रन्थ भी कहा जाता है। मुनि शब्द पुरुषों के लिए तो आर्यिका शब्द स्त्री संन्यासियों को संबोधित किया जाता है। प्रत्येक जैन मुनि को केश-लोच करना अनिवार्य होता है।

तो क्या इतना प्राचीन है जैन धर्म

जैन धर्म ग्रंथों के अनुसार यह धर्म अनादि और सनातन है। यदि आर्यों के भारत आने के बाद से भी देखा जाये तो ऋषभदेव और अरिष्टनेमि को लेकर जैन धर्म की परंपरा वेदों तक पहुंचती है। पुराणों में वर्णित है महाभारत के युद्ध के समय इस संप्रदाय के प्रमुख नेमिनाथ थे, जो जैन धर्म में मान्य तीर्थंकर हैं। आठवीं सदी में 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ हुए, जिनका जन्म काशी में हुआ था। काशी के पास ही 11वें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ का जन्म हुआ था। इन्हीं के नाम पर सारनाथ का नाम प्रचलित है। जैन धर्म में श्रमण संप्रदाय का पहला संगठन पार्श्वनाथ ने किया था। ये श्रमण वैदिक परंपरा के विरुद्ध थे। महावीर तथा बुद्ध के काल में ये श्रमण कुछ बौद्ध तथा कुछ जैन हो गए थे। इन दोनों ने अलग-अलग अपनी शाखाएं बना लीं। भगवान महावीर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे, जिनका जन्म लगभग ई.पू. 599 में हुआ और जिन्होंने 72 वर्ष की आयु में देहत्यागी। महावीर स्वामी ने शरीर त्यागने से पहले जैन धर्म की नींव काफी मजबूत कर दी थी। अहिंसा को उन्होंने जैन धर्म में अच्छी तरह स्थापित कर दिया था। सांसारिकता पर विजयी होने के कारण वे जिन (जयी) कहलाए। उन्हीं के समय से इस संप्रदाय का नाम जैन हो गया।

क्या आप भी भगवान को फूल चढ़ाते हैं

राजा राम मोहन राय के बगीचे में बड़े ही सुंदर फूलों के पेड़ लगे थे। एक व्यक्ति था जो हर रोज वहां आता और उनसे पूछे बिना ही पूजा के लिए फूल तोड़ कर ले जाता। यह सिलसिला लगातार कई दिनों तक चलता रहा। रोज की तरह ही एक दिन उस व्यक्ति ने फूल तोड़ने के लिए अपनी चादर उतारी और पेड़ पर लटका कर फूल तोड़ने लगा। उसी समय राजा राम मोहन राय के आदेशानुसार एक सेवक ने उस व्यक्ति की वह चादर उठा ली और राजा राम मोहन राय को दे दी।

फूल तोड़ने के बाद जब वह व्यक्ति अपनी चादर लेने के लिए उस पेड़ के पास गया, जहां उसने उसे लटकाई थी, तो वहां चादर न देख वह हैरान रह गया और सोचने लगा कि आखिर उसकी चादर गई कहां? वह गुस्से से आग-बबूला हो गया। कुछ देर बाद राजा राम मोहन राय आए और उन्होंने उस व्यक्ति को उसकी चादर लौटाते हुए कहा, 'अब तो खुश हैं आप, आपको आपकी चादर वापस मिल गई।

उस व्यक्ति ने गुस्से में ही जवाब दिया, खुश? इसमें खुश होने वाली कौन-सी बात है, मुझे अपनी ही वस्तु मिली है।''

राजा राम मोहन राय ने उस व्यक्ति से पूछा, आप रोज फूल तोड़कर कहां ले जाते हैं?

उस व्यक्ति ने जवाब दिया, मैं ये फूल तोड़कर मंदिर में ले जाता हूं। भगवान को खुश करने के लिए उनको ये फूल अर्पित करता हूं।

राजा राम मोहन राय ने उस व्यक्ति का यह जवाब सुनकर कहा, पहली बात तो यह कि आप बिना पूछे ही फूल तोड़कर ले जाते हैं। चलो कोई बात नहीं, लेकिन आप भगवान की दी हुई वस्तु भगवान को अर्पित करते है, तो इससे भगवान खुश होते हैं क्या?

उस व्यक्ति ने कहा, क्यों नहीं, भगवान को फूल ही तो पसंद हैं, भगवान को फूलों से खुशी मिलती है।

राजा राम मोहन राय ने उस व्यक्ति से कहा, तो आपको चादर मिलने पर खुशी क्यों नहीं हुई?

राजा राम मोहन राय की यह बात सुनकर वह व्यक्ति सोच में पड़ गया और राजा राम मोहन राय बिना कुछ और कहे लौट गए।

संसार का हर धर्म शुभ-अशुभ और पाप-पुण्य के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। अच्छे-बुरे या पाप-कर्म और पुण्य कर्म का चयन मनुष्य स्वयं करता है। यदि हम हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार विचार करें तो सगुण ईश्वर का अवतार अशुभ के विनाश के लिए ही होता है। जैसा कि गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं जब-जम अधर्म का विस्तार होता है मैं धर्म की स्थापना के लिए अवतार ग्रहण करता हूं।

पाप-कर्म और पुण्य-कर्म का चयन मनुष्य स्वयं करता है

शुभ और अशुभ व पुण्य और पाप की समस्या कर्म-फल-सिध्दांत पर आधारित हैं। जीव यदि अशुभ कर्मों की ओर प्रेरित होता है तो इसके पीछे उसकी अल्पज्ञता, अज्ञान होता है। संसार का हर धर्म शुभ-अशुभ और पाप-पुण्य के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। ईसाई धर्म में ईश-चिंतन के संदर्भ में उक्त विचारधारा प्राप्त होती है। ईश्वर परम शुभ है। अतः उस पर पाप या अशुभ का आरोपण नहीं किया जा सकता। बाइबिल में काम-वासना को पाप या अशुभ की संज्ञा दी गई है और उसका शैतान कहा गया है। ईसाई नीतिशास्त्र में पाप या अशुभ पर विचार करते हुए कतिपय महत्वपूर्ण प्रश्न उठाए गए हैं। इस संसार का निर्माण परमेश्वर ने किया, किन्तु संसार में सर्वत्र पाप ही पाप है। यदि ईश्वर ने सृष्टि की रचना की और ईश्वर शुभ और सर्वशक्तिमान है तो सृष्टि में शुभ ही शुभ होना चाहिए। ईसाई धर्म के अनुसार ईश्वर ने मनुष्य को कर्म की स्वतंत्रता प्रदान की है। अतः अच्छे-बुरे या पाप-कर्म और पुण्य कर्म का चयन मनुष्य स्वयं करता है। यदि हम हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार विचार करें तो सगुण ईश्वर का अवतार अशुभ के विनाश के लिए ही होता है। जैसा कि गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं जब-जम अधर्म का विस्तार होता है मैं धर्म की स्थापना के लिए अवतार ग्रहण करता हूं। बाइबिल में ईसा मसीह को पुत्रेश्वर कहा गया है। परमेश्वर के पुत्र के रूप में ईसा मसीह संसार के पापों को दूर करने के लिये-ही धरती पर आए थे।

मालवा की वैष्णो देवी नीमच की भादवा माता

गुप्त नवरात्र शुरू हो गए हैं। इस मौके पर हम आपको एक ऐसे शक्तिपीठ के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि उनकी कृपा से शहर में कोई भूखा नहीं सोता। किसी के पास पैसे की तंगी नहीं रहती है। लोक कथाओं के अनुसार, हरसिद्धि मंदिर में उज्जैन के राजा रहे विक्रमादित्य की आराध्य देवी का वास है। शिवपुराण के अनुसार दक्ष प्रजापति के हवन कुंड में माता के सती हो जाने के बाद भगवान भोलेनाथ सती को उठाकर ब्रह्मांड में ले गए थे। इस दौरान माता सती के अंग जिन स्थानों पर गिरे, वहां शक्तिपीठ स्थापित हो गए। कहा जाता है इस स्थान पर माता के दाहिने हाथ की कोहनी गिरी थी और इसी कारण से यह स्थान भी एक शक्तिपीठ बन गया है। स्कंद पुराण के अनुसार, देवी को चंड एवं मुंड नामक राक्षस के वध के लिए भगवान शिव से सिद्धि मिली थी, इसीलिए वह हरसिद्धि कहलाईं। गर्भगृह में एक शिला पर श्रीयंत्र उत्कीर्ण है, जो शक्ति का प्रतीक है। यहां माता लक्ष्मी, महासरस्वती के साथ ही अन्नपूर्णा माता विराजमान हैं। यह स्थान उज्जैन के प्राचीन देवी स्थानों में अपना विशेष महत्व रखता है। वर्तमान में मंदिर के पुनर्निर्माण का श्रेय मराठों को जाता है। मंदिर के सामने मराठा वास्तुकला के अनुसार दीप स्तंभ स्थापित किए गए हैं, जिनमें 1001 दिये बने हुए हैं। दक्षिण में बनी एक बावड़ी पर 1447 संवत का एक शिलालेख भी उत्कीर्ण है। मंदिर के मुख्य पुजारी पंडित शेषनारायण गोस्वामी ने बताया कि गर्भगृह में सबसे ऊपर विराजमान हैं मां अन्नपूर्णा, जिनकी वजह से उज्जैनी में हमेशा भंडारे चलते रहते हैं। कहा जाता है कि उनकी कृपा से उज्जैन में कोई भूखा नहीं सोता है। बीच में मां लक्ष्मी के स्वरुप में है, जिनकी वजह से किसी को भी लक्ष्मी की कमी नहीं आती। सबसे नीचे विराजित हैं महाकाली।

घरेलू क्रिकेट को कोई हल्के में नहीं लेता : रोहित

मुम्बई के खिलाफ रणजी ट्रॉफी में खेलने तैयार हूं

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने कहा है कि वह मुम्बई की ओर से रणजी ट्रॉफी क्रिकेट मैच खेलेंगे। ऑस्ट्रेलिया दौरे में टीम के खराब प्रदर्शन के बाद क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने सभी खिलाड़ियों के लिए घरेलू क्रिकेट खेलना अनिवार्य कर दिया है। वहीं रोहित ने कहा कि कोई भी खिलाड़ी घरेलू प्रतियोगिता को हल्के में नहीं लेता है पर अंतरराष्ट्रीय कैलेंडर के व्यस्त कार्यक्रम के कारण ही खिलाड़ी घरेलू क्रिकेट नहीं खेल पाते हैं।रणजी ट्रॉफी का दूसरा चरण 23 जनवरी से शुरू हो रहा है। इसमें मुंबई की टीम जम्मू-कश्मीर का मुकाबला करेगी। हाल के दिनों में खराब प्रदर्शन के कारण आलोचना झेल रहे रोहित ने कहा कि

पिछले 6 से 7 साल से अगर आप हमारे कैलेंडर को देखें तो ऐसा कभी नहीं हुआ कि हम 45 दिनों तक घर बैठे रहे हो। ऐसा तभी होता है जब आईपीएल समाप्त होने के तत्काल बाद कोई अंतरराष्ट्रीय मैच नहीं होता है। भारतीय कप्तान ने कहा कि हमारा घरेलू सत्र अक्टूबर में शुरू होता है और मार्च तक चलता है। वहीं जो खिलाड़ी राष्ट्रीय टीम के लिए सभी प्रारूप नहीं खेल रहे होते हैं तो वह घरेलू क्रिकेट में खेल सकते हैं। उन्होंने कहा कि मैं अपनी बात करूं तो मैंने 2019 से नियमित रूप से टेस्ट क्रिकेट खेलना शुरू किया दिया है। ऐसे में आपको मुश्किल से ही समय मिलता है।

जब आप नियमित रूप से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेलते हैं, तो आपको तरोताजा होने के लिए समय की जरूरत होती है। ऐसा नहीं है कि कोई घरेलू क्रिकेट को हल्के में ले रहा है। उन्होंने टेस्ट में अपनी पिछली 15 पारियों में केवल एक अर्धशतक बनाने के बाद भी इस प्रारूप से संन्यास लेने से मना कर दिया है। रोहित हाल के ऑस्ट्रेलिया दौर में असफल रहे थे और 5 पारियों में सिर्फ 31 रन ही बना सके थे। इससे पहले न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेल सीरीज में भी वह बड़ा स्कोर नहीं बना पाये थे।

बोपन्ना-शुआई की जोड़ी ऑस्ट्रेलियाई ओपन मिश्रित युगल के क्वार्टर फाइनल में पहुंची

नई दिल्ली (एजेंसी)। मेलबर्न - अनुभवी भारतीय टेनिस खिलाड़ी रोहन बोपन्ना और चीन की उनकी जोड़ीदार झांग शुआई ने रविवार को यहां दूसरे दौर के मैच में वॉकओवर मिलने के बाद ऑस्ट्रेलियाई ओपन टेनिस टूर्नामेंट के मिश्रित युगल स्पर्धा के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

बोपन्ना और शुआई का मुकाबला अमेरिका की टेलर टाउनसेंड और मोनाको के ह्यूगो निस से था, लेकिन यह चौथी वरीयता प्राप्त जोड़ी खेलने के लिए नहीं उतरी। इससे भारतीय-चीनी जोड़ी कोर्ट पर उतरे बिना ही अंतिम आठ में पहुंच गई। बोपन्ना और शुआई का अगला मुकाबला हंगरी की टिमिया बाबोस और अल साल्वाडोर के मार्सेलो अरेवलो तथा ओलिविया गैडेकी और जॉन पीयर्स की ऑस्ट्रेलियाई जोड़ी के बीच होने वाले मैच के विजेता से होगा।

बोपन्ना और शुआई की जोड़ी ने इससे पहले अपने शुरुआती मैच में फ्रांस की क्रिस्टीना म्लादेनोविच और क्रोएशिया के इवान डोडिक को 6-4, 6-4 से हराया था।

आईपीएल 2025: लखनऊ सुपर जायंट्स की कप्तानी संभाल सकते हैं ऋषभ पंत

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्टार भारतीय विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋषभ पंत को इंडियन प्रीमियर लीग 2025 संस्करण से पहले संजिका गोयनका के स्वामित्व वाली लखनऊ सुपर जायंट्स का कप्तान बनाया जा सकता है। दाएं हाथ के बल्लेबाज केएल राहुल को आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी से पहले लखनऊ फ्रैंचाइजी ने रिटेन नहीं किया जबकि उन्होंने कैश-रिच लीग के अपने पहले दो संस्करणों में टीम को प्लेऑफ में पहुंचाया था। राहुल को रिटेन न करने के बाद LSG टीम के पास पंत और श्रेयस अय्यर के बीच भूमिका के लिए चयन करने के लिए दो विकल्प थे इसलिए फ्रैंचाइजी और प्रबंधन ने पूर्व के साथ जाने का विकल्प चुना।

पंत इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के इतिहास में सबसे महंगे खिलाड़ी बन गए जिन्हें जेद्दा में आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी के दौरान लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) ने 27 करोड़ रुपए में खरीदा। LSG फ्रैंचाइजी इस टूर्नामेंट में दिल्ली कैपिटल्स (डीसी) के बाद दूसरी टीम होगी। उन्होंने हमवतन श्रेयस अय्यर को हराया, जो कुछ मिनट पहले ही पंजाब किंग्स द्वारा 26.75 करोड़ रुपए में खरीदे गए लीग के इतिहास में सबसे महंगे खिलाड़ी बने थे। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के मिशेल स्टार्क को पछाड़ा जिन्होंने 24.75 करोड़ रुपए की स्किॉर्ड तोड़ बोली के साथ वर्षों बाद आईपीएल में वापसी की थी।

शुरू में रूत और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बीच बोली लगाने की जंग हुई, जिसमें बाद में हार मान ली गई। सनराइजर्स हैदराबाद ने अपने विस्फोटक बल्लेबाजी आक्रमण को मजबूत करने की कोशिश में बोली लगाने की जंग में प्रवेश किया और DC ने 'राइट टू मैच' कार्ड का इस्तेमाल करने की कोशिश की, लेकिन वे पंत के लिए LSG द्वारा लगाई गई कीमत से मेल नहीं खा सके और वे अय्यर से भी आगे निकल गए।

पंत ने 2016 से अपने पूरे आईपीएल करियर में दिल्ली कैपिटल्स का प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने 110 मैचों में 35.31 की औसत से 3,284 रन बनाए हैं जिसमें एक शतक और 18 अर्द्धशतक शामिल हैं। उन्हें 2021 में टीम का कप्तान नियुक्त किया गया और उन्होंने उसी सीजन में उन्हें प्लेऑफ में पहुंचाया। आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी से पहले LSG ने अनकैप्ड स्टार मोहसिन खान और आयुष बदोनी के साथ निकोलस पूरन, मयंक यादव और रवि बिश्नोई को रिटेन किया। लखनऊ स्थित फ्रैंचाइजी ने 14 में से सात मैच जीतकर 14 अंकों के साथ स्टैंडिंग में 7वें स्थान पर अपना आईपीएल 2024 का सफर समाप्त किया।

भारतीय महिला टीम ने अंडर-19 टी-20 विश्वकप में वेस्टइंडीज को हराया

क्वालालंपुर (एजेंसी)। पारूनिका सिसोदिया (तीन विकेट), आयुषी शुक्ला और वीजे जोशिता (दो-दो) विकेट की बेहतरीन गेंदबाजी के बाद सनिका चलके (नाबाद 18) और जी कामिलीनी (नाबाद16) शानदार पारियों की बदौलत भारतीय महिला टीम ने रविवार को अंडर-19 टी-20 विश्वकप में वेस्टइंडीज को 9 विकेट से हरा दिया हैं।

आज यहां भारतीय टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज की टीम भारतीय गेंदबाजी आक्रमण के आगे नहीं टिक सकी। भारतीय गेंदबाजों ने महज 13.2 ओवर में वेस्टइंडीज की

टीम को 44 के स्कोर पर समेट दिया। वेस्टइंडीज की ओर से असाबी कॉलेंडर (12) और केनिका कसार (15) के अलावा कोई भी बल्लेबाज दहाई आंकड़े तक नहीं पहुंच सका।

भारत की ओर से तेज गेंदबाज वीजे जोशिता ने एक ही ओवर में दो विकेट झटके जबकि बाएं हाथ की स्पिन जोड़ी आयुषी शुक्ला और पारुनिका सिसोदिया ने लगातार दो ओवर के अंतराल पर दो विकेट झटकर 5.1 ओवर में वेस्टइंडीज का स्कोर 17 पर चार विकेट कर दिया। इसके बाद भारतीय खिलाड़ियों ने वेस्टइंडीज के तीन खिलाड़ियों को रनआउट किया।

इसके बाद बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम ने जी तृषा (चार) का विकेट गवाने के बाद जी कमालिनी (नाबाद 16) और सनिका चलके(नाबाद 16) ने मिलकर पांचवें ओवर की दूसरी गेंद पर 47 रन बनाकर मुकाबला जीत लिया। वेस्टइंडीज की ओर से जी क्लैसटन को एकमात्र विकेट मिला।

बांग्लादेश के पूर्व कप्तान शाकिब अल हसन फिर मुश्किलों में, गिरफ्तारी वारंट जारी

ढाका । ढाका की एक अदालत ने रविवार को बांग्लादेश के ऑलराउंडर और अवामी लीग के पूर्व सांसद शाकिब अल हसन के खिलाफ दो बैंक चेक बाउंस होने के मामले में गिरफ्तारी वारंट जारी किया। पिछले साल नागरिक अशांति के कारण अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना को देश छोड़कर भागने पर मजबूर होना पड़ा था, जिसके बाद से शाकिब अपनी जान को खतरा होने के डर से बांग्लादेश नहीं लौटे हैं। अदालत के एक अधिकारी ने बताया, 'अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट जियादुर रहमान ने गिरफ्तारी वारंट जारी करते हुए पुलिस से 24 मार्च को आदेश के क्रियान्वयन पर रिपोर्ट पेश करने को कहा है।' उन्होंने कहा कि वारंट इसलिए जारी किया गया क्योंकि हसन जो एक कृषि फार्म के अध्यक्ष भी हैं, चेक बाउंस होने से संबंधित एक मामले में पहले दिए गए आदेश के अनुसार अदालत में पेश नहीं हुए। फार्म के प्रबंध निदेशक गाजी शाहगीर हुसैन के खिलाफ भी इसी तरह का एक और वारंट जारी किया गया क्योंकि उन्होंने भी समन का जवाब नहीं दिया। इंटरनेशनल फाइनेंस इन्वेस्टमेंट एंड कॉमर्स (आईएफआईसी) बैंक ने क्रिकेटर के खिलाफ मामला दर्ज कराया था। आईएफआईसी बैंक ने पिछले साल अक्टूबर में चेक बाउंस होने के मामले में कानूनी नोटिस जारी किया था। इसके बाद 24 दिसंबर को क्रिकेटर से व्यवसायी बने और उनकी कंपनी के तीन अन्य अधिकारियों के खिलाफ मामला दर्ज कराया गया। फार्म के दो अधिकारियों ने आज अदालत के समक्ष आत्मसमर्पण किया और जमानत की गुहार लगाई जिसे अदालत ने सुनवाई के बाद मंजूर कर लिया। बांग्लादेश की राष्ट्रीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान शाकिब ने 2016 में दक्षिण-पश्चिमी सतखीरा में शाकिब अल हसन एग्रो फार्म नाम से एक केकड़ा फार्म स्थापित किया था। कंपनी कथित तौर पर 2021 से निष्क्रिय है।

श्रीलंका दौरे से पहले ऑस्ट्रेलिया को लगा झटका, बड़े खिलाड़ी को कोहनी में लगी चोट

नई दिल्ली - श्रीलंका के टेस्ट दौरे के लिए ऑस्ट्रेलिया के कप्तान स्टीव स्मिथ की कोहनी में चोट लग गई है, लेकिन उनके इस सप्ताह के अंत में दुबई में प्री-टूर कैंप में शामिल होने की उम्मीद है। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने रविवार को यह जानकारी दी। सीए ने कहा कि बाएं हाथ के स्पिनर मैथ्यू कुहनेमन बिग बैश लीग (बीबीएल) में खेलते समय अपने अंगूठे में हुए फ्रैक्चर की सर्जरी से उबर रहे हैं जबकि नियमित कप्तान पैट कमिंस के बाएं टखने के दर्द की रिकवरी पर विशेषज्ञ की सलाह के बाद निगरानी जारी रहेगी। स्मिथ को शुक्रवार को बिग बैश लीग में सिडनी सिक्सर्स के लिए फील्डिंग करते समय दाहिनी कोहनी में चोट लग गई जिसके कारण सिडनी थंडर के खिलाफ मैच बारिश के कारण रद्द करना पड़ा। कुहनेमन के बारे में सीए ने कहा कि वह तब तक ऑस्ट्रेलिया में रहेंगे जब तक उनके फ्रैक्चर वाले अंगूठे पर सर्जरी का घाव ठीक नहीं हो जाता। सीए ने कहा, 'अगर वह अच्छी प्रगति करते रहे तो श्रीलंका में टीम में शामिल होने के उद्देश्य से वह इस सप्ताह गेंदबाजी फिर से शुरू करने की योजना बना रहे हैं।'

इंग्लैंड में काउंटी क्रिकेट खेलें विराट कोहली : संजय मांजरेकर

मुम्बई । पूर्व बल्लेबाज संजय मांजरेकर ने विराट कोहली से कहा है कि वह इंग्लैंड में होने वाली टेस्ट सीरीज से पहले फॉर्म हासिल करने के लिए काउंटी क्रिकेट खेलें। मांजरेकर ने कहा कि इससे विराट वहां के हालातों से भी बेहतर तरीके से तालमेल बैठा सकेंगे। विराट पिछले कुछ समय से फार्म से बाहर हैं। वह न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ रन बनाने में असफल रहे थे। ऐसे में अब उनका लक्ष्य अपना प्रदर्शन बेहतर करना रहेगा। मांजरेकर ने कहा कि कोहली को टेस्ट शुरू होने से पहले इंग्लैड में लाल गेंद क्रिकेट में कुछ अभ्यास हासिल करना चाहिये। मांजरेकर ने कहा कि कोहली को काफी लाल गेंद क्रिकेट खेलना चाहिये। भारतीय टीम जून में इंग्लैंड दौरे पर जाएगी। पहला टेस्ट जून में होगा, जबकि काउंटी चैंपियनशिप अप्रैल में शुरू होगी। ऐसे में वह पुजारा की तरह काउंटी टीम में शामिल हो सकते हैं और मैच अभ्यास हासिल कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय टीम शुरुआती टेस्ट मैचों में उनके प्रदर्शन की समीक्षा कर सकती है। यदि सकारात्मक संकेत हैं, तो वह जारी रख सकते हैं। प्रशंसक चाहते हैं कि विराट वहां जाकर संघर्ष न करें, जैसा कि हमने पहले देखा है। यह भारतीय क्रिकेट के लिए अच्छा नहीं होगा। ऐसे में काउंटी क्रिकेट खेलना उनके लिए सबसे बेहतर रहेगा। वहीं पूर्व ऑलराउंडर खिलाड़ी संजय बांगड़ ने कहा कि कोहली अपनी बेहतरीन फिटनेस के बल पर एक बार फिर शानदार वापसी करेंगे।

पाक ने वेस्टइंडीज को पहले टेस्ट में 127 रनों से हराया

-1-0 की बढ़त हासिल की

मुंबई (एजेंसी)। मुल्तान (ईएमएस)। पाकिस्तान ने वेस्ट इंडीज को दो मैचों की टेस्ट सीरीज के पहले ही मैच में 127 रनों से हराकर सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली है। इस मैच में पाक की जीत में स्पिनरों साजिद खान और अबरार अहमद के अलावा कप्तान शान मसूद की अहम भूमिका रही। मसूद ने जहां अर्धशतकीय पारी खेलते हुए 52 रन बनाये। वहीं साजिद ने पांच विकेट जबकि अबरार ने चार विकेट लिए। इस प्रकार पाक टीम ने तीसरे ही दिन ये मैच जीत लिया।

इस मुकाबले में पाकिस्तान ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए पहली पारी में 230 रन बनाए। इसके बाद पहली पारी में वेस्टइंडीज की टीम 137 रन पर आउट हो

गई। इस प्रकार पहली पारी में पाकिस्तान को 93 रन की बढ़त मिली। वहीं पाकिस्तान ने दूसरी पारी में 157 रन बनाए और टीम की कुल बढ़त 250 रन की हो गई। इस प्रकार वेस्टइंडीज को जीत के लिए 251 रन का टारगेट मिला था, लेकिन ये टीम दूसरी पारी में 123 रन पर आउट हो गई और उसे हार का सामना करना पड़ा।

वेस्टइंडीज की ओर से केवल ऐलेक ऐथनेज ही 55 रन बना पाये। वहीं अन्य बल्लेबाज सस्ते में ही सिमट गये। टीम के केवल पांच बल्लेबाज ही दो अंकों तक पहुंच पाये। पाक की ओर से साजिद ने 50 रन देकर पांच विकेट लिए। वहं अबरार ने 27 रन देकर चार विकेट झटके। नोमान ने एक बल्लेबाज को आउट किया।

इससे पहले जोमेल वारिकन के 32 रन देकर सात विकेट की सहायता से वेस्टइंडीज ने पाकिस्तान को दूसरी पारी में 157 पर ही आउट कर दिया। इस प्रकार वेस्टइंडीज को जीत के लिए 251 रनों का लक्ष्य मिला था।

ओलंपिक पदक विजेता मनु भाकर की दादी और मामा सड़क हादसे का शिकार, मौके पर तोड़ा दम

स्पोर्ट्स डेस्क । अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी खिलाड़ी मनु भाकर की दादी और मामा की रविवार 19 जनवरी को सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। बताया जा रहा है कि यह दुर्घटना रविवार सुबह करीब 9 बजे महेंद्रगढ़ बाईपास रोड पर एक स्कूटर और ब्रेजा कार की टक्कर के कारण हुई। टक्कर इतनी भीषण थी कि मनु भाकर की दादी और चाचा की मौके पर ही मौत हो गई। दुर्घटना के बाद कार चालक मौके से फरार हो गया। अभी दो दिन पहले ही मनु भाकर को राष्ट्रपति से खेल रत्न पुरस्कार मिला था। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सिविल अस्पताल भिजवाया। शहर थाना प्रभारी और पुलिस मामले की जांच कर रही है। गौर हो कि दो बार की ओलंपिक पदक विजेता निशानेबाज मनु भाकर को शुक्रवार को राष्ट्रीय खेल पुरस्कार समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से प्रतिष्ठित मेजर ध्यानचंद खेल रत्न से सम्मानित किया गया। भाकर स्वतंत्र भारत की पहली खिलाड़ी हैं जिन्होंने एक ओलंपिक में दो पदक जीते हैं। उन्होंने पेरिस ओलंपिक में यह कमाल किया था।

रवींद्र जडेजा ने अभ्यास सत्र में लिया हिस्सा, दिल्ली के खिलाफ में खेल सकते हैं रणजी ट्रॉफी मैच

स्पोर्ट्स डेस्क । अनुभवी बाएं हाथ के स्पिन गेंदबाजी ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा राजकोट में टीम के अभ्यास सत्र में शामिल होने के बाद दिल्ली के खिलाफ आगामी रणजी ट्रॉफी मैच में सौराष्ट्र के लिए खेल सकते हैं। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि जडेजा रविवार की सुबह सौराष्ट्र के नेट सत्र में थे और बाएं हाथ के तेज गेंदबाज जयदेव उनादकट की कप्तानी वाली टीम के साथ प्रशिक्षण ले रहे थे। जडेजा को इंग्लैंड के खिलाफ एकदिवसीय श्रृंखला और चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारत की टीम में चुना गया था। जडेजा ने सौराष्ट्र के लिए आखिरी रणजी ट्रॉफी मैच जनवरी 2023 में तमिलनाडु के खिलाफ घुटने की चोट के बाद वापसी करते हुए खेला था और 8 विकेट लिए थे। उन्होंने हाल ही में भारत के ऑस्ट्रेलिया दौरे के दौरान पांच में से तीन टेस्ट मैचों में हिस्सा लिया था, जहां उन्हें 3-1 से हार का सामना करना पड़ा था। इसके तुरंत बाद बीसीसीआई ने घरेलू क्रिकेट में भागीदारी को अनिवार्य बनाने के लिए 10-सूत्रीय नीति दस्तावेज पेश किया और कहा कि गैर-अनुपालन अंतरराष्ट्रीय चयन और केंद्रीय अनुबंध नवीनीकरण को प्रभावित कर सकता है। 11 अंकों के साथ एलीट ग्रुप डी अंक तालिका में पांचवें स्थान पर काबिज सौराष्ट्र 23 जनवरी को निरंजन शाह स्टेडियम में चौथे स्थान पर काबिज दिल्ली से भिड़ने के साथ अपने रणजी ट्रॉफी अभियान को फिर से शुरू करेगा जिसके 14 अंक हैं। जडेजा के अलावा विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋषभ पंत राजकोट में दिल्ली के लिए खेलेंगे जबकि भारत के टेस्ट और वनडे कप्तान रोहित शर्मा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल के साथ बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स के एमसीए मैदान पर जम्मू और कश्मीर के खिलाफ अपने मैच में मुंबई के लिए खेलेंगे। वनडे उप-कप्तान शुभमन गिल के कर्नाटक के खिलाफ अपने मैच में पंजाब के लिए खेलने की उम्मीद है। कोहनी की चोट के कारण केएल राहुल के घरेलू क्रिकेट खेलने की संभावना नहीं है। वहीं गर्दन में मोच के कारण विराट कोहली को शेष रणजी ट्रॉफी मैचों के लिए दिल्ली की टीम में भी शामिल नहीं किया गया है।

भारत में तेजी से आगे बढ़ रहा एथलेटिक्स : फराह

मुंबई । दिग्गज एथलीट मो फराह ने कहा है कि भारत में अन्य खेलों के साथ ही एथलेटिक्स भी अब तेजी से आगे बढ़ रहा है। यही कारण है कि अधिक से अधिक युवा इस क्षेत्र में आगे आ रहे है जो एक सकारात्मक बात है। युवा खिलाड़ी अपने प्रदर्शन से एथलेटिक्स के क्षेत्र को बदल सकते हैं। फराह ने कहा है कि आजकल भारत में एथलेटिक्स तेजी से लोकप्रिय हो रहा है और युवाओं में इतनी क्षमता है कि वे इस क्षेत्र में बेतर प्रदर्शन कर सकते है क्योंकि उनमें काफी प्रतिभा है। फराह ने कहा कि जिस प्रकार भारत खेल में तेजी से आगे बढ़ रहा है वह सभी को प्रभावित कर रहा है। टाटा मुंबई मैराथन के 20वें सत्र के ब्रांड दूत बनने पर भारत आये फराह ने कहा, ''देश के विकास, युवा एथलीटों की प्रतिभा को देखना एक शानदार अनुभव है। आप अगर कड़ी मेहनत करें तो जीवन में कुछ भी असंभव नहीं है और यही भारत में भी हो रहा है।'' उन्होंने कहा, ''आप जानते हैं कि भारत में एथलेटिक्स लगातार आगे बढ़ रहा है। यह हालांकि अभी नंबर एक पर नहीं पहुंचा है पर इसमे तेजी आ रही है। उन्होंने कहा, '' मुझे राष्ट्रमंडल खेलों और अन्य चैंपियनशिप के लिए भारत आना याद है। युवा एथलीटों को यहां प्रदर्शन कतरे देखना अच्छा सुखद अनुभव है।

अर्जुन पुरस्कार विजेता सुचा सिंह को अब भी पंजाब सरकार की अनदेखी का दर्द

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारत के पूर्व एथलीट सुचा सिंह को जब लंबे इंतजार के बाद शुक्रवार को अर्जुन पुरस्कार (लाइफटाइम) से नवाजा गया तो इसे मिलने की खुशी उनकी डबडबाई आंखों और रूंधी आवाज से महसूस की जा सकती थी लेकिन पंजाब सरकार की अनदेखी का दर्द अब भी उनकी जुबां पर आ ही जाता है। अर्जुन पुरस्कार दिए जाने की घोषणा के बाद पंजाब के 74 साल के सिंह की सारी नाराजगी दूर हो गई थी क्योंकि आखिर देश ने उनकी उपलब्धियों को सम्मानित किया।

अर्जुन पुरस्कार के लिए वह 10 साल तक फॉर्म भरते रहे और थककर उम्मीद छोड़ दी थी। सिंह ने कहा, 'अर्जुन पुरस्कार मिलने से पूरी जिंदगी की कड़ी मेहनत का फल मिल गया, देश के लिए पदक जीतने के लिए जीजान लगा दी थी लेकिन अपनी उपलब्धियों की अनदेखी किए जाने का गम था, जो अब इस पुरस्कार ने खत्म कर दिया।' यह बोलते हुए उनकी आंखे डबडबा गई।

उन्होंने अपने खेल के दिनों की बात याद करते हुए कहा, 'जब मैं 1965 में जंग के समय सेना में भर्ती हुआ था तो ट्रेनिंग के साथ साथ अपनी स्पर्धा का अभ्यास भी करता था। मैं कबड्डी और दौड़ने में काफी अच्छा था, पर सेना के कोच ने मुझे दौड़ पर ध्यान लगाने के लिए कहा। मेरे पास दौड़ने के जूते नहीं थे जो तब 400 रुपए में आते थे और मेरी तनख्वाह थी 150 रुपए।'

पंजाब सरकार से भी उन्हें वो सम्मान नहीं मिला जिसकी उन्हें उम्मीद थी। उन्होंने कहा, 'पंजाब सरकार ने कभी भी उस तरह सम्मानित नहीं किया जैसे अन्य राज्य सरकार करती हैं, मुझे मेरी उपलब्धियों के लिए 100 रूपए का लिफाफा मिला था जबकि मैंने इस समारोह में शिरकत करने के लिए 800 रूपए जोड़े थे जिसमें से 200 रूपए तो दोस्तों ने ही जश्न मनाने में खत्म करवा दिए थे।'

अपने समय में खिलाड़ियों को मिलने वाली सुविधाओं के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, 'तब खिलाड़ियों के लिए इतनी सुविधायें नहीं होती थीं, कोई प्रायोजक नहीं होता था। दौड़ने के लिए कोई ट्रैक नहीं होता था, 1982 में जब नई दिल्ली में एशियाई खेलों की मेजबानी की गई तभी जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम बना था। मेरे पास दौड़ने के लिए जूते और ट्रैक सूट नहीं था। पहले इतने कोच और अभ्यास के लिए उपकरण नहीं होते थे। अब दौर ही बदल गया है। अब खिलाड़ियों की उपलब्धियों का पूरा सम्मान होता है।'

उन्हें देश के लिए 1972 म्यूनिख ओलंपिक में प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया था लेकिन चोट के कारण वह इसमें हिस्सा नहीं ले सके और खेल के इस महासमर में खेलने का उनका सपना पूरा नहीं हो सका। देश को 1970 में बैंकाक में छठे एशियाई खेलों में चार गुणा 400 मीटर रिले में रजत पदक दिलाने वाले सिंह अपने शुरूआती दिनों की बात करते हुए काफी उत्साह से भर जाते हैं कि किस जुनून और कड़ी मेहनत से वो देश को तमगा दिलाने में लगे रहते थे। आठ साल सेना में रहने के बाद वह 1973 में टाटा स्टील में जमशेदपुर चले गए जहां उनकी तनख्वाह 5000 रुपए हो गई।

सिंह ने कहा, 'खेलों में शानदार प्रदर्शन के बावजूद मुझे सेना में 'कमिशन' नहीं मिला था। हालांकि पदोन्नति पर सिर्फ पांच रूपए बढ़ते थे। फिर मैं जमशेदपुर चला गया और जब तक टाटा स्टील में रहा, उनका सर्वश्रेष्ठ एथलीट रहा।' उन्होंने इसी दौरान तेहरान में हुए 1974 में सातवें एशियाई खेलों में चार गुणा 400 मीटर रिले में रजत पदक

और फिर अगले साल दक्षिण कोरिया के सोल में हुई दूसरी एशियाई एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीता। सिंह हालांकि ओलंपिक में नहीं खेल पाए लेकिन उन्होंने वापसी करते हुए वेटरंस टूर्नामेंट में भी हिस्सा लिया। इससे पहले वह अर्जुन पुरस्कार के लिए लगातार 10 साल तक फॉर्म भरते रहे लेकिन फिर बंद कर दिया।

हाइवे पर छाया घना कोहरा, आपस में टकराए कई वाहन, मची चीख-पुकार

-वाहनों की लग गई लंबी लाईन, पुलिस ने क्रेन से हटवाए क्षतिग्रस्त वाहन

करनाल। हरियाणा के करनाल में नेशनल हाइवे पर कोहरे के कारण कई वाहन आपस में टकरा गए। हाइवे पर विजिबिलिटी काफी कम थी जिस वजह से यह घटना हुई। सूचना के बाद पुलिस टीमें मौके पर पहुंचीं और क्रेन की मदद से वाहनों को साइड में किया। इसके बाद यातायात शुरु हो सका। गनीमत रही कि हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ। हालांकि कई वाहन बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए हैं। जानकारी के मुताबिक यह हादसा नेशनल हाइवे झंझाडी फ्लाईओवर पर हुआ। घने कोहरे की वजह से विजिबिलिटी काफी कम थी। इसी वजह से करनाल नेशनल हाइवे पर एक-एक कर 8 से 10 वाहन आपस में टकरा गए। इससे वाहनों में सवार लोगों में चीख-पुकार मच गई। घटना के बाद आसपास मौजूद लोगों ने मौके पर पहुंचकर मदद की। इस घटना के बाद हाइवे पर कुछ देर के लिए जाम की स्थिति बन गई। लोगों ने घटना के बारे में पुलिस को सूचना दी। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे और जायजा लिया। पुलिस ने क्रेन की मदद से हादसे में क्षतिग्रस्त वाहनों को सड़क से हटवाया और यातायात बहाल करवाया। वहीं स्थानीय लोगों का कहना है कि कोहरा काफी घना था। इस दौरान सड़क पर आगे चल रहे वाहन का अचानक ब्रेक लगा, जिससे पीछे चल रहे वाहनों को संभलने का मौका नहीं मिला और कई वाहन आपस में टकरा गए। हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ। हादसे में हुए नुकसान का आकलन किया जा रहा है।

सीसीटीवी में कैद हुई शिक्षक और शिक्षिका की अश्लील हरकतें, दोनों निलंबित

-जांच के लिए तीन सदस्यीय टीम गठित, रिपोर्ट आने के बाद होगी कार्रवाई

चित्तौड़गढ़। राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में एक स्कूल का वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें एक शिक्षक और शिक्षका अश्लील हरकतें करते दिख रहे हैं। वीडियो वायरल होने के बाद दोनों को शिक्षकों को निलंबित कर दिया गया है। मामले की जांच के लिए तीन सदस्यों की टीम गठित की गई है। टीम की रिपोर्ट के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। जिला शिक्षा अधिकारी ने बताया कि दोनों ही शिक्षकों को निलंबित कर दिया है। दोनों अलग-अलग जगह उपस्थिति देने को कहा गया है। जानकारी के मुताबिक शनिवार को गंगरार थाना क्षेत्र के एक गांव के स्कूल में शिक्षक और शिक्षिका का आपत्तिजनक हालत में वीडियो सामने आया था। ग्रामीणों के मुताबिक शिक्षक करीब 14 साल से उस स्कूल में कार्यरत है। शिक्षिका के साथ उसके संबंधों को लेकर लंबे समय से गांव में चर्चाएं हो रही थीं। स्कूल मैनेजमेंट कमेटी के पदाधिकारी ने भी इस पर आपत्ति जताई थी। दोनों पर आरोप हैं कि शिक्षक ग्रामीणों को सरकारी काम में बाधा डालने की शिकायत पुलिस से करने की धमकी देता था। इस कारण ग्रामीण भी उसके खिलाफ शिकायत नहीं कर पाते थे। समझाइश के बाद भी संस्था प्रधान अपनी हरकत से बाज नहीं आया। ऐसे में ग्रामीणों ने स्कूल में सीसीटीवी कैमरे लगवाए, जिसमें दोनों की हरकत कैद हो गई। पुख्ता सबूत हाथ लगने के बाद ग्रामीणों ने इसकी शिकायत पुलिस से की। उन्होंने शिक्षक-शिक्षिका को तत्काल प्रभाव से हटाने और मामले की उच्च स्तरीय जांच करवाने की मांग की।

युवक की हत्या कर शव बोरे में भरकर कचरे में फेंका, इलाके में फैली सनसनी

पटना। पटना के बेगमपुर में नीतीश कुमार की गोली मारकर हत्या कर दी गई। आरोपियों ने हत्या के बाद शव को बोरे में भरकर कचरे के ढेर में फेंक दिया। पुलिस को सूचना मिली की बेगमपुर पार पोखरा के नजदीक एक बोरे में शव पड़ा है। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव की पहचान नीतीश कुमार के रूप में की। शुरुआती जांच में यह मामला गोली मारकर की हत्या करने का लग रहा है। पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए एफएसएल टीम और डॉग स्क्वॉड को मौके पर बुलाया। घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है और स्थानीय लोगों से पूछताछ की जा रही है। हत्या के कारणों का पता लगाने के लिए गहन जांच जारी है। घटना की जानकारी मिलते ही इलाके में सनसनी फैल गई है। पुलिस का कहना है कि जल्द ही हत्यारों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

राहुल गांधी पर लगातार हो रही एफआईआर, अब गुवाहाटी में दर्ज हुआ प्रकरण

नई दिल्ली। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर एक के बाद एक एफआईआर हो रहीं हैं। अब नया मामला गुवाहाटी में दर्ज हुआ है। हाल ही में राहुल गांधी ने भाजपा और आरएसएस द्वारा संस्थाओं पर कब्जा करने के का आरोप लगाया था। इसी दौरान उनका यह इंडियन स्टेट वाला बयान भी सामने आया था। असम में इस वक्त हेमंत बिस्वा सरमा के नेतृत्व वाली बीजेपी की सरकार है। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत द्वारा कुछ वक्त पहले अयोध्या में राम मंदिर के शिलान्यास की तारीख को भारत की सच्ची आज़ादी के रूप में मनाए जाने की बात कही थी। इस पर रिएक्ट करते हुए राहुल गांधी ने कहा था कि बीजेपी और आरएसएस ने हर एक संस्था पर कब्जा कर लिया है और अब हम भाजपा, आरएसएस और इंडियन इस्टेट से ही ही लड़ रहे हैं। यह एफआईआर गुवाहाटी के पान बाज़ार पुलिस स्टेशन में बीएनएस की धारा 152 और 197(1)डी के तहत दर्ज की गई है। जिसका मतलब है भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को खतरे में डालने वाले कृत्य करना यह एक गैर-जमानती अपराध है। राहुल गांधी द्वारा भारतीय राज्य के साथ लड़ाई का जिक्र करने के बाद भाजपा ने उन पर भारत को तोड़ने और हमारे समाज को विभाजित करने की दिशा में काम करने का आरोप लगाया है। अपनी शिकायत में चेतिया ने लिखा है कि एक ऐसे व्यक्ति द्वारा सार्वजनिक मंच पर दिया गया बयान जो वर्तमान में विपक्ष के नेता का पद संभाल रहा है। कहा गया कि यह कोई साधारण राजनीतिक टिप्पणी नहीं है।

राहुल गांधी को हर चीज फर्जी नजर आती है, वह खुद फर्जीवाड़े के सरदार

जातीय गणना और पेपर लीक मामले वाले बयान पर जेडीयू ने किया पलटवार

पटना (एजेंसी)। राहुल गांधी द्वारा जातीय गणना पर उठाए गए सवाल और पेपर लीक मामले पर केंद्रीय मंत्री और जेडीयू नेता ललन सिंह ने कहा है कि कांग्रेस ने देश में संविधान की धज्जियां उड़ाई हैं। पेपर लीक मामले पर उन्होंने कहा कि सभी के तार झारखंड से जुड़ रहे हैं। ललन सिंह के बयान का बीजेपी ने भी समर्थन किया है। बीजेपी प्रवक्ता आसितनाथ तिवारी ने कहा कि राहुल गांधी बिहार में जातीय आग से खेल रहे हैं। वहीं कांग्रेस ने भी केंद्रीय मंत्री ललन सिंह पर निशाना साधा है। कांग्रेस प्रवक्ता ज्ञान रंजन ने कहा है कि यह लोग राहुल गांधी से डरे हुए हैं।

ललन सिंह ने कहा कि राहुल गांधी को हर चीज फर्जी नजर आती है। वह खुद ही फर्जीवाड़े के सरदार हैं। बिहार में जो जाति आधारित सर्वे कराया गया, उसके आधार पर जातीय जनगणना की मांग कर रहे थे। तब वह लोग मुंह में टेप लगाए हुए थे? किसके दबाव में आकर कुछ नहीं बोल रहे थे? वह संविधान की बात करते हैं, उनको संविधान के बारे में पता है कि कितने शेड्यूल है, कितनी धाराएं हैं।

ललन सिंह ने आगे कहा कि अगर इस देश में किसी ने संविधान की धज्जियां उड़ाई तो वह कांग्रेस है। देश में आपातकाल लाकर देश की जनता को अपमानित करने का काम किया। पेपर लीक मामले में ललन सिंह ने कहा कि जब उनकी सरकार राजस्थान में थी तब वह बताएं कि कितना पेपर लीक हुआ है। जो पेपर लीक हो रहे हैं सबके तार झारखंड से जुड़ है, जहां उनकी सरकार है।

ललन सिंह के बयान पर कांग्रेस प्रवक्ता ज्ञान रंजन ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह लोग राहुल गांधी से डरे हुए हैं। उन्हें लगता है कि अति पिछड़ों और पिछड़ों को राहुल गांधी न्याय दिलाकर ही मानेंगे। ज्ञान रंजन ने कहा इनका सिंहासन डोलता नजर आ रहा है इसलिए कुछ भी अनर्गल बयानबाजी कर रहे हैं। रंजन ने कहा कि बिहार में एक साल में 10 बार पेपर लीक हुआ है और अभी तक कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है, अगर कोई गिरफ्तारी हुई है तो आंकड़ा जारी करें। बीजेपी प्रवक्ता आसितनाथ तिवारी ने कहा कि बिहार ने जातीय हिंसा का बड़ा दौर देखा है। बिहार में कई नरसंहार हुए, जिसमें सैकड़ों लोग मारे गए। ऐसी घटनाएं राजद और कांग्रेस के काल में हुई। राहुल गांधी इस गुट के सरदार हैं, जिनके दौर में ऐसी घटनाएं हुई। राहुल गांधी को यह अंदाजा नहीं है कि वह एक बार फिर से जातीय आग से खेल रहे हैं। बिहार को जातीय आग में झोंकना चाहते हैं। उन्हें पता नहीं है कि यह आग एक दिन उन्हें भी जला देगी।

बता दें पटना में शनिवार को कांग्रेस के संविधान सुरक्षा सम्मेलन में राहुल गांधी ने कहा था कि बिहार पेपर लीक का सेंटर बन चुका है। युवाओं को रोजगार नहीं मिल रहा है। मंहगाई बढ़ रही है। देश की वास्तविक स्थिति को समझने के लिए जाति जनगणना होनी चाहिए। यह बिहार में की गई फर्जी जाति जनगणना की तरह नहीं होगी। जाति जनगणना के आधार पर नीति बनाई जानी चाहिए। कांग्रेस जाति जनगणना को लोकसभा और राज्यसभा में पारित करेगी। हम 50 फीसदी आरक्षण की बाधा को ध्वस्त कर देंगे।

मनीष सिसोदिया ने लिया निजी लोगों से 1.50 करोड़ का ऋण, बीजेपी ने मांगा जवाब

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) ने आम आदमी पार्टी (आप) के वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया से निजी लोगों से 1.50 करोड़ रुपए के शिक्षा ऋण के मामले में जवाब मांगा है। बीजेपी ने आरोप लगाया है कि यह ऋण सिसोदिया के बेटे की विदेश में शिक्षा की पढ़ाई के लिए लिया गया था। बीजेपी पर पलटवार करते हुए आप ने बीजेपी से उसके नई दिल्ली के उम्मीदवार प्रवेश वर्मा की संपति के बारे में सवाल किया है। आप ने एक बयान में कहा कि मनीष सिसोदिया ने बेटे की पढ़ाई के लिए ऋण लिया तो बीजेपी में हड़कंप मच गया, जबकि प्रवेश वर्मा ने 55 करोड़ रुपए निजी ऋण समेत 63 करोड़ रुपए की देनदारी घोषित की और बीजेपी इस पर चुप है। सिसोदिया के चुनावी हलफनामे का हवाला देते हुए बीजेपी की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री को मिले 1.50 करोड़ रुपए के शिक्षा ऋण में तीन व्यक्तियों ने योगदान दिया था। उन्होंने कहा कि बीजेपी सिसोदिया को मिले ऋण की जांच के लिए एजेंसियों से संपर्क करेगी।

बीजेपी को दिल्ली चुनाव के बाद मिल सकता है नया अध्यक्ष, संगठन तैयारियो में जुटा

नई दिल्ली (एजेंसी)। बीजेपी को जल्द ही नया अध्यक्ष मिल सकता है। संगठन को फरवरी तक चयन प्रक्रिया पूरी होने की उम्मीद है। माना जा रहा है कि दिल्ली विधानसभा चुनाव के बाद बीजेपी के नए अध्यक्ष की घोषणा हो जाएगी। दिल्ली में 5 फरवरी को विधानसभा चुनाव के लिए मतदान होना है और 8 फरवरी को नतीजे आएंगे। ऐसे में बीजेपी का पूरा फोकस दिल्ली चुनाव पर है और जीत के लिए पूरा जोर भी पार्टी और संगठन लगा रहा है। जेपी नड्डा की अध्यक्षयता में ही ही बीजेपी दिल्ली विधानसभा चुनाव लड़ेगी।

पार्टी सूत्रों का कहना है कि 10 फरवरी से 20 फरवरी के बीच बीजेपी अध्यक्ष का चुनाव हो सकता है। संगठन चुनाव की प्रक्रिया चल रही है। मंडल से लेकर जिला और प्रदेश इकाई के अध्यक्ष चुने जा रहे हैं। इसके अलावा राष्ट्रीय परिषद और प्रदेश परिषद के सदस्य भी चुने जा रहे हैं, जो राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव में अहम भूमिका निभाएंगे और नए अध्यक्ष का चुनाव करेंगे। अभी तक सिर्फ चार राज्यों के प्रदेश अध्यक्षों का ही चुनाव हुआ है।

बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव के लिए कम से कम 50 फीसदी राज्य इकाइयों में संगठन के चुनाव पूरे होने जरूरी हैं। बीजेपी नेताओं की माने तो पहले से तय कार्यक्रम के मुताबिक ही संगठन चुनाव चल रहा है और इसे समय पर पूरा करा लिया जाएगा। संगठन का कहना है कि सिर्फ महाराष्ट्र और हरियाणा में विधानसभा चुनावों के कारण सदस्यता अभियान देर से शुरू हुआ है। फिलहाल, जेपी नड्डा ने अपना तीन साल का कार्यकाल पूरा कर लिया है। बतौर अध्यक्ष नड्डा का कार्यकाल पिछले साल जनवरी में ही खत्म हो गया था, लेकिन लोकसभा चुनाव के चलते उनका कार्यकाल बढ़ा दिया गया था। नड्डा ने फरवरी 2020 में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का पद संभाला था। वह इस समय मोदी कैबिनेट में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री की जिम्मेदारी भी संभाल रहे हैं। नए बीजेपी अध्यक्ष नड्डा की जगह लेंगे।

बांग्लादेश की बढ़ेंगी मुश्किलें, बिहार ने कहा- जहां से गंगा निकलती है वहां पानी में हिस्सेदारी हो

पटना (एजेंसी)। बिहार की नीतीश सरकार ने केंद्र सरकार से अनुरोध किया है कि गंगा नदी जिन राज्यों से बहती है उन राज्यों को उसके पानी पर हक होना चाहिए। इसके अलावा बांग्लादेश को गंगा का पानी देने पर भी आपत्ति जाहिर की है।बता दें कि बांग्लादेश को गंगा नदी से मिलने वाले पानी का अधिकतर भाग की आपूर्ति बिहार से बिहार के हिस्से से होती है और इस कारण बिहार में ही जल संकट की स्थिति आ जाती है। अब बिहार सरकार में इस ओर ध्यान दिया है और जल संसाधन मंत्री ने कहा है कि इसको लेकर केंद्र सरकार से अनुरोध किया गया है।

बता दें कि भारत बांग्लादेश जल संधि का अगले साल नवीकरण (रीन्यूअल) होना है। वर्ष 1996 में भारत के प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा और बांग्लादेश की पीएम शेख हसीना के बीच गंगाजल बंटवारे को लेकर समझौता हुआ था। इसके तहत दोनों देशों के बीच गंगाजल का बंटवारा किया गया था। भारत-बांग्लादेश गंगा जल संधि के 30 वर्षों बाद अब समीक्षा होनी है। यह 2026 में पूरी होगी। इस साल समस्या के बिंदुओं पर चर्चा शुरू हो गई है और जल्द ही दोनों देशों में तकनीकी वार्ता प्रारंभ होने वाली है।

बिहार के जल संसाधन मंत्री विजय चौधरी ने कहा कि

हमलोग आरंभ से 1996 के समझौते की समीक्षा की मांग कर रहे हैं। हमारा मानना है कि इस समझौते को अंतिम रूप देने से पहले हमारी राय नहीं ली गई थी। समझौते में बिहार की अपेक्षा की गई विरोध का बड़ा कारण फरक्का बराज भी है। जल संसाधन मंत्री ने कहा कि फरक्का बराज के कारण संपूर्ण बिहार में गाद की समस्या बढ़ती जा रही है। इससे बाढ़ की स्थिति भी विकराल हो रही है। चूंकि समझौते की समीक्षा का समय आ गया है इसलिए हम लोग चाहते हैं कि बिहार की आवश्यकताओं और गाद की समस्या को देखते हुए समझौते पर पुनर्विचार किया जाए।

दरअसल, बिहार का यह भी पक्ष है कि बांग्लादेश को गंगाजल की अधिकांश मात्रा बिहार देता है, जबकि गंगा नदी के किनारे वाले राज्य अपने यहां बेधड़क उसके पानी का उपयोग कर रहे हैं। वहां बिजली परियोजनाएं बनीं हैं, बराज बने हैं। यही नहीं सिंचाई के लिए भी गंगाजल का उपयोग कर रहे हैं, जबकि बिहार को हर कार्य के लिए केंद्र से अनुमति लेनी पड़ती है। बिहार का मानना है कि बांग्लादेश जाने वाले गंगा जल का कोटा बिहार के साथ-साथ यूपी उत्तराखंड और पश्चिम बंगाल के लिए भी समान रूप से तय हो। बता दें भारत और बांग्लादेश के बीच जो समझौते हुए हैं उसके तहत गंगा के पानी का बंटवारा 70 हजार क्यूसेक पानी में 35 हजार क्यूसेक भारत को रहेगा और 35 हजार क्यूसेक बांग्लादेश को। अगर यह मात्रा 70 से 75 हजार क्यूसेक है तो शेष जो प्रवाह है वह भारत के पास रहेगा। बाकी 35 हजार कि उसे बांग्लादेश के पास 75 हजार क्यूसेक से अधिक होने पर 40 हजार क्यूसेक भारत के पास रहेगा और शेष प्रवाह बांग्लादेश को जाएगा।

सैफ अली खान पर हमले वाले आरोपी के बांग्लादेशी होने पर बीजेपी बोली, महाराष्ट्र सरकार घुसपैठियों का घर-घर जाकर लगाएगी पता और उन्हें वापस भेजेगी

मुंबई। बॉलीवुड अभिनेता सैफ अली खान पर हमले के आरोपी को मुंबई पुलिस ने गिरफ्तार करने पर बीजेपी ने प्रतिक्रिया दी है। बीजेपी प्रवक्ता राम कदम और वरिष्ठ नेता किरीट सोमैया ने मांग की है कि सरकार मुंबई और महाराष्ट्र में रह रहे अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करे। मुंबई पुलिस के डीसीपी जोन-9 ने खुलासा किया है यह आरोपी चोरी के इरादे से उस घर में घुसा था और उस वक्त पर यह घटना हुई। आरोपी बांग्लादेशी मूल का है। उसके पास से पुलिस को कोई भी भारतीय पहचान पत्र नहीं मिला है। राम कदम ने रविवार को मुंबई में कहा कि सैफ अली खान पर हमला करने वाले और चोरी के इरादे से घुसे आरोपी को मुंबई पुलिस ने दबोच लिया है। जांच के बाद क्या कारण था, सभी बातें सामने आएंगी। उन्होंने कहा कि कुछ अहम बातें सामने आई हैं कि मुंबई शहर की बिल्डिंगों में जो सुरक्षाकर्मी तैनात हैं वे 24-24 घंटे ड्यूटी करते हैं। राम कदम ने कहा कि 24 घंटे ड्यूटी करने वाला वॉचमैन सोएगा जरुर। उन्होंने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि सरकार इस दिशा में उचित कदम उठाएगी। उन्होंने कहा कि जहां तब बांग्लादेशी घुसपैठियों की बात है तो महाराष्ट्र सरकार घर-घर जाकर उनका पता लगाएगी और जहां से वे आए हैं उन्हें वापस वहीं पहुंचाएगी।

सैलजा ने साधा निशाना कहा- एचकेआरएन कर्मचारियों के साथ वायदा खिलाफी कर रही है सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। सांसद कुमारी सैलजा ने कहा है कि एक ओर जहां मुख्यमंत्री हरियाणा ने एचकेआरएन के तहत कार्यरत कर्मचारियों को नौकरी से न हटाने का वायदा किया था और अधिसूचना जारी कर जॉब सिक्योरिटी दी थी आज वहीं सरकार भर्ती किए गए नए कर्मचारियों को नियुक्त करने के लिए पहले से कार्यरत कर्मचारियों को निकालने में लगी हुई है। उन्होंने कहा कि कर्मचारी संगठन वायदा याद दिलाते हुए न्याय की गुहार कर रहे है पर सरकार के कान पर जूं तक नहीं रेंग रही है, भाजपा को वोट देने वाला युवा आज पछता रहा है।

कुमारी सैलजा ने एक बयान में कहा है कि 19 नवंबर 2024 को हरियाणा में कौशल रोजगार निगम के तहत लगे कर्मचारियों को नायब सिंह सैनी सरकार ने कथित बड़ी सौगात देते हुए हरियाणा विधानसभा में जॉब गारंटी विधेयक पारित करवाया था। जिसे हर भाजपा नेता ने ऐतिहासिक कदम बताया था। सीएम ने भी दावा किया था कि उन्होंने 120000 युवाओं से किया गया वादा पूरा किया। कहा गया कि पहले ठेकेदारों के जरिए लगने पर युवाओं के भविष्य पर तलवार लटकी रहती थी, ठेकेदार बदलने पर उनके भविष्य पर भी खतरा पैदा हो जाता था। कुमारी सैलजा ने कहा कि एचकेआरएन में 37404 यानि 28 प्रतिशत कर्मचारी अनुसूचित जाति के 41376 कर्मचारी यानि 32 प्रतिशत कर्मचारी पिछड़ा वर्ग से हैं। पर सरकार की वायदा खिलाफी के चलते इनकी जॉब पर खतरा मंडरा रहा है।

कुमारी सैलजा ने कहा कि नरवाना, चरखी दादरी, रोहतक सहित कई जिलों में कंप्यूटर ऑपरेटर, चौकीदार और अन्य पदों पर कार्यरत कर्मचारियों को बिना नोटिस के नौकरी से निकल दिया। ये कर्मचारी न्याय की उम्मीद में दफ्तरों के चक्कर लगा रहे है पर अधिकारी तो अधिकारी भाजपा के विधायक, मंत्री तक कोई सुनवाई नहीं कर रहे है और न ही इन कर्मचारियों की सरकार के समक्ष पैरवी कर रहे हैं। कुमारी

सैलजा ने कहा कि अधिकतर कर्मचारी एचकेआरएन के तहत नौकरी पाने पर उनके नाम बीपीएल सूची से कट गए थे, आज वे कहीं दूसरी जगह नौकरी मांगने जाएंगे तो वहां भी नहीं मिलेगी। सैलजा ने कहा कि सरकार को अपना वायदा निभाते हुए किसी भी कर्मचारी को नौकरी से नहीं हटाना चाहिए, जो पद आज भी रिक्त पड़े है उन पर नए भर्ती किए गए युवाओं को नियुक्ति दी जाए।

साइबर अपराधियों से भारत और अमेरिका मिलकर निपटेंगे, दोनों देशों में हुआ समझौता

नई दिल्ली (एजेंसी)। साइबर खतरों और अपराधों की जांच में सहयोग बढ़ाने के लिए भारत और अमेरिका ने वाशिंगटन डीसी में एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। देश में इसका क्रियान्वयन गृह मंत्रालय के अधीन आने वाले भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (आई4सी) द्वारा किया जाएगा। जबकि अमेरिका में डिपार्टमेंट ऑफ होमलैंड सिक्योरिटी (डीएचएस) और उससे जुड़ी हुई विभिन्न एजेंसियों जैसे यूएस इमीग्रेशन एंड कस्टम्स एनफोर्समेंट (आईसीई) और द होमलैंड सिक्योरिटी इन्वेस्टिगेशन साइबर क्राइम सेंटर (सी3) समझौते के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी संभालेंगे। विदेश मंत्रालय ने यह जानकारी दी। यहां बता दें कि बाइडन प्रशासन ने भारत के साथ इस

एमओयू पर अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के 20 जनवरी को होने वाले शपथ ग्रहण से ठीक पहले हस्ताक्षर किए हैं।

मंत्रालय ने बताया कि इस एमओयू पर 17 जनवरी को भारत की तरफ से अमेरिका में भारत के राजदूत विनय क्वात्रा ने हस्ताक्षर किए। अमेरिका से उनके गृह सुरक्षा विभाग की कार्यवाहक उप-सचिव क्रिस्टी कैनेगैलो ने समझौते पर हस्ताक्षर किए। यह समझौता दोनों देशों की एजेंसियों को आपराधिक मामलों की जांच में साइबर खतरों से जुड़ी खुफिया जानकारी और डिजिटल फॉरेंसिक को लेकर सहयोग और प्रशिक्षण का स्तर बढ़ाने में मददगार साबित होगा। साइबर क्राइम के तार दोनों देशों की साझा सुरक्षा चुनौतियों जैसे आतंकवाद, हिंसक कट्टरता, आतंक को वित्तपोषण, ड्रग ट्रैफिकिंग, संगठित अपराध, मानव तस्करी, अवैध प्रवासन, मनी लॉन्ड्रिंग और यातायात सुरक्षा से जुड़ते हैं। इसलिए यह समझौता इन मामलों में भी अहम साबित होगा। साथ ही इसकी मदद से दोनों देशों के बीच सुरक्षा सहयोग को और अधिक मजबूती प्रदान करने में मदद मिलेगी। जो भारत की व्यापक और वैश्विक सामरिक भागीदारी का हिस्सा है।

गणतंत्र दिवस: टी-90 टैंक और ब्रह्मोस मिसाइल से सेना दिखाएगी भारत की ताकत

नई दिल्ली (एजेंसी)। 26 जनवरी को कर्तव्य पथ पर मनाए जाने वाले 76 वें गणतंत्र दिवस परेड समारोह में भारतीय सेना के मार्चिंग दस्ते में टी-90 भीष्म टैंक, सुपरसोनिक ब्रह्मोस मिसाइल सिस्टम, पिनाका रॉकेट और आकाश एयर डिफेंस सिस्टम जैसे वो बेहद मारक हथियार शामिल होंगे। जिनकी उपस्थिति मात्र से ही देश के दुश्मन थरथर कांपेंगे। इसके अलावा जवानों की मार्चिंग टुकड़ी में ब्रिगेड ऑफ द गार्डस, महार रेजिमेंट, जाट रेजिमेंट, गढ़वाल राइफल्स, जम्मू-कश्मीर राइफल्स और कॉर्प्स ऑफ सिग्नल्स जैसी सेना की 6 रेजिमेंट की प्रमुखता से भागीदारी देखने को मिलेगी। फिलहाल सेना का यह समूचा दस्ता कर्तव्य पथ पर परेड में शामिल होने के लिए अभ्यास में जुटा हुआ है। सेना ने शनिवार को बताया कि गणतंत्र दिवस परेड के लिए हमारी तैयारियां लगभग अंतिम चरण में पहुंच गई हैं। इस बार हम परेड के दौरान सेना की सुव्यवस्थित परंपरा के साथ ही अनुशासन और आधुनिक तकनीक के मिश्रण को देश-दुनिया के सामने बखूबी प्रदर्शित करेंगे। कर्तव्य पथ पर सशस्त्र सेनाओं की सुप्रीम कमांडर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के सामने सेना के मार्चिंग दस्ते के साथ सैन्य बैंड भी देशभक्ति की अपनी मनमोहक धुनों के साथ आगे बढ़ेंगे। इसके अलावा सेना द्वारा परेड के दौरान प्रदर्शित किए जाने वाले सैन्य हथियारों में टी-90 भीष्म टैंक, आईसीवी बीएमपी-2, नाग मिसाइल सिस्टम, क्विक रिएक्शन फाइटिंग व्हीकल (नंदीघोष), पिनाका रॉकेट लॉन्चिंग सिस्टम, शॉर्ट स्पैन ब्रिजिंग सिस्टम, बैटलफील्ड सर्विलांस सिस्टम (संजय), ऑल टेरेन व्हीकल (चेतक), आकाश एयर डिफेंस वेपन सिस्टम, ग्रेड बीएम-21 रॉकेट लांचर, लाइट स्ट्राइक व्हीकल (बजरंग) शामिल होंगे।

आत्मनिर्भर भारत को समर्पित परेड

सेना ने बताया कि इस वर्ष की परेड देश की सुरक्षा और प्रगति को समर्पित रहेगी। जिसमें स्वदेशीकरण और आत्मनिर्भर भारत अभियान द्वारा प्रदान की गई गति की साफ तौर पर झलक देखने को मिलेगी। गौरतलब है कि इस बार परेड समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो शिरकत करेंगे।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह**. 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**